Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वजाति सेवा में भेट।

पुष्करणे ब्राह्मणों की प्राचीनता

विषयक

टाड-राजस्थान की भूल।

निर्माता व प्रकाशक—
व्यास मीठालाल,
पाली—मारवाड़।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्रीः ॥

पुष्करणे ब्राह्मणों की प्राचीनता

विषयक

टाड-राजस्थान की भूल का संशोधन।

जिसको

पाली-मारवाड़-निवासी

व्यास मीठालाल

ने

अनेक प्राचीन इतिहासों तथा शास्त्र प्रमाणों सहित
निर्माण करके प्रकाशित किई
और
समस्त पुष्करणे ब्राह्मणों की सेवा में अर्पण किई।

सं० १९६६ वि०

प्रथमावृत्ति

विना मूल्य वितरण किई गई।

इस के सर्वाधिकार प्रकाशकने स्वाधीन रखे हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

"उष्ट्र वाहिनी सारिका थे कीनो उपकार ।
द्विज पुष्करणा ताहितैं सुमरें वारं वार ॥"

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूमिका ।

'टाड' कृत ग्रन्थ टाड 'राजस्थान' इतिहास,
जानत जहान वह कैसो 'भ्रम पूर' है ।
'पुष्टिकर' द्वि जनकी 'उत्पत्ति' विषय माँहि,
टाड के विचार अविचार रु अधूर है ॥
ताके 'भ्रम नाशन' को, सत्यके प्रकाशन को,
शुद्ध अनुशासन को, सुपथ ज़रूर है ।
पुष्टिकर कुल की 'प्राचीनता' प्रमाण सह'
नाना 'इतिहास' तें दिखायवे को सूर है॥१॥

बहुत प्राचीन कालमें सैन्धवारण्य देशके (सिन्धी) ब्राह्मण श्रीमाल क्षेत्र में ब्राह्मणों की पुष्टि करने के लिये श्रीमाली ब्राह्मणोंके पूर्वजों से वादानुवाद करने पर अन्तमें सारिका राक्षसी (उष्ट्रासिनी-ऊँटा-देवी) को सहायतासे श्री लक्ष्मीजी से वरदान प्राप्त करके 'पुष्टिकरने' तथा 'पुष्करणे' कहलाये जाने लगे हैं । जिसका वृत्तान्त स्कन्द पुराणान्तर्गत श्रीमाल क्षेत्र माहात्म्य में है । उसमें से थोड़े से चुने हुये मुख्य २ श्लोकों सहित उस कथा का अभिप्राय रूपी संक्षिप्त सारांश इस पुस्तक के अन्त में भी लिखा है, जिससे स्पष्ट है कि ब्राह्मणों की अन्यान्य जातियोंकी भाँति पुष्करणे ब्राह्मणों की भी जातिकी उत्पत्ति आदिकी कथा पुराणों में विद्यमान है ।

परन्तु थोड़े से वर्षों से किन्हीं२ अंग्रेज़ी पढ़े हुये लोगों के मुखसे पुष्करणे ब्राह्मणों को उत्पत्ति पुष्करजी पर होने—और इ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सीसे पुष्करणे कहलाने-की बात सुनने में आती देखके इस मिथ्या लोकोक्ति का मूल कारण जानने की खोज किई तो इसका मूल कारण टाड साहब कृत 'राजस्थान' नामक राजपूताने के इतिहास की अंग्रेज़ी पुस्तक ही विदित हुई। उसके दूसरे भाग में जैसलमेर के इतिहास के ७ वें अध्याय में पुष्करणे ब्राह्मणों की उत्पत्ति पुष्करजी पर होनेकी एक मिथ्या 'अजब कहानी' लिख दी है। और कुछ भी परिश्रम न उठाने वाले इतिहास लिखने वालों के लिये तो आजकल टाड-राजस्थान पुस्तक ही आधारभूत होनेसे किसी२ अन्य अंग्रेज़ने भी वही बात अपनी२ पुस्तक में 'भेड़ियाधसान' की तरह आँख मीचके लिख दी है। किन्तु यह विचार करने का कुछ भी कष्ट न उठाया कि जिस टाड-राजस्थान के आधार वा भरोसे पर हम ऐसी ऊट पटाँग बात लिखते हैं उसी पुस्तक में-और उसी जैसलमेर ही के इतिहास के २ रे ही अध्याय में-पुष्कर खुदने से २०० वर्ष पहिले ही एक पुष्करणे हो ब्राह्मण द्वारा भाटी राजा देवराजजी का शत्रुओं से बचाये जानेका वृत्तान्त लिखा हुआ विद्यमान है, जिसे तवारीख जैसलमेर व रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़ भी स्वीकार करती हैं और जिसका खुलासा इस पुस्तक के पृष्ठ ३१ से ३९ तक में किया गया है। जबकि पुष्कर खुदने से ३०० वर्ष पहिले की तो पुष्करणे ब्राह्मणों की प्राचीनता स्वयं उन्हीं टाड साहब ही के उक्त कथन से स्पष्ट सिद्ध है और अन्यान्य इतिहासों से तो इससे भी सैकड़ों ही वर्ष पहिले की प्राचीनता के अनेक पुष्ट प्रमाण मिलते हैं तिसपर भी इनकी उत्पत्ति पुष्कर खुदने पर होने की 'अजब कहानी' लिख देना ठीक वैसा ही है

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैसा कि परपोतेके विवाह समय में लड़दादे का जन्म होना।

टाडसाहब व उनके मतानुगायियोंकी भूल वा भ्रम दिखलानेके लिये तो प्रथम तो स्कन्द पुराणोक्त श्रीमालक्षेत्र माहात्म्यमें के 'पुष्करणोपाख्यान' आदिकी शास्त्रोक्त कथाही सूर्यके समान प्रकाशमान है, तिस परभी इस देशके प्राचीन इतिहासवेत्ता 'रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़' (सन् १८९१) के निर्माता महाशयने तो प्राचीन इतिहासों के कई पुष्ट प्रमाण बताकर पुष्करजी के तालाब खुदने के समयसे सैकड़ोंही वर्षों पहिले ही से पुष्करणे ब्राह्मणों की विद्यमानता स्पष्ट सिद्ध कर दी है।

इसके अतिरिक्त टाडसाहब के सहधर्मी प्राचीन इतिहास लेखक पादरी एम. ए. शैरिङ्ग साहिब, एम, ए., एल एल. बी.' ने भी अपनी इतिहासकी पुस्तक में जहां १० प्रकार के ब्राह्मणों का वर्णन किया है वहां. पुष्करणे ब्राह्मणों की गणना पञ्च द्राविड़ों में से गुर्जर ब्राह्मणों में किई हैं।

यही नहीं किन्तु स्वयं भारत गवर्नमेण्टने भी सन् १९०१ ई० की भारतवर्षीय मनुष्य गणनाकी रिपोर्ट की २५ वीं जिल्द (राजपूताने के प्रथम भाग) के पृष्ठ १४६ में स्पष्ट स्वीकार किया है कि "The Pushkarnas are a section of the Gurjar Brahmans" अर्थात् पुष्करणे ब्राह्मण गुर्जर ब्राह्मणोंकी एक शाखा हैएवं फिर पृष्ठ १६४में पञ्च द्राविड़ों में के गुर्जर ब्राह्मणों के २ भेदों में से प्रथम में नागर परोशनोरा, उदम्बर, पल्लीवाल, पुष्करणा और श्रीमालियोंकी गणना किई है।

यदि टाडसाहेब व उनके अनुयायी गण थोड़ा सा भी परिश्रम उठाकर अन्यान्य इतिहासों का कुछभी मिलान कर लेते तो निश्चय है कि नतो टाडसाहब ही ऐसी भूल करते और न उनके अनुयायी गणभी 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' की भाँति मिथ्या बातको लिखकर अपनी पुस्तक को दूषित करते।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यद्यपि इतिहास लेखकोंके लिये ऐसी भूल करना बड़े खेद व आश्चर्य की बात है किन्तु टाडसाहब तथा उनके अंग्रेज़ अनुयायी लोगोंके विदेशी व अन्य धर्मावलम्बी होने और हमारे धर्मशास्त्रों तथा प्राचीन इतिहासों से अनभिज्ञ रहने आदि कारणों से—एक ही क्या ऐसी कई भूलें कर लेने परभी—हमें उनकी तो भूलोंपर नतो कुछ उतना आश्चर्यही आता है औरन उनपर कुछ अधिक विचार ही करने की आवश्यकता दीखती है । क्यों कि उपरोक्त शास्त्र प्रमाणों तथा प्राचीन ऐतिहासिक प्रमाणों से टाड साहबकी भूलतो स्वयंही सिद्ध है अतः इस पुस्तकके बनाने की मुझे कोई आवश्यकता नहीं थी । परन्तु आजकलके कोई२ अविचारवान् एतद्देशीय लोग भी प्राचीन इतिहासों से अनभिज्ञ रहने आदिके कारण वही टाड—राजस्थानवाली ऊटपटांग बात कह बैठते हैं । उनकी ऐसी बेढंगी बात सुनकर इतर लोग भ्रममें न पड़ जावें इसी लिये मैंने यह 'टाड भूदलर्शक' पुस्तक प्रकाशित किई है । इसमें तवारीख़ जैसलमेर, रिपोर्ट मर्दुमशुमारी राज्य मारवाड़ आदि के उपरान्त अन्यान्य अनेक प्राचीन इतिहासोंके कई पुष्ट प्रमाण लिखने के अतिरिक्त उसी टाड—राजस्थानही के ऐसे प्रमाण लिखे हैं कि जिनके देख लेने मात्रही से 'टाडसाहब की तो भूल' 'उनके मतानुयायियों की अन्ध परम्परा' एवं 'पुष्करणे ब्राह्मणोंकी प्राचीनता' अनायासही स्पष्ट विदित हो जावेगी।

अतः जो लोग टाड—राजस्थानहीको 'बाबा वाक्यं प्रमाणम' मानते हों उन्हें भी इस पुस्तक को देखकर निश्चय कर लेना चाहिये कि टाड—राजस्थान में ऐसी २ और भी कई भूलें हुई होंगी। परन्तु साथही यहभी समझ लेना चाहिये कि वे भूलें, किसी द्वेष भावसे नहीं, किन्तु टाड साहबकी अनभिज्ञता आदि ही कारणों से हुई हैं । और यदि उन्हें ही कोई विदित कर देता तो वे उसका धन्यवाद मानकर उन भूलोंको स्वयं तत्काल निकाल देते। पर अब स्वयं ग्रंथ कर्त्ताके विद्यमान न रहने से उस पुस्तकमें का लेख न्यूनाधिक करनेका तो अधिकार अब किसी को भी नहीं है,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसलिये जे भूलें टाड--राजस्थानमें हो चुकी हैं वे तो अब अमिट हैं। किन्तु जो कोई सत्य शोधक परोपकारी सज्जन उन भूलोंको सुधारनी चाहें तो उन २ मूल लेखोंके नीचे प्रमाण सहित 'टिप्पणियें (फुट नोट)' दे देने से वे भूलें सुधार सकती हैं।* अतः 'पुष्करणे ब्राह्मणों की प्राचीनता विषयक टाड–राजस्थान की भूल' सुधारने के लिये टाड–राजस्थान के समस्त प्रकाशक व अनुवादक महाशयों से सविनय निवेदन है कि उस पुस्तक की पुनरावृत्तियों में मेरी इस इस पुस्तक के अभिप्राय के सारांश को टिप्पणि रूप से यथा स्थान प्रकाशित करके मुझे कृतार्थ करें।

मैंने यह पुस्तक केवल टाड–राजस्थान की भूल और पुष्करणे ब्राह्मणों की प्राचीनता दिखलाने ही के उद्देश्यसे लिखी है। अतः मुख्य करके तो इन्हीं दो विषयों सम्बन्धी थोड़े ही से प्रमाणों का उल्लेख मात्र किया है। और उसीके अन्तर्गत प्रसंगवश पुष्करणे ब्राह्मणों के सदा से ब्राह्मणोचित कार्य करते आने तथा राज्य सन्मानित होने आदि के भी ऐतिहासिक वृत्तान्त संक्षेप ही से दे दिये गये हैं। किन्तु पुष्करणे ब्राह्मणों के सम्बन्ध की जो २ कथाएं पुराण आदि शास्त्रों में जहां २ आई हैं वे सम्पूर्ण कथाएं तथा इस जाति के प्रारम्भ से लगाके अद्यावधि के लौ-

* इस प्रकारका टाड–राजस्थान का हिन्दी अनुवाद उदयपुर के श्रीमान् पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्दजी ओझा द्वारा, टिप्पणियों सहित, सम्पादन किया हुआ मासिक अङ्क रूपसे बाँकीपुरके खड्गविलास प्रेससे प्रकाशित होना सन् १९०९ में प्रारम्भ हुआ था, किन्तु शोक है कि उस के थोड़े ही से अङ्क प्रकाशित होकर रह गये। यदि इसी प्रकार सारी ही 'भूलों का' संशोधन करके सम्पूर्ण ही ग्रन्थ प्रकाशित कर दिया जावे तो इधर तो लोगों को तो सच्चे इतिहासों का पता लग जावे और उधर टाड–राजस्थान जैसी उपयोगी पुस्तक का भी गौरव बना रहे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किंक प्राचीन ऐतिहासिक सम्पूर्ण वृत्तान्त बहुत विस्तार पूर्वक 'पुष्करणोत्पत्ति नामक एक महान् पुस्तक में लिखे जावेंगे। वह पुस्तक कई वर्षों के परिश्रम द्वारा संग्रह करके कई भागों में अभी मैं बना रहा हूँ जिसका विवरण इस भूमिका के पीछे 'पुष्करणे ब्राह्मणों से निवेदन' में लिखा है।

पाठकों से निवेदन है कि इस पुस्तक को कमसे कम एक वार तो आद्योपान्त अवश्य पढ़ लें वा सुन लें। क्यों कि इस का पूर्ण रहस्य तभी विदित होगा कि जब प्रारम्भ से लगा के अन्त तक पढ़ लेंगे वा सुन लेंगे। किन्तु ऐसा न करके केवल आगे पीछे के १०। ५ ही पन्ने देख लेने से तो न तो आपको ही कुछ आनन्द प्राप्त होगा और न मेरा ही परिश्रम सफल हो सकेगा।

यद्यपि मैंने ज्योतिष्, वैद्यक, धर्म शास्त्र आदि कई विषयों पर तो ग्रन्थ लिखे हैं, तथा उनमें से कुछ तो प्रकाशित भी कर चुका हूं और शेष क्रमसे प्रकाशित करता जाता हूं, किन्तु इस (इतिहास) विषयका मेरा यह कार्य प्रथम ही वार होने से इस में यदि किसी प्रकार की त्रुटि रह गई हो तो मुझे क्षमा करें। सूचित करनेपर द्वितीयावृत्ति में उसका उचित संशोधन कर दिया जावेगा।

इस के अतिरिक्त प्रेस दूर होने और पुस्तक छपाने में शीघ्रता करने तथा कार्य्य वशात् मेरा भी निवास बराबर एक ही स्थान में न रहने आदि कारणों से प्रूफ ठीक न शोध सकने आदि के कारण जो अशुद्धियें रह गई हैं उनकी पाठकों से क्षमा चाहता हूँ। पुनरावृत्ति में शुद्ध कर दी जावेंगी।

सं० १९६६ वि०
कार्त्तिक कृष्णा १०

स्वजाति का लघु सेवक,
व्यास मीठालाल
पाली—मारवाड़।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्करणे ब्राह्मणों से निवदन ।

आपको ज्ञात होगा कि कच्छ देश निवासी पणिया जाति के पुष्करणे ब्राह्मण श्रीमान् पण्डित ज्येष्ठाराम मुकुन्दजी स्कन्द पुराणोक्त श्रीमाल क्षेत्र महात्म्य में की "पुष्करणो पाख्यान" नामक पुस्तक गुर्जर भाषा टीका सहित सं० १९४५ में बम्बई में छपवाकर पुष्करणे ब्राह्मणों में विना मूल्य वितरण करके धन्यवादके भागी हुये थे ।* उस कथा में पुष्करणे ब्राह्मणों के पूर्वज सिन्ध देशसे श्रीमाल क्षेत्र में जाके लक्ष्मीजी से वर प्राप्त करके, फिर पुष्करणे कहलाये जिसका वृत्तान्त लिखा है ।

(१) पुष्करणोत्पत्ति नामक पुस्तक की आवश्यकता—

परन्तु पुष्करणे कहलाने के पश्चात् अद्यावधिका लौकिक प्राचीन ऐतिहासिक वृत्तान्त उस में न होने से उसे जानने की जिज्ञासा रखने वालों की इच्छा पूर्ण करने के लिये हमारे परमपूज्य पितृव्य (बड़े बाप) श्रीमान् अटलदासजीकी आज्ञानुसार मेरा विचार हुआ कि 'पुष्करणोत्पत्ति' नामक एक ऐसी महान् पुस्तक कई भागोमें संग्रह की जावे कि जिस एकही पुस्तकमें पुराण आदिकी सम्पूर्ण कथाएं तथा लौकिक ऐतिहासिक सम्पूर्ण वृत्तान्त आ जावें।

(२) उक्त पुस्तक के विषय—

(१) शास्त्र भाग—इस में पुराण आदि ग्रंथों में जहां२ पुष्करणे ब्राह्मणों का वृत्तान्त आया है, वह एकत्र करना तथा पुष्करणे ब्राह्मणों के बनाये हुये प्राचीन व आधुनिक सम्पूर्ण ग्रन्थों का सूचि पत्र बनाना. इत्यादि ।

(२) जाति निर्माण भाग—इस में जाति मर्यादा स्थापित

* उसी पुस्तक का गुजराती से हिन्दी अनुवाद जैसलमेर निवासी पुरोहित मोतीलालजीने छपवाके 'पुष्टिकर हितैषिणी सभा' जोधपुर के भेट की थी,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करने आदि का कारण, स्थान, और समय आदि का निर्णय –इत्यादि ।

(३) गोत्र प्रवर भाग—इसमें इस जाति के सम्पूर्ण ब्राह्मणों के गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा, सूत्र, तथा गणेश, भैरव, देवी आदि और खाँप वा नख आदि की प्राचीन व्यवस्था तथा पीछे से मिली हुई उपाधियों आदिका वृत्तान्त–इत्यादि ।

(४) संस्कार भाग—इस में गर्भाधान, उपनयन, विवाह आदि सम्पूर्ण संस्कारों की शास्त्रमर्यादा का विधान, और जाति मर्यादानुसार उनके निमित्त द्रव्य लगाने आदि की प्राचीन व्यवस्था–इत्यादि ।

(५) कुलाचार्य्य भाग—इस में यदुवंशियों से लगा के आज पर्यन्तके राजा महाराजाओं आदि को पुरोहिताई (गुरु यजमान वृत्ति) आदि सम्पादन करनेका प्रारम्भिक वृत्तान्त और राज्य मुत्सद्दी आदि होने का कारण–इत्यादि ।

(६) राज्य सन्मान भाग–इस में राजा महाराजाओंसे मिले हुये ग्राम आदि के निमित्तसे ताम्रपत्र तथा राज्यशासन पत्र आदि राज्य सन्मान सूचक सम्पूर्ण लेखों की नक़लें–इत्यादि ।

(७) जाति महिमा भाग–इसमें जाति मरयादा स्थिर होने के समय से लगाके आज पर्यन्तके महानुभावों के जीवनचरित्र अर्थात् उनके किये हुये परोपकारी कार्यों का विस्तार पूर्वक वर्णन–इत्यादि ।

(८) वंश वृक्ष भाग—इस में प्रत्येक खाँप वा नखके मूल पुरुष से लगा के वर्त्तमान समय तककी वंश परम्परागत वंशावलियें (पीढ़ियें–कुरसी नामें) और मनुष्य गणना के सदृश समस्त देशों के पुष्करणे ब्राह्मणों की जन संख्या–इत्यादि ।

(९) जात्युन्नति भाग—इस में प्रचलित कुरीतियों से होने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाली हानियों का वर्णन और उनसे बचने के उपाय तथा प्राचीन और्रस मयोचित नवीन सुरीतियों के गुणों का वर्णन और उनसे लाभ उठाने के उपाय–इत्यादि ।

(१०) मिश्र भाग—इस में जाति के उपयोगी अन्यान्य अनेक विषयों का वर्णन–इत्यादि इत्यादि ।

(३) पुस्तक बनाने के लिये मुख्य साधन—

विचार करनेसे निश्चय हुआ कि ऐसी परम उपयोगी पुस्तक बनाने के लिये जिन२ साधनों की आवश्यकता हैं उनमें चारही साधन मुख्य हैं । (१) तो पुराण आदि शास्त्रों की कथाएं, (२) भाटों व तीर्थों पर के पण्डों आदि की बहियें, शकरमण सेवगों की कविताएं, तथा ढोली आदिकों के गीत; (३) प्राचीन इतिहास की पुस्तकें, व बहु श्रुत वृद्ध पुरुषों आदि की वार्त्ताएं और (४) राजाओं के दिये हुये ताम्रपत्र शिला लेख राज्यशासन पत्र आदि । यद्यपि ये साधन इस समय प्रायः लुप्तसे हो रहे हैं तथापि परिश्रम करने पर इन का एकत्र करना अन्यान्य लोगों की अपेक्षा पुष्करणों के लिये इतना दुर्लभ नहीं है। क्यों कि प्रथम तो यह जाति स्वयं सदा से विद्वान् व राजाओं के कथा व्यास पुस्तका ध्यक्ष आदि होने से पुराण आदि ग्रन्थ तो बहुधा इन्हीं के यहां से प्राप्त हो सकेंगे ।* दूसरे यह जाति सदासे उदार भी होनेसे भाटों आदि की

* इस ग्रन्थ कर्त्ता के पूर्वज भी विद्यानुरागी होनेसे उन्हीं के संग्रह किये हुये हमारे यहांके हस्तलिखित 'प्राचीन पुस्तकालय' में वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, शिल्पशास्त्र (असली विश्वकर्मा संहिता आदि), ज्योतिष् व्याकरण, मन्त्रशास्त्र, पदार्थ विद्या, तथा प्राचीन इतिहास आदि की कई पुस्तकें विद्यमान हैं ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहियों में इनके पूर्वजों का परम्परासे शृंखलाबद्ध वृत्तान्त लिखा हुआ मिल सकेगा। ‡तीसरे यह जाति स्वयं इतिहास प्रेमी भी होने से इन्हीं के यहां से जब कि बहुधा अन्यान्य लोगों का भी प्राचीन वृत्तान्त मिल सकता है तो फिर इनके निजका वृत्तान्त मिल जाने में तो आश्चर्य ही क्या है।* और चौथे यह जाति बहुत प्राचीनकाल से राजाओं के कुलाचार्य-पुरोहित, गुरु व राज्य मुसाहिब-आदि होने से राजाओं के दिये हुये ताम्रपत्र, शिलालेख, राज्यशासन पत्र आदि मिलने के उपरान्त राजाओं के निजक इतिहास में भी इनका बहुतसा वृत्तान्त मिल सकेगा।

(४) जाति सभा की आवश्यकता—

परन्तु इतना सुविधा होने पर भी सर्वत्र घूम फिर कर पता लगा के उक्त साधनों का संग्रह करना मेरी अकेलेकी शक्ति से बाहर जान के इस महान् कार्यको पूर्ण करने के लिये पुष्करणे ब्राह्मणों की एक जातीय महा सभा स्थापित करानी उचित देखकर मैंने उद्योग करके सं० १९४७ के कार्त्तिक कृष्ण १३ सो-

‡ सं० १८७७ में जोधपुर के एक चत्राणी व्यासने गाँव बाँवलड़ीमें पुष्करणे ब्राह्मणों के भाट सदारामसे तकरार हो जाने से उसकी बहियें छीन लीं। तभी से जोधपुर, पाली, नागोर, मेड़ता आदि के पुष्करणों के यहां भाटों का आना जाना बन्द हो जाने से अब भाटों की बहियों में इन के नाम भी नहीं लिखे जाते हैं। किन्तु यह परम आवश्यकीय प्राचीन प्रथा उठ जानी दोनों ही के लिये महान् हानिकर हुई है। अतः उभय पक्षको अवश्य ही चाहिये कि विना विलम्ब के उसका पुनः प्रचार कर दें ताकि पुष्करणों के तो पूर्वजों की कीर्त्ति और भाटों की जीवि का सदाकाल बनी रहे।

* जोधपुर में भी चोहटिया जोशी जाति के पुष्करणों के यहां प्राचीन इतिहास लिखने की प्रथा कई पीढ़ियों से चली आती हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मवार हो जोधपुर में 'पुष्टिकर हितैषिणी' नामक एक सभा स्थापित करवाई।

(५) सभा का उत्साह किन्तु अन्त में शिथिलता—

सभाने प्रारम्भ ही में तो ऐसा उत्साह दिखाया कि एक जोधपुर ही के पुष्करणोंने—सो भी सम्पूर्ण जाति भरके नहीं किन्तु थोड़ेही से सज्जनोंने—बात ही बात में १५००० । २०००० रुपये एकत्र करके सभाके लिये एक बड़ा विशाल 'सभाभवन' बना लिया। और मेरे कथनानुसार उक्त पुस्तक बनाने के लिये प्रबंध होने लगा, अर्थात् 'प्रश्न पत्रिका' नामक एक पुस्तक छपवा कर जहां२ पुष्करणे ब्राह्मणों का निवास स्थान है वहां२ भेजी जाकर पूर्वोक्त साधन एकत्र करके सभामें भेजने का अनुरोध किया जाने लगा। इतना ही नहीं किंतु कई कुटुम्ब वालों के तो वंश वृक्ष (कुरसी नामें) एकत्र करके छपवाकर विना मूल्य बाँटे भी जाने लगे।

इसके उपरांत स्व जातीय बालक ब्रह्मचारियों को यज्ञोपवीत धारण होते ही त्रिकाल सन्ध्या पूर्वक वेदादि शास्त्र पढ़ाये जाने का भी सभा से उचित प्रबन्ध हो गया, जिस से कई विद्यार्थी वेद पाठी हो गये।* इसी प्रकार फोटोग्राफी, घड़ीसाजा, गिल्ट आदि शिल्पविद्या शिखलानेका भी प्रबन्ध होने लगा§

---

* विद्यार्थियों के लिये चारों वेदों की ४ संहिताएं तथा त्रिकाल सन्ध्या की २००० पुस्तकें तो मैंने अपनी निज की और से, और षट् कर्म की २००० पुस्तकें जोधपुर निवासी जोधावत व्यास ऋषिदत्तजी के पुत्र (मेरे मित्र) व्यास पूनमचन्द की और से मैंने ही बम्बई में छपवा कर सभा की भेट की थी।

§ मैंने स्वयं ४००) ५००) रुपये व्यय करके फोटोका सामान खरीदकर विद्यार्थियों को इस विद्यासे विज्ञ किये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसके उपरान्त सभा की उदारता से स्वजाति की उन्नति होने के उपाय सोच२ कर सभा में निवेदन करने का अधिकार सं० १९४८ के मृगशिर कृष्ण ६ को मुझे दिया गया। यद्यपि मैं अकेला ही इस महान् कार्य का भार उठाने के योग्य कदापि नहीं था, तथापि सभा की आज्ञा को शिरो धार्य करके कईबातोंका उचित प्रबन्ध कराने के लिये समय २ पर सभा से निवेदन करता रहा जिससे देश काल की प्रचलित आधुनिक रूढ़ि के अनुसार जो कई कुरीतिये इस जाति में भी स्थान पाने लग गई हैं उन के तो निर्मूल करने और सुरितियों से लाभ उठाने का प्रबन्ध सभा से होने लगा।

इस प्रकार सभा का उद्योग व उत्साह देखकर लोगों को दृढ़ विश्वास हो गया था कि इस सभाद्वारा पुष्करणे ब्राह्मणोंकी अनेक शुभ कामनाएं पूर्ण हो सकेंगी। किन्तु बड़े दुःखके साथ कहना पड़ता है कि–'श्रेयांसि बहु विघ्नानि' अर्थात् श्रेष्ठ कामों को पूर्ण करने के बीचही में बहुत से विघ्न आ पड़ते हैं। वही बात इस सभाके लिये भी चरितार्थ हुई, कि जिससे सभा अपने उद्देश्य को पूर्ण करने में बिलकुल ही असमर्थ हो गई।

(६) पुस्तक बनाने में मेरा उद्योग—

इस सभाद्वारा भविष्य में जो स्वजातिकी उन्नति होने की आशा की गई थी वह आशा निराशा होती देखकर उस समय मुझे जो क्लेश हुआ था वह अकथनीय है। किन्तु मैं तो अपने विचारे हुये ('पुष्करणोत्पत्ति' नामक पुस्तक निर्माण करने के) कार्य को पूर्ण करने में किञ्चित् भी पीछा नहीं हटा। वरन पहिले से भी विशेष दृढ़ होके उसकी पूर्त्ति में प्रवृत हो गया, सो आजतक यथावकाश उसकी खोज में लगा ही हुआ हूँ, और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहुत से वृत्तान्त एकत्र करभी लिये हैं तथापि इस महान् पुस्तक के लिये अभी तक बहुत आवश्यकीय विषय एकत्र करने शेष (बाकी) हैं, अतः उपरोक्त सम्पूर्ण भागों से युक्त 'पुष्करणोत्पत्ति' नामक पुस्तक बनकर प्रकाशित होने में अभी बहुत विलम्ब हो जाने की सम्भावना देखकर कई सज्जनों ने प्रथम इस 'टाड भ्रमोच्छेदक' पुस्तक को बनाकर शीघ्र प्रकाशित करनेका अनुरोध किया। इसलिये मैंने भी उनके आज्ञानुसार प्रथम इस पुस्तक को बनाकर प्रकाशित की है। इस छोटी सी पुस्तक को देख कर आप अनुमान कर सकते हैं कि 'पुष्करणोत्पत्ति' नामक पुस्तक कितनी वृहत् और कैसी महान् उपयोगी बनेगी।

(७) स्वजातीय प्राचीन ऐतिहासिक वृत्तान्त—

इस पुस्तक को अधिक उपयोगी बनाने के लिये मैंने कई स्व जातीय विद्वानों से प्राचीन ऐतिहासिक वृत्तान्त लिख भेजनेकी प्रार्थना किई थी। परन्तु अधिकांश सज्जनों ने मेरी इस प्रार्थना के उचित और आवश्यक होने पर भी कुछ भी ध्यान नहीं दिया। हां किन्हीं२ ने जो कुछ लिख भेजने की कृपा की हैं, उन में से तो अधिकांश तो इसमें पहिले ही से सम्मिलित कर दिये गये हैं किन्तु कई आवश्यकीय वृत्तान्त समय पर न पहुंचने के कारण रहभी गये हैं। अतः जो रह गये हैं वे तथा और भी जो कोई लिख भेजेंगे वे सब इस पुस्तक की द्वितीया वृत्ति में तथा पुष्करणोत्पत्ति में भी सन्निविष्ट कर दिये जावेंगे।

(८) इस पुस्तकके प्रकाशनार्थ उत्तेजकोंका उपकार—

मुझे इस पुस्तक को प्रकाशित करने के लिये जिन२ सज्जनोंने उत्तेजनादी है उन सबका मैं उपकार मानता हूं। इसी प्रकार श्रीमान् जोशीजी आशकरजी, व्यासजी (चण्डवाणी जोशी)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भैरूदासजी, चोहटिया जोशीजी शिवचन्दजी, पुरोहितजी शिवनाथजी (लाडजी), पुरोहितजी श्रीनाथजी, थानवीजी गोरूरामजी, व्यासजी बदरीदासजी, व्यासजी जवानमलजी, स्वर्गीय कल्लाजी शिवदत्तजी के भतीजा व चतुर्भुजजी के पुत्र कल्लाजी वंशीधरजी तथा स्वर्गीय 'वृहत्कवि,' 'विद्याभास्कर', 'पण्डित गुरु', पुरोहितजी लालचन्द्रजी (लालजी महाराजा) *इत्यादि इत्यादि अनेकानेक स्वजातीय सज्जनोंने मेरे इस कार्यको पसन्द किया उन सबका भी उपकार मानता हूं। उन में भी जोधपुर निवासी श्रीमान् कल्लाजी नारायणदासजी का विशेष उपकार मानता हूं; क्यों कि इस पुस्तक के प्रकाशित होने में विलम्ब होता देख एक आध वार उन्होंने मुझे कटु वचन भी कहे थे। यह उन्हीं के कटु वचनों का अमृतरूपी मिष्ट फल आज मैं स्वजाति की सेवामें इतनी शीघ्रता से भेटकर सका हूं।

(९) धनकी सहायता स्वीकार न करने का कारण—

इस पुस्तक को प्रकाशित करने के लिये कई स्वजातीय सज्जनोंने मुझे धन की सहायता देनी चाही थी। किन्तु यह एक स्वजाति सेवा का लघु कार्य होने से प्रथम ही आवृत्ति में धनकी सहायता लेनी उचित न जानकर मैंने किसी से भी कुछभी लेना स्वीकार नहीं किया। इस के लिये क्षमा माँगता हूं।

(१०) मेरे निःस्वार्थ परिश्रम उठाने का कारण—

मैंने इतना परिश्रम नतो आप लोगों से किसी प्रकारका

* खेद है कि लालजी महाराज इस पुस्तक के प्रकाशित होनेसे पहिले ही स्वर्ग सिधार गये यदि वे विद्यमान होते तो मुझे 'पुष्करणोत्पत्ति' नामक पुस्तक प्रकाशित करने में भी उत्तेजना मिलती।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तग़मा (मेडल) मिलने के लिये किया है, और न कोई प्रशंसा पत्र पाने के लिये किया है और न इसकी बिक्री करके धन कमाने ही के लिये किया है। यदि मुझे धनही का लोभ होता तो इस पुस्तक की बहुत अधिक प्रतियें छपवाकर कमसे कम ॥) ॥) में भी बेच देता तो भी २०००) ४०००) रुपये तो मिल ही जाते। परन्तु मैंने यह परिश्रम किसी भी प्रकारकी स्वार्थ दृष्टिसे नहीं किया है, किन्तु किया है केवल हमारे सजातीय पूर्वजों को महान् कीर्त्तिको प्रगट करनेके लिये। अतः जो कुछ समय, परिश्रम, और द्रव्य इस पुस्तक के प्रथम निर्माण करने में लगने की जो आवश्यकता थी वह तो मैं लगा चुका, उसी का फल स्वरूप यह पुस्तक समग्र पुष्करणे ब्राह्मणों की सेवामें भेट किई है। यदि मेरा यह परिश्रम आप महाशयों को पसन्द आया तो पूर्वोक्त 'पुष्करणोत्पत्ति' नामक विस्तार पूर्वक महान् पुस्तक जो इससे भी अधिक परिश्रम द्वारा अभी मैं बना रहा हूं शीघ्र ही प्रकाशित करके इसी प्रकार स्व जातिकी सेवामें भेट करने की पूर्ण इच्छा रखता हूं। परन्तु इसके साथ आपको यह भी जानना चाहिये कि यह कार्य कोई मेरे अकेले हो का नहीं है, किन्तु सम्पूर्ण जाति भरका है। अतः उक्त पुस्तक को अधिक उपयोगी बनाने और शीघ्र प्रकाशित कराने के लिये जाति भरके समस्त महानुभावोंको भी कुछ उद्योग करके उक्त पुस्तक के उपयोगी—प्रत्येक भाग की पूर्त्ति करने योग्य लेख आदि भेजकर मेरे परिश्रम में सहायता पहुंचानी चाहिये।

(११) इस पुस्तकके अंग्रेज़ी अनुवादकी आवश्यकता—

इसके अतिरिक्त मैं यह भी चाहता हूं, और यह है भी आवश्यक, कि इस पुस्तक को अंग्रेज़ी में प्रकाशित कराके भारत गवर्न्मेण्ट के ऐतिहासिक तथा मनुष्य गणना आदि विभागों की

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेवा में भेजी जावे, परन्तु मैं स्वयं अंग्रेज़ी विद्या से अनभिज्ञ होनेसे ऐसा नहीं कर सकता हूं। अतः स्वजातीय अंग्रेज़ो के विद्वानों से प्रार्थना है कि वे कृपाकर इस पुस्तक का अंग्रेज़ी में पूर्ण अनुवाद वा समानुवाद ही बनाकर मेरे पास भेजने की कृपा करें।

(१२) पाठकों से प्रार्थना—

स्वजातीय सज्जनों से यह भी प्रार्थना है कि जब तक इस पुस्तक की दूसरी आवृत्ति छपवाकर समस्त देशों में प्रत्येक पुष्करणे ब्राह्मण के पास नहीं पहुंचाई जाय तब तक जिनके पास यह पुस्तक पहुँचे वे केवल आपही पढ़के न रख दें किन्तु जिनके पास पुस्तक न पहुंची हो उनको भी पढ़नेको दें अथवा आपही उन्हें सुना दिया करें जिससे सब लोग इसके विषयों से अभिज्ञ (जानकार) हो जावें।

(१३) नरेशोंका उपकार व उनकी मंगल कामना—

अन्त में समस्त पुष्करणे ब्राह्मणों को जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, कृष्णगढ़, जयपुर, उदयपुर, बूँदी, कोटा, ईडर, रतलाम, झाबुआ, सीतामऊ, नरसिंहगढ़, इन्दोर, बड़ौदा, भुज, पटियाला—इत्यादि रियासतों के श्रीमान् नरेशों को अनेक धन्यवाद देना चाहिये कि जिनके सुराज्यों में पुष्करणे ब्राह्मणों का सदा सन्मान व सत्कार होता आया है। आशा है कि श्रीमान् आगे को भी सर्वदा अपने पूर्वजों का अनुकरण करते हुये अपनी इस शुभ चिन्तक जाति का वैसा ही सत्कार करते रहेंगे। इसी प्रकार श्रीमती भारत गवर्न्मेण्ट का भी उपकार मानना चाहिये कि जिसके शान्तिमय शासन काल में हम सब अपने२ कर्त्तव्य स्वतन्त्रता पूर्वक कर सकते हैं। श्री जगदीश्वर से प्रार्थना है कि वह उक्त श्रीमानों का सदा अखण्ड प्रताप बनाये रखे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राचीन इतिहास से पता लगता है कि पूर्व काल में ब्राह्मणों का एक ही समुदाय था। इस समय की भांति पहिले कुछ जाति भेद आदि नहीं था। केवल गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा, आदि ही से पहिचाने जाने का व्यवहार था। सम्पूर्ण ब्राह्मण चार वेदों के उपासक और १२८ गोत्र वाले थे। जिनमें ३३ गोत्र वाले तो ऋग्वेदी, ३२ गोत्र वाले यजुर्वेदी, ३२ गोत्र वाले सामवेदी और ३१ गोत्र वाले अथर्ववेदी थे। समयान्तर में देश भेद से इनकी उत्तर और दक्षिण,—ऐसी दो सम्प्रदायें बन गईं। अर्थात् जो विन्ध्याचलके उत्तर वा पूर्व के देशों में जा बसे वे तो गौड़, और दक्षिण वा पश्चिम के देशों में जा बसे वे द्राविड़ कहलाये। वहां भी जुदे २ देशों के कारण इन प्रत्येक के भी ५। ५ भेद हो जानेसे १० प्रकारके ब्राह्मण हो गये। इन में—सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, उत्कल और मैथिल,—ये पाँचों तो उत्तर सम्प्रदाय के होनेसे पञ्च गौड़ कहलाये। और कर्णाटक, तैलङ्ग, महाराष्ट्र, द्राविड़ और गुर्जर, ये पांचों दक्षिण सम्प्रदायके होनेसे पञ्च द्राविड़ कहलाये। इनमें से भी बहुत दूर २ तक जा बसनेसे और बहुत समय तक दूर २ देशों में रहने से एक दूसरे के आचार विचार में भेद पड़ जाने के कारण अपने २ देशके अनुकूल हों, ऐसे २ नियम बना लेनेसे इन की ८४ जातियें बन गईं, जो अब 'ब्राह्मणों की चौरासी' नामसे प्रसिद्ध हैं। इन ८४ जातियों में से कई तो देशों के नामसे, कई ग्रामों के नामसे, और कई गुणों के नामसे, इत्यादि कारणों से पृथक् २ नामों वाली जातियें प्रसिद्ध हो गईं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हमारे मारवाड़स्थ–जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, जयपुर, आदि की रियासतों में भी कई जाति के ब्राह्मण बसते हैं। उनमें राज्य पुरोहित, राज्यगुरु और राज्य मुत्सद्दी आदि के लिये पुष्करणे ब्राह्मणों की जाति प्रसिद्ध और प्रधान है। इनकी जाति सिन्ध देश में बनी है। इनके पूर्वज यदु वंशियोंके पुरोहित (कुलगुरु) होने से यदु वंशियों की राजधानी द्वारिकाके आसपास के देशों में अर्थात् सिन्ध, कच्छ और मारवाड़ की हद्द पर अधिक बसते थे। अतः उस देश के अनुकूल और जाति के उपयोगी हों, वैसे नियम बनाके अपनी जाति मर्यादा स्थिर करली।

स्कन्द पुराणादि में लिखा है कि प्राचीन काल में पुष्करणे ब्राह्मण सिन्ध देशमें निवास करते थे और उस समय सिन्धी ब्राह्मण कहलाते थे। फिर लक्ष्मीजीने अपना विवाह होने के पश्चात् प्रसन्न होकर श्रीमाल नगर में इनको 'उदार, राज्यपूज्य शुद्ध, सन्तोषी, ब्राह्मणों के पुष्टिकर्ता, धर्मके पुष्टिकर्ता और ज्ञान के पुष्टिकर्ता' कहकर पुष्करणा कहलाने का वर दिया–

उदारा राज्यपूज्याश्च शुद्धाः सन्तोषिणः सदा।
ब्राह्मणानां पुष्टिकरा धर्मपुष्टिकरास्तथा॥
ज्ञानपुष्टिकरास्तस्मात् पुष्करणाख्या भविष्यथ॥

तबसे ये पुष्टिकरणे अर्थात् पुष्करणे ब्राह्मण कह लाने लगे; और इसका अपभ्रंश पोकरणा होने से अब पोकरणे ब्राह्मण भी कहलाते हैं। सारांश यह कि पूर्व कालमें जो ब्राह्मण पञ्च द्राविड़ो में गुर्जरों की एक शाखा सिन्धी ब्राह्मण कहलाते थे वेही श्री लक्ष्मीजी के वरदान से पुष्करणे वा पोकरणे ब्राह्मण कहलाने लगे हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिछले समय में परस्पर के द्वेष से इस देश का प्राचीन इतिहास प्रायः नष्ट हो गया और देशमें बहुत काल तक शान्ति न रहने से नवीन इतिहास लिखने का भी लोगोंको अवकाश नहीं मिला था। अब अंग्रेज़ सरकार के राज्य में सर्व प्रकार की शान्ति हो जाने से प्राचीन इतिहास की खोज होने लगी। तदनुसार थोड़े वर्ष हुये कि लेफ्टिनेण्ट कर्नल जेम्स टाड साहबने भी अपने नामपर 'टाड राजस्थान' नामक राजपुताने का इतिहास ईस्वी सन् १७३५ में बनाया है, जिसे आज ७४वर्ष व्यतीत हुये हैं। उस में पुष्करणे ब्राह्मणों के लिये एक भूल हुई है। परन्तु इस पुस्तक में भूल हो जाना कोई बड़ी बात नहीं थी। क्योंकि प्रथम तो टाड साहब स्वयं विदेशी होने से हमारे देश की जाति, धर्म, मर्यादा आदि से तो अनभिज्ञ (अनजान) थे ही; फिर इस देश के प्राचीन इतिहास सम्बन्धी लेख भी उनके हाथ यथा तथ्य न लगने से कई बातें अटकल पच्चू सुनी सुनाई लिखनी पड़ीं। ऐसी दशामें, एकही क्या, कई भूलें हो जानी सम्भव हैं, और कई भूलें हुई भी हैं। यदि ये भूलें टाड साहब को ही कोई बता देता तो वे स्वयं उन्हें प्रसन्नता पूर्वक अवश्य पीछी सुधार देते। परन्तु यह पुस्तक अंग्रेजी में होने से इस में की भूलें उस समय लोगों की दृष्टि में नहीं आई। जिस से उसका सुधार अब तक नहीं हो सका। किन्तु अब अंग्रेजी विद्या का प्रचार बहुत हो जाने से इस में की भूलें लोगों को मालूम होने लगी हैं। उनमें जो भूल पुष्करणे ब्राह्मणोंके लिये हुई है वह आगे दिखलाता हूं।

टाड राजस्थान के दूसरे भागके जैसलमेर के इतिहास के ७ वें अध्याय में जहां पुष्करणे ब्राह्मणों का वृत्तान्त लिखा है. वहां, इनकी उत्पत्ति की एक अजब कहानी बताई है:—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

" Tradition of their origin is singular : it is said that they were Beldars and excavated the sacred lake of Poshkur or Pokur, for which act they obtained the favour of the deity and the grade of Brahmins, with the title of Pokurna. Their chief object of emblematic worship, the Khodala, a kind of pick-axe used in digging, seems to favour this tradition". [Tod. Vol. II. J. R Chap. VII.]

"इन की उत्पत्ति की एक अजब कहानी है। कहा जाता है कि ये बेलदार थे, और पुष्कर वा पोकर की पवित्र झील को खोदी जिस कार्य के लिये देवता की कृपा, और पोकरणा की उपाधि के साथ ब्राह्मणों का पद प्राप्त किया। इन के पूजने की मुख्य वस्तु खुदाला है जो कि खोदने का एक औजार है, इस से इस कहानी की अनुकूलता ज्ञात होती है।" (टाड राजस्थान, भाग २, जैसलमेर, अध्याय ७)

प्रथम तो स्वयं टाड साहब को भी इस कहानी पर कुछ भी विश्वास नहीं हुआ था, तभी तो इसे ' अजब कहानी ' करके लिखी है। क्यों कि जो बात असम्भव, नामुमकिन, नहीं होने योग्य हो, उसी को अजब कहानी कहते हैं।

इस के अतिरिक्त इनके पूजने की मुख्य वस्तु खुदाला लिखा है; यह भी सर्वथा मिथ्या है। पुष्करणों के यहां खुदाला तो क्या इस प्रकार का अन्य भी कोई औज़ार किसी काल में भी और कहीं भी नहीं पूजा गया है।

इसी टाड राजस्थान को देख के विना परिश्रम किये ही सीधी खिचड़ी खाने वाले, और भी कइयोंने धोखा खा लिया है। जैसे–मिस्टर जॉन विलसनने अपनी तवारीख़ में और अबिटसन साहिबने रिपोर्ट मर्दुम शुमारी पञ्जाब में भी यही बात टाड राजस्थान से ही लेके लिख दी है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसी प्रकार मर्दुमशुमारी राज्य मारवाड़, बाबत सन् १८९१ ई०, के तीसरे भाग के १६० वें पृष्ठ में भी पुष्करणे ब्राह्मणों का वृत्तान्त लिखते समय टाड राजस्थान के उपरोक्त लेखका आशय लिखके एक 'लोक अफ़वाह'* अपनी ओर से अधिक लिख दी

* मारवाड़ की मर्दुमशुमारी ने ऐसी मिथ्या 'लोक अफ़वाह' केवल पुष्करणे ही ब्राह्मणों के लिये नहीं लिखी है किन्तु ऐसी ही एक मिथ्या लोक अफ़वाह 'श्रीमाली ब्राह्मणों' की उत्पत्ति के विषय में भी लिख दी है। वह यों है:—

"भीनमाल में एक समय राक्षस ब्राह्मणों को व्याह नहीं करने देता था, और कोई करता तो चँवरी में से उसका शिर काटके ले जाता था। उस के भयसे व्याह बन्द हो गया और ब्राह्मणों की सैकड़ों लड़कियां कुंवारी रह गईं। तब वहां के राजा जगाम ने चण्डीश्वर महादेव जी के मन्दिर पर धरना दिया। महादेवजी ने कहा कि 'मैंने तेरा मतलब समझ लिया। तू ब्राह्मणों से कह दे कि एकही चँवरी में सभी लड़कियों को व्याह देवो राक्षस कुछ विघ्न नहीं कर सकेगा। मगर शर्त्त यह है कि तू रातभर हाथियार बाँध के चौकसी पर खड़ा रहना।' राजाने ऐसा ही किया कि एक रात में सब लड़कियों का व्याह करा दिया। सिर्फ़ एक बींद देर करके तड़के के वक्त आया, उस वक्त राजा ऊँघ गया था। राक्षस, जो मौका देख रहाथा, झट उसका शिर ले गया। उस की माँग राजाको श्राप देने लगी। राजा महादेवजी के मन्दिर पर जाके मरनेको तैयार हुआ। महादेवजीने कहा कि 'तू ऊँघ क्यों गया? अबतो वह शिर तो नहीं आ सकता मगर दूसरा शिर उस ब्राह्मण के चिपका दे।' राजा मन्दिर से निकला, तो एक माली सामने आता हुआ मिला। राजा ने उसीका शिर काटके उस ब्राह्मण के धड़ पर रख दिया। वह फौरन जी उठा। माली का शिर होनेसे उसका और उसकी औलाद का नाम 'शिरमाली' हुआ।"
(देखो मर्दुमशुमारी के तीसरे भाग के पृष्ठ १४० से।)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है। वह यों है:-

"लोक अफ़वाह में ऐसा कहा जाता है कि नाहरराव प-ड़िहारने पुष्करजी की रेत खुदाई थी। उस वक्त एक लाख ब्रा-ह्मणों को जिमाने का सङ्कल्प किया था। मगर ८०००० से ज़ियादा ब्राह्मण नहीं आये, जिससे उसने २०००० ओडों को जनेऊ पहिनाके ब्राह्मणों के साथ जिमा दिया। उस दिन से पुष्करणे ब्राह्मणों की जाति पैदा हुई।"

जिस प्रकार टाड साहिबने विश्वास न होने से 'अजब क-हानी' कह के लिखी है, वैसे ही इस रिपोर्ट लिखने वाले को भी इस पर कुछ भी विश्वास नहीं था, तभी तो इसे 'पुष्करणों की उत्पत्ति का इतिहास' न कह के 'लोक अफ़वाह' कहा है। इतना ही नहीं किन्तु यह लोक अफ़वाह बिलकुल बे बुनियाद मन घटित, कपोल कल्पित, सर्वथा मिथ्या होनेसे उसी रिपोर्ट मर्दुम शुमारी, राज्य मारवाड़ने ही कई पुख़्ता प्रमाण दे के उसी स्थान पर पृष्ठ १६१ वें में इसका पीछा खण्डन भी कर दिया है। वह यों है:—

"नाहरराव पड़िहार के वक्तमें पुष्करणों की उत्पत्ति होना भी ग़लत है। क्योंकि नाहरराबसे कई सौ वर्ष पहिले देवराज भाटी हुआ है। उस के ज़माने में पुष्करणे थे। बल्कि उस के पुरोहित* रत्नासे रत्नू चारणों की जाति पैदा हुई है। और रत्ना का भानजा जो १ चोहटिया* जोशी था, वह चारण होने के पीछे उसका पुरोहित हो गया। सो अब तक रत्नू चारणों

* ये दोनों पुष्करणे ब्राह्मण थे। इन में पुरोहित रत्नू को देवराज भाटी को अपने साथ भोजन कराने से चारणों की जाति में जाना पड़ा, तब से उसकी सन्तान रत्नू चारण कहलाती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की विरत (वृत्ति–पुरोहिताई) चोहटिये जोशियों की चली आती है। इस से साबित होता है कि पुष्करणे ब्राह्मण नाहर-राव+ क्या देवराज भाटी के भी पहिले से हैं।"

इस के उपरान्त पुष्करजी की उत्पत्ति आदि का इतिहास लिखते समय टाड राजस्थान व अजमेर की तवारीख़ आदि में जहाँ पुष्कर का तालाब खुदवाने आदि नाहरराव पड़िहार का आदिसे अन्त तक का सम्पूर्ण वृत्तान्त लिखा है वहां पुष्करणे ब्राह्मणों की उत्पत्ति की बात भी लिखे बिना नहीं रहते। जब कि अजमेर की तवारीख़ ने पुष्करजी के पण्डों तक का पूर्ण वृत्तान्त लिखा है तो फिर पुष्करणे ब्राह्मणों का वृत्तान्त क्यों नहीं लिखती और टाड साहिब को तो अपनी कहानी की पुष्टि के लिये इस स्थान पर अवश्य लिखनी चाहिये ही थी। परन्तु पुष्करणे ब्राह्मणों को पुष्करजी पर उत्पत्ति होना तो दर किनार रहा किन्तु इस जातिका पुष्करजी पर कभी निवास भी नहीं हुआ था। तो फिर पुष्करजी के इतिहास में इनकी उत्पत्ति आदिका प्रमाण कहांसे मिलता ? और बिना प्रमाण मिले क्यों कर कोई लिख सकताथा ? यदि कुछ भी प्रमाण मिला होता तो पुष्करजी के इतिहास में इनका वृत्तान्त लिखे बिना कभी नहीं रहते।

पुष्कर जी के इतिहास से निश्चय होता है कि जब नाहर

+ नाहर राव पड़िहार का सं० १२०६ में विद्यमान होना टाड राजस्थान के भाग १ के अध्याय ५ वें में माना है। और देवराज भाटी सं० ८९२ में जन्मे थे यह बात भी टाड राजस्थान के भाग २ अध्याय २ में मानी है। अर्थात् पुष्कर खुदवाने वाले नाहरराव पड़िहार से ३०० वर्ष पहिले देवराज भाटी हुये हैं उनके समयमें पुष्करणे ब्राह्मण विद्यमान थे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राव पड़िहारने पुष्करजी का तालाब खुदवाया था उस समय न तो १ लाख ब्राह्मण जिमानेका सङ्कल्प ही किया था और न २० हज़ार ओढों को जनेऊ पहिनाके ब्राह्मण बनाये थे। किन्तु यदि क्षण भर के लिये इस मिथ्या कपोल कल्पना को मान भी लें तो भी नाहरराव पड़िहार ने सङ्कल्प १ लाख ब्राह्मण जिमाने का किया था न कि १ लाख मनुष्य जिमाने का। फिर २०००० शूद्रों को जिमाने से क्या कभी १ लाख ब्राह्मण जिमाने का राजाका सङ्कल्प (प्रण) पूर्ण हो सकता है ? कदापि नहीं। यदि कहो कि राजाने शूद्रों को जनेऊ पहिना दी थी इस से वे ब्राह्मण हो गये थे तो यह बात भी नहीं बन सकती। क्यों कि मन्वादि धर्म* शास्त्रों में शूद्रों को जनेऊ पहिनाने की आज्ञा ही नहीं है और न जनेऊ पहिनाने से शूद्र कभी ब्राह्मण हो सकते हैं। ब्राह्मण तो वेही माने जावेंगे जो वंश परम्परा से ब्राह्मणों के कुल में जन्मे हों और उनके यज्ञोपवीतादि संस्कार भी विधिपूर्वक किये गये हों। फिर नाहरराव पड़िहार जैसे धर्मात्मा राजा एक महान् धर्म कार्य के समय शास्त्रसे विरुद्ध ऐसा अधर्म का कार्य कदापि नहीं कर सकते। यदि उन्हें पूरे १ लाख ही ब्राह्मण जिमाने थे तो जितने ब्राह्मण इकट्ठे हुये थे उतनों को तो प्रथम दिन जिमा देते और जितने घटते उतने ब्राह्मण फिर उन्हीं में से दूसरे दिन जिमाके अपना प्रण पूर्ण कर सकते थे। अतः इस प्रण को पूर्ण करने के लिये शूद्रों को ब्राह्मण बनाने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी।

---

* न शूद्रे पातकं किञ्चिन्न च संस्कारमर्हति।
नास्याधिकारोमर्धेऽस्ति न धर्मात्प्रतिषेधनम् ॥ मनु अ० १० श्लो० १२६
अर्थात् शूद्रों को यज्ञोपवीत आदि किसी संस्कार का अधिकार नहीं है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और वे पुष्कर खोदने वाले एकदम २० हज़ार ओढ भी केवल एक जनेऊके धागे के लिये क्यों ठाली ब्राह्मण बनने बैठ थे? क्यों कि नाहरराव ने उन्हें कोई जागीर तो दो ही नहीं थी कि जिसके लोभसे भी वे गीता+ की आज्ञा भंग करके दूसरी जाति का धर्म धारण करते।

ऐसे ही उन ८० हज़ार ब्राह्मणों पर भी ऐसी क्या आपत्ति आ पड़ी थी कि वे केवल एक ही दिन के भोजन के लिये २० हज़ार शूद्रों को अपने साथ भोजन कराके ब्राह्मण बनाते?।

इस देश में (१) ब्राह्मण, (२) क्षत्रिय, (३) वैश्य और (४) शूद्र-ऐसे चार वर्ण वा दर्जे परम्परा से चले आते हैं। इन में से ऊपर के दर्जे वाली जाति में से कोई भी मनुष्य अपना आचार भ्रष्ट कर दे तो वह उस जाति से अलग कर दिया जाता है और अपने आचार के अनुकूल किसी नीचे दर्जे वाली जातिमें जा मिलता है। ऐसे उदाहरण सब जातियों में मिलते हैं। किन्तु नीचे के दर्जे वाली जातिमें से कोई भी मनुष्य, चाहे जैसा श्रेष्ठ आचार धारण करे तो भी, अपने से ऊँचे दर्जे वाली किसी जाति में कदापि नहीं जा सकता। ऐसा उदाहरण केवल एक विश्वामित्र के क्षत्रिय से ब्राह्मण होने के अतिरिक्त और कोई नहीं मिलता। अर्थात् पूर्व कालमें विश्वामित्रने राजऋषि से ब्रह्म ऋषि होना चाहा, किन्तु ब्राह्मणोंने स्वीकार नहीं किया। इस से क्रोधित होके विश्वामित्रने महर्षि वसिष्ठजी के १०० पुत्र मार दिये तौ भी वसिष्ठजीने ब्रह्मऋषि कहना स्वीकार नहीं

+ स्वधर्मे निधनः श्रेयः परधर्म्मो भयावहः। गीता.

अर्थात् दूसरी श्रेष्ठ जाति का धर्म धारनेकी अपेक्षा अपनी ही नीच जाति में मरना अच्छा है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किया। अथवाः अत्यन्त उग्र तपस्या के कारण जब विश्वामित्र ब्रह्मऋषि मानने योग्य हो गये तब तो स्वयं ब्राह्मणोंने उन्हें राज-ऋषि से ब्रह्म ऋषि मान लिया, किन्तु भय से वा लोभ से नहीं माना। तो फिर ८०हज़ार ब्राह्मणों के सामने सब से नीचे दर्जे वाले अति शूद्र जाति के २० हज़ार ओड लोग क्यों कर एकदम क्षण भर में सब से ऊँचे दर्जे वाली ब्राह्मण जाति में जा सकते थे?। सच तो यह है कि इस देश के जाति, धर्म व मर्यादा को तोड़ के न तो नाहरराव पड़िहार शूद्रों को ब्राह्मण बना सकते थे और न २० हज़ार ओड ही ब्राह्मण बन सकते थे और न ८० हज़ार ब्राह्मण ही अपने सामने ऐसा धर्म विरुद्ध—अधर्म का-कार्य होने देते।

इतने पर भी यदि कोई ऐसा ही हठ करे कि नाहरराव पड़िहार ने पुष्करजी पर २० हज़ार ओड़ों को जबरन ब्राह्मणों के साथ जिमा के ब्राह्मण बना ही दिये थे तौ भी यह बात तो कदापि साबित नहीं होती कि ओड़ों से जो ब्राह्मण बनाये गये हों वे पुष्करणे ही ब्राह्मण हैं। क्यों कि:—

सृष्टि का नियम है कि जिन की उत्पत्ति जहां होती है वे वहीं अधिकता से पाये जाते हैं। जिस प्रकार कि सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्यों की उत्पत्ति हिमालय पर्वत पर होने के कारण जितनी आबादी हिमालय के आसपास के देशों (भारत वर्ष और चीन) में है उतनी अन्य देशों में नहीं है। ऐसे ही १० प्रकार के ब्राह्मणों में से पञ्च गौड़ों में तो सारस्वत तो सरस्वती नदी के पास पंजाब में, कान्यकुब्ज कन्नौज में, गौड़ गौड़ देश में, मैथिल मिथिला में और उत्कल उड़ीसामें; तथा पञ्च द्राविड़ों में कर्णाटक कर्णाटकमें, तैलङ्ग तैलङ्ग में, महाराष्ट्र महाराष्ट्र में, द्रा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विड़ द्राविड़ में और गुर्जर गुजरात में ही आज तक अधिकतासे पाये जाते हैं। ऐसे ही यदि पुष्करणे ब्राह्मणों की उत्पत्ति पुष्करजी ही पर हुई होती तो इन की आबादी भी पुष्करजी पर अवश्य होनी चाहिये थी। किन्तु पुष्करजी तो क्या पुष्करजी के आसपास भी पुष्करणे ब्राह्मणों की वस्ती बिलकुल ही नहीं है* और न पुष्करजी से समूले कहीं चले जाने ही का कोई प्रमाण मिलता है। वरन इसके विपरीत ये बहुत प्राचीन काल में गुजरात के समीप वर्ती सिन्ध देश में वसते थे और फिर वहां से कच्छ और मारवाड़ में आये और मारवाड़ से सर्वत्र फैले हैं। अब भी इन की आबादी जितनी सिन्ध, कच्छ और मारवाड़ में है उतनी और कहीं भी नहीं है। इन की बोल चाल में अब तक सिन्धी शब्द विद्यमान हैं। इतना ही नहीं किन्तु स्त्रियों के वस्त्र तथा आभूषण आदि में भी सिन्ध देश का अनुकरण चला आता है। इस के कई प्रमाण मिलते हैं, जिसे मारवाड़ की मर्दुम शुमारी सन् १८९१ ई० के तीसरे भाग के पृष्ठ १५५ व १६१ में सप्रमाण स्वीकार किया है, सो देखियेः—

"पुष्करणा वा पोकरणा ब्राह्मण—ये मारवाड़ में सिन्ध से आये हैं इनके गोत और गालियों में अब तक सिन्धी लफ्ज़ मौजूद हैं।

---

* इस समय अजमेर किशनगढ़ आदि में जो कोई थोड़े से पुष्करणे ब्राह्मण वसते भी हैं, वे भी थोड़े ही वर्ष हुये कि मारवाड़ ही से जाके वसे हैं। और पुष्करजी पर जो तीर्थ के पण्डे (पुष्कर गुरु) वसते हैं वे पुष्करणे ब्राह्मणों की जाति में से नहीं हैं और न पुष्करणों की जातिसे उन की जाति का कुछ सम्बन्ध ही है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

"पुष्करणे ब्राह्मण मारवाड़ के उत्तर और पश्चिम थल यानी निर्जल हिस्सों में ज़ियादा बसते हैं। उससे आगे बीकानेर, जैसलमेर और सिन्ध तक इनकी बसती चली गई है, बल्कि मारवाड़ में उधर ही से आये हैं। अकसर खांपों के बयानों से पाया जाता है कि वे पहिले जैसलमेर के इलाक़े में रहती थीं। वहां से फलौधी आई और फलौधी से जोधपुर वग़ैरः परगनों में जाकर बसी है। इन के पुराने गीतों से जो रसम के तौर पर व्याहों में गाये जाते हैं निर्जल मुल्क में इन के असली वतन होने का पता लगता है।"

इन सब के उपरान्त एक बात बहुत ही अधिक ध्यान देने की यह है कि पुष्करजी के आसपास चारों ओर बहुत दूर २ तक ब्राह्मणों की आबादी पञ्च द्राविड़ों की बिलकुल नहीं है किन्तु पञ्च गौड़ों ही की है। तो पुष्करजी पर जो ८० हज़ार ब्राह्मण इकट्ठे हुये होंतो वे भी तो अवश्य ही गौड़ ही होने चाहियें, इस लिये उस समय जो २० हज़ार ओड ब्राह्मण बने हों तो वे भी अपने आचार विचार, खान पान, आदि सब व्यवहारोंमें उन गौड़ ही ब्राह्मणों का अनुकरण करते क्योंकि उन ओडोंने उन गौड़ ही ब्राह्मणों से तो ब्राह्मण पन सीखा होगा। किन्तु पुष्करणे ब्राह्मणों में आचार विचार, खानपान, आदि सम्पूर्ण व्यवहारों का अनुकरण गौड़ ब्राह्मणों का कुछ भी नहीं है वरन (पञ्च द्राविड़ों में गुर्जर होने से) द्राविड़ों ही का है। हाँ बहुत काल तक निर्जल देश में रहने और वहां के राज्यकर्त्ताओं के पुरोहित, कुल गुरु और मुसाहिब आदि होने से उन के साथ २ आपत्काल में जहां तहां भटकते फिरने आदि देशकाल के कारण आचार विचार में कुछ शिथिलता तो हो गई है तोभी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आज तक इन का आचार द्राविड़ों ही के अनुकूल बना हुआ है नाकि गौड़ों के अनुकूल।

फिर एक बात यह भी विचारने योग्य है कि टाड राजस्थान में तो लिखा है कि "ये पुष्कर खोदने से देवता की कृपासे ब्राह्मण हो गये" किन्तु मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़ में लिखा है कि "२० हज़ार ब्राह्मणों के अभाव में इनको राजाने ब्राह्मण बना दिये"। अतः इन की उत्पत्ति का कारण इस प्रकार परस्पर विरुद्ध भिन्न २ लिखा होने—अर्थात् इस कल्पित कहानी का मूल कारण ही एक न होने—से फिर इस के मिथ्या होने में सन्देह ही क्या है?

अतः पुष्करणे ब्राह्मण न तो बेलदारों (ओडों) से ब्राह्मण हुये हैं और न पुष्करणों के यहाँ कभी खुदाले की पूजा होती थी, वरन जिस प्रकार से अन्य ब्राह्मणों की उत्पत्ति हुई है उसी प्रकार पुष्करणे ब्राह्मणों की भी हुई है।

इस के अतिरिक्त इन का 'पुष्करणा' नाम भी बहुत प्राचीन काल से चला आता है जिस के कई प्रमाण मिलते हैं। जैसेः—

महर्षि सौनक कृत "चरण व्यूह" नामक ग्रन्थ में चारों ही वेदों की शाखा आदि का वर्णन है। वहां यजुर्वेद के ८६ भेदों का वर्णन करते हुये प्राचीन भाष्यकारने 'गालव' के २४ भेदों में से २० वाँ भेद 'पुष्करणीया' माना है।

इसी प्रकार बहुत प्राचीन काल में एक पुष्करणे ब्राह्मणने व्याकरण एक की पुस्तक बनाई थी जिसका प्रमाण भट्टोजि दीक्षित कृत सिद्धान्त कौमुदी के हल् सन्धि विषय के एक वार्त्तिक में मिलता है। "चयो द्वितीयाः शरि 'पौष्करसादे' रिति वाच्यम्"।

इन के अतिरिक्त प्राचीन इतिहास लेखक 'पादरी एम. ए.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शैरिङ्ग साहिब, एम. ए., एल एल. बी.' ने भी अपने बनाये हुये इतिहास की पहिली जिल्द में जहां सम्पूर्ण ब्राह्मणों का वर्णन लिखा है वहाँ ९९ वें पृष्ठ में पुष्करणे ब्राह्मणों की गणना पञ्च द्राविड़ों में से गुर्जर ब्राह्मणों में की है।

फिर टाड साहिब का कुछ भी निश्चय किये विना ही ऐसी विना प्रमाण को धोखे की बात अपने राज स्थानमें लिख कर लोगों को भ्रम में डालना. कितनी भूल है ? परन्तु इस भूल का कारण यह प्रतीत होता है कि उस तीर्थ का नाम 'पुष्कर' और इस जाति का नाम ' पुष्करणा ' देख के किसी धूर्त्त ने ऐसी कहानी घड़के धोखा दे दिया होगा, और टाट साहिबने भी विदेशी होने के कारण ऐसा धोखा खालिया होगा। किन्तु इस प्रकार केवल नाम की कुछ सदृशता मात्र ही से ऐसा अनुमान कर लेना क्या कम भूल है ? इस जाति का एक नाम 'पोकरणा' भी है और मारवाड़ में, जोधपुर से पश्चिमकी ओर ४० कोश की दूरी पर, 'पोकरण' नामका एक गाँव भी है। तो फिर क्या इन की उत्पत्ति उस गाँव से भी माननी पड़ेगी ? नहीं नहीं कदापि नहीं। इस के अतिरिक्त इन की उत्पत्ति पुष्करजी पर हुई होती तो इनका नाम 'पुष्करणे' वा 'पोकरणे' ब्राह्मण नहीं होता किन्तु 'पुष्करिये' वा 'पोखरिये' ब्राह्मण होता। फिर पुष्करणे ब्राह्मणों के ये ही दो नाम नहीं हैं किन्तु 'सैन्धव' (वा 'सिन्धी') तथा 'पुष्टिकरा' आदि नाम भी हैं। इन नामों का कारण यह है कि पूर्व काल में ये सिन्ध देश में वस्ते थे जिस से तो सिन्धी ब्राह्मण कहलाते थे। फिर श्रीमाल क्षेत्र में लक्ष्मीजी के यज्ञ में ब्राह्मणों की पुष्टि करने से लक्ष्मीजी ने प्रसन्न हो के ' पुष्टिकरा ' होने का वर दिया तब से ' पुष्टिकरा ' तथा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'पुष्करणा' कहलाये (और पुष्करणों का अपभ्रंश 'पोकरणा' हुआ है), जिस का वर्णन स्कन्द पुराणोक्त श्रीमाल क्षेत्र माहात्म्य आदि में हैं। वह सम्पूर्ण लेख तो 'पुष्करणोत्पत्ति' नामक पुस्तक में लिखा जावेगा परन्तु उस में से कुछ प्रमाण इस पुस्तक के अन्त में भी लिखेंगे जिस से कि सब लोगों को भले प्रकार से ज्ञात हो जावे कि पुष्करणे ब्राह्मण पञ्च द्राविड़ों में से गुर्जर ब्राह्मणों का एक भेद है। किन्तु प्रथम इस पुस्तक के प्रारम्भ में लौकिक प्राचीन इतिहासों के अनेक प्रमाण लिखता हूं जिस से सर्व साधारण को भी भले प्रकार से ज्ञात हो जावे कि पुष्करणे ब्राह्मणों की जाति पुष्करजी का तालाब खुदने से सैकड़ों ही वर्ष पहिले ही से मारवाड़ में विद्यमान है, और मारवाड़ में आने से पहिले ये सिन्ध में वसती थी। यह बात केवल रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़ ही स्वीकार करती है, सो नहीं किन्तु यह बात स्वयं टाड राजस्थान से भी स्पष्ट सिद्ध होती है। फिर टाड राजस्थान की 'अजब कहानी' व मारवाड़ की मर्दुम शुमारी की 'लोक अफ़वाह' लिखने वालोंने जान बूझकर कितना भारी धोखा खा लिया है? सो वह धोखा लोगों पर प्रगट करने के लिये प्रथम हमें इस बात का निर्णय करना है कि पुष्करजी का तालाब किसने खुदवाया? और कब खुदवाया? तथा पुष्करजी का तालाब खुदने से पहिले पुष्करणे ब्राह्मण थे वा नहीं? और थे तो कब थे? और कहां थे? यह निर्णय हो जाने से 'टाड राजस्थान की भूल' आपसे आपही स्पष्ट विदित हो जावेगी और टाड राजस्थान की भूल सिद्ध हो जाने से फिर राजस्थान से धोखा खाने वालों की तो भूल स्वयं ही सिद्ध हो चुकेगी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्कर उत्पत्ति का इतिहास।

पुराणों का मत—

पुष्करजी की उत्पत्ति प्रथम ब्रह्माजी से हुई है जिसका वर्णन-पुराणों में विस्तार से लिखा है उन में से पद्म पुराण के सृष्टि खण्ड के अध्याय १५ वें से जो पुष्कर माहात्म्य है, तदनुसार पुष्कर माहात्म्य सारोद्धार बना है, जिसमेंसे कुछ श्लोक यहां लिखता हूं।

"एवं विभु चिरं ध्यात्वा हस्तात् कमलमुत्तमम्।
प्राक्षिपेद्धरणीतीरे स्वस्त्यर्पिति समालयात्॥
ततस्तत्पतितं यत्र पुरा तस्माद्वितीयकम्।
स्थाने गतं तृतीयं च वेगे तात्पात्ति वारिजम्॥
तेषु तोयं सुनिःक्रान्तं सर्वेष्वपि सु निर्मलम्।
एतान्य पुष्करं पृष्ठं यावन्मात्रं धरातलम्।
पुष्करं नाम विख्यातं त्रैलोक्येऽपि भविष्यति॥

"एक समय ब्रह्माजी की इच्छा यज्ञ करने की हुई। तब उन्हों ने 'पृथ्वी पर कौनसी भूमि यज्ञ करने योग्य है, इस की परीक्षा करने के लिये अपने हाथ से एक कमल का पुष्प ऊपर से पृथ्वी पर डाला। वह पुष्प प्रथम जिस भूमि पर गिराथा वहां से उछल के दूसरे स्थान पर गिरा और फिर वहां से भी उछल के तीसरे स्थान पर गिरा। ऐसे जिन ३ स्थानों पर वह पुष्प गिरा था वहां स्वयं ही निर्मल जल निकल आया, जिससे वे ३ कुण्ड हो गये। फिर ब्रह्माजीने वहां पर यज्ञ किया। भूमि में से जल कमल का पुष्प गिरने से निकला था। और कमल का दूसरा नाम पुष्कर है, इसी लिये यह स्थान 'पुष्कर' (वा त्रि पुष्कर) नाम से प्रसिद्ध तीर्थ हो गया।" इत्यादि।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टाड राजस्थान का मत—

Before creation began, Brahmá assembled all the celestials on this very spot, and performed the Yuga; aroundt he hallowed spot, walls were raiesd, and sentinels placed to guard it from the instrusion of the evil spirits. In testimony of the fact, the natives point out the four isolated mountains, placed towards the the cardinal points, beyond the lake, on which, they assert, rested the Kanats, or cloth-walls of inclosure. That to the south is called Rutnagir, or 'the hills of gems,' on the summit of which is the shrine of Sàvittri. That to the north is Nilagir, or 'the blue mountain'. East, and guarding the valley, is the Kutchacter Gir; and to the West Sonachooru, or 'the golden'. Nanda, the bullsteed of Mahàdeva, was placed at the mouth of the valley, to keep away the spirits of the desert; while Kaniya himself performed this office to the north. The sacred fire was kindled: but Sàvittri, the wife of Brahmà, was nowhere to be found, and as without a female the rites could, not proceed, a young Goojari took the place of Sávittri; who, on her return, was so enraged at the indignity, that she retired to the mountain of gems, where she disappeared. On this spot a fountain gushed up, still called by her name; close to which is her shrine, not the least attractive in the precincts of Poshkur. During these rites, Mahàdeva, or, as he is called, BholàNáth, represented always in a state of stupefaction from the use of intoxicating herbs, omitted to put out the sacred fire, which spread, and was

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

likely to involve the world in combustion; when Brahmà extinguished it with the sand, and hence the teebàs of the Valley. *Such is the origin of the sanctity of Poshkur.* In after ages, one of the sovereigns of Mundore, in the eagerness of the chase, was led to the spot, and washing his hands in the fountain, was cured of some disorder. That he might know the place again, he tore his turban into shreds, and suspended the fragments to the trees, to serve him as guides to the spot?–there he made the excavation. (Tod Vol. I, personal narrative. Chap. XXIX.)

Excavated by the last of the Purihàras of Mundore. (Tod Vol. I, personal narrative, Chap. XXIX. Dec. 1, in the Lake of Poshkur.)

Nàhur Ráo, the last of the Purihàras. (Tod's personal narrative Vol. I, Chap, XXVII.)

"सृष्टि रचने के पहिले ब्रह्माने इसी स्थान पर सर्व देवताओं को एकत्र किये, और यज्ञ किया; इस गढ़ेके स्थान (पुष्कर) के चारों ओर दीवारें खड़ी की गई थीं, और उस (यज्ञ) को राक्षसों के अनधिकार प्रवेश होने (मदाख़लत बेजा) से बचाने के लिये रक्षक रक्खे गये। इस बात की साक्षी में देशी लोग इस झील से बाहर मुख्य स्थान में रखे हुये, भिन्न २ चार पर्वतों को बताते हैं जिस पर वे लोग ज़ोर देकर कहते हैं कि कनातें अर्थात् कपड़े की घेरे की दीवारें लगाई गई थीं। दक्षिण की ओर का पर्वत रत्नागिरि अर्थात् रत्नों की पहाड़ी कहलाती है, जिस की चोटी पर सावित्री का मन्दिर है, उत्तर की ओर को नीलगिरि अर्थात् नीला पहाड़, पूर्व की ओर, और घाटी की रक्षा करने वाला क-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टचकटर गिरि, और पश्चिम की ओर सोनाचूर अर्थात् सोनेका पहाड़ है। जङ्गल के राक्षसों को दूर रखने के लिये घाटी के द्वार पर नन्द (बैल) रूपी महादेव का ऐश्वर्य युक्त घोड़ा (वाहन) रखा गया, और उत्तर की ओर का यह (पहरे का) काम स्वयं कन्हैयाने किया। पवित्र अग्नि प्रज्वलित की गई; परन्तु (उस समय) ब्रह्मा की स्त्री सावित्री का पता कहीं नहीं लगा, और चूंकि एक स्त्री के विना कर्म का प्रारम्भ हो नहीं सकता था, (इसलिये) एक युवा गूजरी (ब्रह्माके पास) सावित्री के स्थान पर बैठाई गई, जो (सावित्री) लौटने पर इस अपमान से इतनी कोपायमान हुई कि वह रत्नके पर्वत पर जाकर लुप्त हो गई। इस स्थानपर एक कुण्ड खुद निकला जो अभी तक उस (सावित्री) के नामसे प्रसिद्ध है; जिस के समीप ही उसका मन्दिर है जोकि पुष्कर की सीमा के अन्दर विशेष ध्यान देने योग्य नहीं है। इस यज्ञ के अन्दर महादेव, अर्थात् जैसे कि वे भोलानाथ कहलाते हैं, सदा भङ्ग आदि के नशोंके प्रयोगसे एक मूर्खता की दशामें आते थे, (उस यज्ञ की) पवित्र अग्नि को बुझाना भूल गये, जो कि (सर्वत्र) फैल गई, और सारे संसार को जला देने ही को थी, जब कि ब्रह्माने उसको बालू रेतसे बुझाई, और इस से घाटी के टीबे हुये। यह पुष्कर की पवित्रता की प्राचीन उत्पत्ति है॥ बहुत समय के पश्चात् मण्डोर के एक पड़िहार राजा का अपनी शिकार का पीछा करने की आकाङ्क्षा में उस स्थान को जाना हो गया, और अपने हाथ उस कुण्ड में धोने से वे किसी रोग (कुष्ट रोग) से आरोग्य हो गये। और इस विचार से कि उस स्थान को पीछा जान जाऊँ उन्होंने अपनी पगड़ी फाड़ के चिथड़े कर डाले और वे टुकड़े (पीछे आते समय मार्ग में के) झाड़ों पर बाँधते

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आये कि उस स्थान को (पीछा) ढूँढने में पथ दर्शक का काम देवें । फिर उन्होंने उस (गड्ढे) को खुदवाया ॥" "इस (पुष्कर) को मण्डोर के अन्तिम पड़िहार (राजा) ने खुदवाया था ॥" (टाड राजस्थान, भाग १, अध्याय २९ ॥ "और मण्डोर के ये अन्तिम पड़िहार (राजा) नाहरराव थे ॥" (टाड राजस्थान, भाग १, अध्याय २७)

रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़ का मत—

"पड़िहारों का राज्य पहिले मण्डोर में था । नाहरराव पड़िहार मारवाड़ में बहुत मशहूर हुआ है उसने पुष्करजी का ताल खुदाया था और सूर खाना छोड़ा था सो अब तक पड़िहार सूर नहीं खाते हैं ।" (देखो रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मार वाड़ ई. सन् १८९१ के भाग ३ का पृष्ठ १५ वां) ।

अजमेर की तवारीख़ का मत—

"ब्रह्माजी के यज्ञ के पीछे समय के हेर फेर से यह स्थान किसी समय उजाड़ हो गया था । अनुमान ४००० वर्ष हुये कि इस मुल्क में जैन धर्म बहुत फैल गया था । किसी राजा पद्मसेन नामी ने यहां एक बड़ा भारी नगर बसा के अपने नाम पर पद्मावती नगरी उस का नाम रखा । इस नगरी की बस्ती एक लाख घरों की थी । कहते हैं कि इस नगर में प्रायः धनवान् मनुष्य बस्ते थे, और जब कोई मनुष्य यहां पर बसने को आता था तो प्रत्येक घर से एक २ रुपये के हिसाब से एकट्ठे कर के एक लाख रुपये उस को दे के बसा लेते थे । राजा जैनी था और तमाम प्रजा भी जैनी थी । इस नगर को उस समय में जैनी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोग कोकन* तीर्थके नामसे पुकारते थे। दैवात् एक महात्मा इस नगर में आये और १२ वर्ष तक तपस्या करते रहे। एक दिन चेले के मस्तक में घाव देख के बहुत दुःखित हुये। यद्यपि चेलेने इस के भेद को प्रगट करना उचित तो नहीं समझा, परन्तु नम्रता पूर्वक प्रार्थना की कि 'यहां की सारी प्रजा जैनी है और राजा भी वही धर्म रखता है, अन्य मत वालों को दान नहीं देते। इस कारण मैंने अति कठिनता से अपना निर्वाह किया और लकड़ी बेचने से सिर पर घाव हो गया'। इस से वे महात्मा जैनियों पर बहुत क्रोधित हुये यहां तक कि उनकी दुराशीष से व परमात्माकी इच्छासे पवनका वेग रेत संयुक्त ऐसा आया कि यह बड़ा नगर पल भरमें नष्ट हो गया। कहते हैं नगर नष्ट हो जाने के पीछे एक बहुत बड़े समय तक यह स्थान बिलकुल उजड़ रहा और जंगल की तरह हो गया।

राठोड़ों से पहिले पड़िहार राजपूत मरुस्थलके राजा थे। उनमेंसे नाहरराव, राजा मण्डोर, को शिकार खेलने के समय एक श्वेत शूकर दृष्टि गोचर हुआ। राजाने लश्कर से जुदा हो के उसका यहां तक पीछा किया कि वह पुष्कर के जङ्गल में आ निकला। शूकर तो दृष्टिसे छिप गया और राजा सूरजकी गरमी और दौड़ भाग के परिश्रमसे थकके और प्यासा हो के घोड़ेसे उत्तर पड़ा, बहुत घबराया और पानी तलाश करने लगा। अचानक जङ्गलमें एक स्थानपर थोड़ासा पानी दृष्टि में आया। राजाने ऐसे समयमें इस पानीको अपना अच्छा भाग्य समझके

* कमल का नाम 'कोकनद' भी होने से पुराणों में पुष्करका दूसरा नाम 'कोकामुख' तीर्थ भी लिखा है। इसी नाम के आधार पर जैनियोंने इसका नाम 'कोकन' तीर्थ रख लिया था।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुरन्त हाथ मुंह धोके उस मेंसे थोड़ासा पिया। और फिर जो अपने हाथों पर दृष्टि डाली तो जो दाग़ कोढ़के अपने हाथोंपर थे वे बिलकुल जाते रहे। राजाको बड़ा आनन्द हुआ। और यह फ़ल उस पवित्र जलका सोचके वहां ठहर गया और उस पवित्र स्थानके समाचारों का तलाश करने लगा। आख़िर को शास्त्रों से सारे समाचार जानके और पूर्ण रीति से पता लगाके राजाने बनको कटवाया और उस पवित्र स्थान को खोदकर एक बड़ा भारी तालाब बनवा दिया। राजाने हर एक स्थान अपनी २ जगह ठहरा कर बनवा दिये और बारह धर्मशालायें पक्के घाट सहित पुष्कर सरोवरके तीनों तर्फ़ तयार कराई, एक तर्फ़ पानी आनेके लिये ख़ाली छोड़ दो। ये स्थान अब बिलकुल नष्ट हो गये हैं, परन्तु तब भी अब तक दो तीन जगह कुछ २ फूटे हुये मकानों के चिह्न मौजूद हैं। उस ही राजा नाहरराव पड़िहारका स्थान है।" (जे. डी. लाटूश साहिब बहादुर की आज्ञा से सं. १९१३ में लाहोर वाले एक्स्ट्रा असिस्टेण्ट कमिश्नर पं० महाराज कृष्ण की बनाई हुई अजमेर की तवारीख़ का पृष्ठ १५ वाँ। इस की नक़ल उर्दूसे हिन्दीमें सन् १८९२ ई० में मौलवी मुहम्मद मुराद अलीके चिराग़ राजस्थानमें छपी उसके पृष्ठ १, २ और ३)

इन तवारीख़ों से यह बात तो निश्चयही है कि पुष्करजी का तालाब प्रारम्भमें तो मनुष्योंका खोदा हुआ ही नहीं है किन्तु ब्रह्माजीने कमलका पुष्प डालके स्वयं उत्पन्न किया था इसीलिये इसे 'देव खात' कहते हैं यथा 'पुष्कराद्या देवखाताः' परन्तु वह तीर्थ काल पाके अदृश्य हो गया था। उस को पीछा प्रकट कराने के लिये श्री वाराह भगवान् ने श्वेत शूकर का रूप धारण कर के मण्डोर के राजा नाहरराव पड़िहार को पुष्कर के जङ्गल में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाके उस तीर्थ के जल का चमत्कार दिखलाके, आप अन्तर्धान हो गये । तब नाहरराव पड़िहारने पुष्करजी के तालाबका जीर्णोधार कराके वहांपर श्री वाराह भगवान् का मन्दिर बनवा दिया, तथा शूकर मारने की तलाक़ (शपथ) कर दी तब से पड़िहार राजपूत मात्र शूकर नहीं मारते हैं। यह बात पड़िहारों के इतिहास में प्रसिद्ध है ।

नाहरराव पड़िहार का समय ।

पुष्करजी का तालाब खुदवानेवाले मण्डोर के राजा नाहरराव पड़िहार विक्रम् संवत् १२०० के लगभग हुये थे, जिस के कई प्रमाण मिलते हैं; उनमें से कुछ प्रमाण यहां लिखता हूँ।

टाड राजस्थान का मत—

(1). "In Putun is Bhola Bheem the Chalook, of iron frame. On the mountain Aboo, Jeit Pramàra, in battle immoveable as the star of the north. In Mewàr is Samar Singh, who takes tribute from the mighty, a wave of iron in the path of Delhi's foe. In the midst of all, strong in his own strength, Mundore's prince the Arrogant Náhur Ráo, the might of Mároo, fearing none. In Delhi the chief of all Anunga. (Tod Vol. I., annals of Mewàr, Chap. V.)

(2) "In the battle between the Chohans of Ajmer and the Parihàrs of Mundore, a body of four thousand Mair bowmen served Nàhur Rào, and defended the pass of the Arávali against Prithwiráj" (Tod Vol. I. personal narrative, chap. XXVI.)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(3) " .....; and the brightest page of their history is the record of an abortive attempt of Nàhur Rào to maintain his independence against Prithwiràj. Though a failure, it has immortalized his name and given to the scene of action, one of the passes of the Arávali a merited celebrity." (Tod Vol. I. Rajpoot Tribes, Chap. VII.)

Samarsi was born in S. 1206 (Tod. Vol. I. Annals of Mewár, Chap. V.) and reign of Samarsi S. 1249 (Tod. Vol. I. Annals of Mewar, Chap. IV.)

टाड राजस्थान के भाग १ के अध्याय ४, ५, ७ और २६ वें के उपरोक्त लेखों के अनुसार पाटन (गुजरात) में तो भोला भीम, आबू पर्वत पर जैत पँवार, मेवाड़ में समरासिंह, दिल्ली में अनङ्गपाल और अजमेर में पृथ्वीराज चौहान,—मण्डोर के राजा नाहरराव पड़िहार के समकालिक थे। और इन में समरसिंह सं० १२०६ में जन्मे थे और १२४९ तक राज्य कियाथा, अतः ये राजा सं० १२०० और १२५० के बीच में हुये थे; इसलिये यही समय नाहरराव पड़िहार का है।

—:*:—

मारवाड़ के भूगोल का मत—

"सं० १२०० के क़रीब मण्डोर को (जो साँवत पँवार के हिस्से में आया था उस की औलाद से) पड़िहारोंने ले लिया। पड़िहारों में नाहरराव पड़िहार बड़ा राजा हुआ। उसने पुष्करजीकी रेत निकलवा कर वहां वाराहजी का मन्दिर बनवाया और एक बड़ा बन्धा बँधाया। नाडसर नाम एक बड़ा तालाब

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खुदवाया जो अब अगरचे रेत और मिट्टी से भर गया है मगर फिर भी उसकी पाल कोशों तक नज़र आती है, जिस में बड़े२ भारी पत्थर लगे हैं।"

"नाहरराव के भाई बालराव का बनाया बाल समन्द का तालाब अब तक जोधपुर और मण्डोर के रास्ते पर मौजूद है।" (देखो 'मारवाड़ की जागराफ़ी (भूगोल)' सन् १८८३–८४ का ९० वाँ पृष्ठ)

आशिया जातिके चारणों के इतिहास का मत–

पड़िहार राजपूतों के पोलपाट बारहट पहिले आशिया जाति के चारण थे। किन्तु नाहरराव पड़िहार के बेटे धूम कुंवर को उसके पोलपाट बारहट वीरभान आशियाने चौपड़ (चौसर) के खेल में तकरार हो जाने से मार डाला। इस पर क्रोधित होके पड़िहारोंने आशिया जाति के चारणों को निकाल के सिडायचे जातिके चारणों को अपना पोलपाट बारहट बनाया। उस समय का यह एक दोहा है कि:–

धूम कुँवर नै मारियो चौपड़ पासै चोळ।
तिण दिन छोडो आशियाँ पड़िहाराँ री पोळ॥

तब वीर भान राठौड़ों के यहां जा रहा। और मारवाड़ में राठौड़ कन्नौज से सं० ११९६ में आये हैं; अतः यही समय नाहरराव पड़िहार का प्रतीत होता है।

पृथ्वीराज रासे का मत–

(१) मण्डोर के राजा नाहरराव पड़िहारने अपनी कन्या

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जम्भावती (कञ्चनमाला) की सगाई पृथ्वीराज चौहानसे की थी। किन्तु पीछे से नाहरराव की इच्छा बदल जाने से विवाह करने की यह कह के नांहीं कर दी कि अजमेर के चौहानों का कुल हमारे योग्य नहीं है। इसी पर पृथ्वीराज ने आनन्द* नामक संवत् ११२९ (विक्रम संवत् ११२५) अष्टमी रविवारको नाहरराव पर चढ़ाई की। ५ दिन तक घोर युद्ध होनेके पश्चात् नाहरराव हारके भाग गया, और मंत्री आदिकों की सम्मतिसे पृथ्वीराजको अपनी कन्या व्याह देने का लग्न भेजा। पृथ्वीराज ने भी प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करके पञ्चमी रविवार को नाहरराव की कन्या से विवाह किया।

(२) आनन्द सं० ११४४ (विक्रम सं० १२४०) में पृथ्वीराज शाहबुद्दीन के सामने लड़ने को गया था। उस समय अवसर देखके पाटन (गुजरात) के चालुक्य (सोलंखी) राजा भोलाभीमने भी पृथ्वीराज पर चढ़ाई की। तो पृथ्वीराज की ओर से सेनापति 'कैमास' ने मण्डोर के राजा नाहरराव पड़िहार सहित मारवाड़ के गाँव धणले, परगने सोजत, में उस का सामना किया था। वहां पर राजा नाहरराव पड़िहार मारा गया। तब पृथ्वीराजने उसके पुत्र पड़िहार मोवणसी और अल्ह को मण्डोर का राज्य दिया। ये दोनों भाई पृथ्वीराज के १०० सामन्तों में से थे। इनमें अल्ह तो पृथ्वीराज के लिये कन्नौज की लड़ाई में आनन्द सं० ११५४ (विक्रम सं० १२५०) में मारा गया और मोवणसी आनन्द सं० ११५५ (विक्रम सं० १२५१)

* पृथ्वीराज रासे में चन्द भाटने जो संवत् लिखा है वह 'आनन्द' नामक संवत् है। उस में ९६ वर्ष मिलानेसे 'विक्रम' संवत् होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में, पृथ्वीराजको शाहबुद्दीनने पकड़ा तब, मारा गया।

महा कवि चन्द भाट कृत पृथ्वीराज रासे से भी यही समय नाहरराव पड़िहार का विदित होता है।

हमारे यहाँ के प्राचीन पुस्तकालय का मत—

नाहरराव पड़िहारने मण्डोर नगर को आनन्द सं० ११०० (विक्रम सं० ११९६) में फिर से बसाया था, और आनन्द सं० ११११ (विक्रम सं० १२०७) में उस का कोट बनवाया था।

नाहरराव पड़िहार का दामाद (जमाई) पृथ्वीराज चौहान था। उसने मारवाड़में नागोर नगरका कोट आनन्द सं० १११२ (विक्रम सं० १२०८) में बनवाया था।

नाहरराव पड़िहार की 'पिङ्गला' नामकी बहन चित्तौड़के राणा तेजसी को व्याही थी। राणा तेजसीके उत्तराधिकारी राणा समरसी हुये। वे विक्रम सं० १२०६ में जन्मे थे।

उपरोक्त आशय का लेख हमारे यहां की एक बहुत प्राचीन हस्त लिखित इतिहास की पुस्तकमें, जो सं० १७९९ की लिखी हुई है, लिखा है। इस से भी ज्ञात होता है कि मण्डोर के राजा नाहरराव पड़िहार सं० १२०० के लगभग ही हुये थे।

पुष्कर खुदने का समय।

उपरोक्त मण्डोर के राजा नाहरराव पड़िहारने पुष्करजी का तालाब विक्रम सं० १२१२ में खुदवाया था; जिस के प्रमाण का एक दोहा, जो सर्वत्र ही प्रसिद्ध है, यहां लिखता हूं:—

संवत् बारै बारोत्तरै पुष्कर बाँध्यो धाम।
पेमपालरा नाहराव थैं कियो निश्चल नाम॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्करणे ब्राह्मणों की प्राचीनता.

ऊपर लिखे प्रमाणों से स्पष्ट ही विदित हो गया है कि मण्डोर के राजा नाहरराव पड़िहार सं० १२०० के लगभग हुये थे और उन्हींने संवत् १२१२ में पुष्करजीका तालाब खुदवाया अर्थात् जीर्णोद्धार कराया था। परन्तु पुष्करणे ब्राह्मण तो नाहरराव पड़िहार से सैकड़ों ही वर्ष पहिले ही से विद्यमान हैं। इस के कई एक प्रमाण मिलते हैं, जिनमें से थोड़े से यहां लिखता हूं।

विक्रम संवत् १२१२ में जब कि मण्डोर के राजा नाहरराव पड़िहारने पुष्करजी का तालाब खुदवाया था उसी वर्ष में श्रावण सुदि १२ को लुद्रवा नगर के भाटी राजा-जैसलजीने अपने नाम पर 'जैसलमेर' नगर बसाके अपनी राजधानी वहाँ पर नियत की, तब लुद्रवा नगरमें निवास करनेवाले पुष्करणे ब्राह्मणों को भी अपने साथ लाके जैसलमेर में बसा दिये। और उन पुष्करणों में से जो राज्यके पुरोहित, गुरु, मुत्सद्दी, क़िलेदार आदि थे उनको तो क़िलेके भीतर राज्यके महलोंके समीप ही स्थान देकर बसाये थे जिनको सन्तान आज तक जैसलमेर के क़िलेमें निवास करती है अर्थात् पुरोहित, व्यास, आचारज, पणिया, विशा आदि जातिके पुष्करणे ब्राह्मणों के ७०० घर इस समय जैसलमेर के क़िले में विद्यमान हैं।

संवत् ११२१ में लुद्रवे नगर में पुष्करणे ब्राह्मणा चोवटिया जोशी मोतीरामजी का विवाह हुआ था। विवाह के पीछे जब पहिली ही पहिली होली आई तब वे अपनी स्त्री सहित 'होली' की पूजा करने के लिये गये। वहां दैव योग से पैर फिसल के होली में जा गिरे, और जल मरे। तब उन की स्त्री भी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उनके साथ सती हो गई, और अपने कुल में होली की झाल देखने तथा उसका उत्सव करनेवालों को श्राप दे गई। उस दिन से चोवटिये जोशी मात्र न तो जलती हुई होली की प्रथम झाल देखते हैं और न होली का उत्सव करते हैं। और जो कदाचित् भूल से भी ऐसा हो जावे तो वह वर्ष उनके लिये आनन्द कारी नहीं होता है। इस बातको चोवटिये जोशी सदासे मानते चले आये हैं।

इन्ही मोतीरामजी से कई पीढ़ी पहिले चोवटिया 'प्रवरजी' हुये थे, जो ज्योतिष विद्या में साक्षात् बृहस्पति तुल्य थे। इन की परीक्षा करने के लिये शुक्र और बृहस्पतिने मनुष्य का स्वरूप धारण कर इनके पास आके प्रश्न किया कि 'इस समय शुक्र और बृहस्पति कहां है ?' तो 'परवरजी' ने प्रथम स्वर्ग की और फिर पाताळ की गणित की तो वहां पर इनका होना सिद्ध नहीं हुआ। तो फिर मृत्यु लोककी गणित करते करते अन्त में कह दिया कि 'आप ही दोनों हैं'। इससे प्रसन्न हो कर ज्योतिष विद्या का वरदान व ज्योतिषी की पदवी दी। तबसे चोवटिये मात्र 'चोवटिये जोशी' कहलाते हैं। यह बात चोवटिये जोशियों के इतिहास में प्रसिद्ध है।

संवत् १०२५ में लुद्रवे नगर में पुष्करणे ब्राह्मण लुद्र (कल्ला) पद्मसीजीने पंचपर्वी नामक लघु विष्णु यज्ञ किया था। तब अपनी जाति भर के समस्त लोगों को आसपास के गाँवों से बुलाके एकत्र करके ५ दिन तक भोजन कराके प्रत्येक ब्राह्मण को एक एक रुपया दक्षिणा दिया। तथा पुष्करणे ब्राह्मणों के भाट दूदाराम को कड़े, कण्ठी, मोती आदि का शिरोपाव और रु०२००) नक़द दिये थे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इन्हीं पद्मसीजी से कई पीढ़ी पहिले लुद्र आयस्थानजी बड़े प्रतापी हुये थे। उन्होंने सिन्ध देश में अपने नामपर 'आशनी-कोट' नामक एक गाँव बसाया था। यह बात कछों के इतिहास से प्रकट ही है।

सं ९९६ में वैशाख सुदि ३ को लुद्रवा नगर में पुष्करणे ब्राह्मण टङ्कशाली व्यास लल्लूजी ने 'लक्ष (लख) भोज' नाम एक बड़ा भारी महा विष्णु यज्ञ किया था। उस समय पुष्करणे ब्राह्मणों की समस्त जाति को दूर २ से बुलाके कई दिनों तक इच्छा भोजन कराया। फिर विदा के समय प्रत्येक को थाली, लोटा, कटोरा आदि पात्र तथा धोती, दुपट्टा, पगड़ी आदि वस्त्र और एक एक सुवर्ण मुद्रा (सोने की मोहर) दक्षिणा दे के बड़ा सत्कार किया; उस समय पुष्करणे ब्राह्मणों के भाट तेजराज को लाख पसाव में रोकड़ रु. ५०००) तथा कड़े, कण्ठी, मोती आदि शिरोपाव दिये थे। इस समय की अपेक्षा उस समय धान्य घृतादि सम्पूर्ण वस्तुएं बहुत ही सस्ते भाव से मिलती थीं, तब भी इस कार्य्य में कई लाख रुपये लग गये थे। ऐसा महा यज्ञ पुष्करणे ब्राह्मणों में आजतक फिर नहीं हुआ है। (देखो जैसलमेर की तवारीख़ के पृष्ठ २३२ वें की पंक्ति १७ वीं।)

'लल्लू लक्ष समापिया हीवर दोना दान।
कवियां धर काछी किया डंकर भरता डान॥'

सं० ९९२ में वैशाख सुदि ९ के दिन उपरोक्त पुष्करणे ब्राह्मण टङ्कशाली लल्लूजीको लुद्रवे नगर के भाटी राजा मुन्धरावलजीने अपना गुरु बनाके व्यास पदवी दी थी। तभीसे लल्लू जीके वंशवाले पुष्करणों की जाति में अबतक व्यास कहलाते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इन्हीं लल्लूजीसे ८ पीढ़ी पहिले कमलापतिजी हुये थे। वे स्वर्णसिद्धि (रसायन वा कीमियाँ करना) जानते थे। यह विद्या वंश परम्परासे लल्लूजीको भी प्राप्त हुई थी। इसी विद्या के प्रतापसे उन्होंने अनेक परोपकारी कार्य्यों में असङ्ख्य धन व्यय करके बड़ी कीर्त्ति प्राप्त की थी।

सं० ९२६ में भाटी राजपूतों के पुरोहित (कुल गुरु) देवायतजी के पुत्र दीनजीने लुद्रवा नगर में 'दीदासर' नाम एक तालाब बनवाया था, जो आजतक उनके नाम से प्रसिद्ध है।

सं० ९०९ में भाटी देवराजने अपनी राजधानी देरावल में बनाई। फिर सं० ९१५ में लुद्रवा नगर के पँवार राजा जसभानको मार के अपनी राजधानी लुद्रवे में नियत की। उस समय लुद्र (पँवार) राजपूतों के वंश परम्परा के कई पीढ़ियों के पुरोहित (कुलगुरु) विमलाजीको, जो आचारज (आचार्य) जाति के पुष्करणे ब्राह्मण थे, क़िलेदारी व गङ्गाजल की नौकरी दी। और उन की सन्तान को परदेश बैठों को भी कन्दोरे बन्ध दक्षिणा देनेका ताम्र पत्र कर दिया। अतः आजतक ब्रह्मभोजके समय उनकी सन्तान को परदेश बैठों को भी दक्षिणा दी जाती है। (देखो जैसलमेर की तवारीख़ का पृष्ठ २३ वाँ)।

सं० ८९८ में बारह जाति के राजपूतों के कई पीढ़ियों के कुल गुरु पुष्करणे ब्राह्मण पुरोहित देवायतजीने अपने शरण में आये हुये, जैसलमेर के वर्त्तमान महाराजा के पूर्वज, भाटी 'देवराज' को अपना पुत्र कह के अपने रत्नू नाम के पुत्र के साथ भोजन कराके शत्रुओं से प्राण बचाये थे। जिस का वृत्तान्त स्वयं टाड राजस्थान के भाग २ में जैसलमेर के इतिहास के अध्याय दूसरे में ऐसे लिखा है:-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

" Beeji Raé succeeded in S. 870 (A. D. 814). He commenced his reign with the teeka—dour against his old enemies, the Barahas, whom he defeated and plundered. In S. 892, he had a son by the Bhoota queen, who was called Deoraj. The Barahas and Langahas once more united to attack the Bhatti prince; but they were defeated and put to flight. Finding that they could not succeed by open warfare, they had recourse to treachery. Having, under pretence of terminating this long feud, invited young Deoraj to marry the daughter of the Baraha chief, the Bhattis attended, when Beeji Raé and eight hundred of his kin and clan were massacred. Deoraj escaped to the house of the Purohit (of the Barahas, it is presumed), whither he was pursued. There being no hope of escape, the Brahmin threw the Brahminical thread round the neck of the young prince, and in order to convince his pursuers that they were deceived as to the object of their search, he sat down to eat with him from the same dish." (Tod. Vol. II, Jaisalmey, Chap. II.)

"(जैसलमेर के महाराजाओं के पूर्वजों का राज्य पहिले तणोट नगर में था। वहां के भाटी राजा तराडजीके पुत्र) बिजयराजजी संवत् ८७० [ई. सन् ८१४] में राज्यगद्दी बैठे। उसी दिनसे ही अपने पुराने शत्रु बाराहोंके पीछे पड़े और उनको उन्होंने पराजित किये और लूट लिये। सं० ८९२ में उनके भुट्टा जातिकी राणी से देवराज नामक एक पुत्र हुआ। बाराह और लांगाह भाटीराजा पर चढ़ाई करने को एकवार और सम्मिलित

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुये, परन्तु वे (फिर भी पहिले की तरह) पराजित हुये और भगा दिये गये। यह जान कर, कि हम खुल्लम खुल्ला लड़ाई करने में (भाटियों से) नहीं जीत सकते, उन्होंने (एक) छलरचा। (परस्पर को) कई वर्षों की लम्बी लड़ाई का अन्त करने के बहाने से उन्होंने (भटिण्डेके) बाराह (जाति के) राजाकी पुत्री व्याहनेके लिये कुँवर देवराजकों निमन्त्रण दिया (विवाह का लग्न भेजकर जान भटिण्डे बुलाई)। भाटी उपस्थित हुये जब कि विजयराज और उनके ८०० भाई बेटे मार दिये गये। देवराज पुरोहित के घर में भाग गये (छिप गये) [उस पुरोहित को लोग बाराहों का पुरोहित समझते हैं] वहां भी उनका पीछा किया गया। उस ब्राह्मणने (देवराज के) बचनेकी कोई आशा न देख के उस राज कुमार के गले में जनेऊ डाल दी और उस के साथ एक थाली में भोजन करने को बैठ गया। जिससे कि उनका पीछा करने वालों को यह विश्वास हो जावे कि जिस पुरुष को हम ढूँढने को आये हैं उस में हमको धोखा हुआ है (अर्थात् यह तो देवराज नहीं है, किन्तु इसी ब्राह्मणका लड़का है तभी तो एक थाली में भोजन करते हैं, ऐसा समझ कर देवराज को जीता छोड़के पीछे लौट गये।)" (टाड राज स्थान भाग २ जैसलमेर के इतिहास का अध्याय २)

इसी प्रकार पुष्करणे ब्राह्मण पुरोहित देवायतजी और उन के रत्नू नामक पुत्रने भाटी देवराज के प्राण शत्रुओं से बचाये थे, जिसका पूर्ण वृत्तान्त जैसलमेरकी तवारीख के पृष्ठ १८ में लिखा है। उस का अभिप्राय यों है:—

पँवारों, झालों, बाराहों आदि ने मिलकर तणोट नगर के भाटी राजा तराड़जी व उनके युवराज कुँवर विजयराज से कई

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वार युद्ध किये। परन्तु कभी भी जय प्राप्त नहीं हुई। तब भाटियों का राज्य धोखेसे छीन लेनेके विचार से परस्पर का वैर मिटाकर सन्धि कर लेने का बहाना करके भटिण्डे के बाराह जाति के राजाने विजयराज के पुत्र भँवर देवराज को अपनी कन्या व्याह देनेका लग्न भेजा। भाटी भी इनके छल को न समझकर जान भटिण्डे ले गये। वहां चूक हुआ और १३०० लोको सहित विजयराज मारे गये। भाटियों की इष्ट देवी श्री स्वांगियाजी की आज्ञासे देवराज को 'नेग' नामका एक राईका अपनी ऊँटनी पर बैठाके ले भागा। किन्तु पीछे से शत्रुओं की सेना अती देखके देवराज की रक्षा करने में अपने को अब असमर्थ समझ के एक खेत में पुष्करणे ब्राह्मण पुरोहित देवायतजीको पिछला वृत्तान्त कह के देवराज को एक खेजड़ी वृक्ष की शाखा पकड़वाके चलती ही हुई ऊँटनी परसे उतार के सौंप गया। देवायतजीने उसको तुरन्त जनेऊ पहिनाके खेति में नैदान करने को खड़ा कर दिया। इतने में पीछे से देवराज को पकड़ने वाली सेना आई। उस में एक ऐसा चतुर पागो (खोज—पैरों के चिह्न—पहिचानने वाला) था कि भूमि पर ऊँटनी के पिछले पैरो के चिह्न देखने ही से कह दिया कि यहां तक तो ऊँटनी पर सवार दो थे परन्तु यहां से आगे अब ऊँटनी पर सवार केवल एक ही रह गया है; अतः अपना चौर, भाटी देवराज, इन्हीं खेतवालों में है। तब पीछा करनेवालोंने पुष्करणे ब्राह्मण पुरोहित देवायतजी को कहा कि हमारा चौर भाटी देवराज तुम्हारे यहां ही है सो हमको दे दो, नहीं तो तुम सब को मार डालेंगे। परन्तु देवायतजीने कहा कि यहां कोई चौर नहीं है। ५ तो मेरे बेटे और छठा मैं हूं। इतने में अचानक देवायतजी के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रत्नू नामक एक बेटे को बहू आ गई। वह इस मामले से बिल्कुल अनजान थी। उसको पीछा करने वालोंने पूछा कि 'तेरे ससुर के कितने बेटे हैं?' उसने उत्तर दिया कि '४ बेटे हैं।' फिर उन्हों ने पूछा कि 'तो फिर यह पाँचवां कौन है?' तब उसने कहा कि 'कोई चौर होगा।' यह बात सुनते ही देवराजने रत्नू की बहु के एक थप्पड़ मारी, और यह दोहा बोलाः—

मरजेहे भाभो थारै हासै। चोर नेदानैकै न्हासै?॥

इस दोहे का अभिप्राय यह था कि चोर होता है वह तो भाग जाता है, किन्तु खेत में नेदान नहीं करता। तूतो भोजाई होके ऐसा ठट्ठा करती है परन्तु यह समय ठट्ठा करने का नहीं है, क्यों कि तेरे ठट्ठा करने से सचमुच चोर समझा जाके मै मारा जाऊंगा।

इस दोहे के तात्पर्य को समझ कर रत्नू की बहुने पहिलेकी बात का अर्थ तुरन्त बदल दिया और कहा कि 'मैंने अपने ससुर के ४ बेटे बतलाये हैं उनमें मैंने अपने पतिको नहीं गिना है। क्यों कि इतने मनुष्यों में पतिको बताना स्त्रीके लिये लज्जाकी बात है। और जिसको मैंने चोर कहा है वह मेरा छोटा देवर है केवल प्यार करने को मैंने इसका ऐसा ठट्ठा कर दिया था।' किन्तु तौभी इस बात से पीछा करनेवालों का संशय मिटा नहीं। तब अन्त में देवायतजी को कहा कि आपके यहां कोई दूसरा नहीं है तो 'आप सब एक साथ एकही थाली में भोजन कर लें तब तो छोड़ देंगे वरना सब को मार डालेंगे।' तब देवायतजीने सोचा कि देवराज के साथ सब के सब भोजन करने से तो हम सभी जाति से खारिज हो जावेंगे और इधर किसी के भी भो-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जन न करने से देवराज मार डाला जावेगा। अतः उन्होंने उस समय बड़ी बुद्धिमानी से काम लिया और कामसे खोटी हो जाने आदि का बहाना करके सब एक साथ नजीमके दो दो जनोंको भेले जिमा दिये। जिनमें भाटी देवराज के साथ अपने बेटे रत्नू को जिमा दिया। यह देखके पँवारों, झालों, वाराहों की सेना आगे चली गई और भाटियों की राजधानी तणोट को बरबाद कर दी।

जिन लोगोंने विश्वास घात करके १३०० मनुष्य मार डाले उन के लिये ६ मनुष्यों को मार डालना क्या कोई बडी बात थी? नहीं परन्तु शत्रुओ की सेनामे जो वाराह जाति के राज पुत्र थे उनकी पुरोहिताइ (कुलगुरु पन) कई पीढ़ियों से इन्हीं देवायतजी के कुलमें चली आती थी इसी लिये इन को अपना पुरोहित जान के जीते छोड़ दिये वरना सबको मार डालते।

फिर पुरोहित देवायतजी व उनके बेटे रत्नू के प्रयत्न व सहायतासे भाटी देवराजने अपना राज्य पीछा स्थापित करके सं० ९०९ माघ सुदि ५ सोमवार को अपने नाम पर 'देरावल' का क़िला बनाया जिस के प्रमाण का यह एक दोहा है:—

संवत् नवैनवोत्तरै दीवी देरावल नींव।
भुट्टाँ, रोहिल, भाटियाँ. सबलां घाली सींव॥

उस समय भाटी देवराजने अपना प्राण बचाने वालो का बड़ा उपकार मान के पुरोहित देवायतजी को तो अपना पुरोहित (कुलगुरु) बनाया और रत्नू को, जो उन के साथ भोजन कर लेने से पुष्करणे ब्राह्मणों की जाति से अलग कर दिया

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गया था, अपना पोलपाट बारहट बना के चारणों की जातिमें मिला दिया।

तब से देवायतजी के अन्य ३ बेटों के वंशवाले तो पुष्करणों में भाटी राजपूतों के पुरोहित कहलाते हैं और समस्त भाटी राजपूत उनको अपना कुलगुरु मानते हैं। इतनाही नहीं किन्तु जैसलमेर के राज्य में 'ज़ाइज्जत' व 'मुसाहिब' हर ओहदों पर रहते हैं, और चौथे पुत्र रत्नू के चारण हो जाने से उसकी सन्तान अब तक 'रत्नू चारण' कहलाती है।

इसी प्रकार पुष्करणे ब्राह्मण पुरोहित रत्नू का भाटी देवराज को अपना भाई कह कर उसके साथ भोजन करके शत्रुओंसे बचाने का सम्पूर्ण वृत्तान्त रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़ बाबत् सन् १८९१ ई०, के भाग तीसरे के पृष्ठ १८३ में भी लिखा है।

विचार का स्थल है कि यदि पुष्करणे ब्राह्मणों की उत्पत्ति पुष्कर खोदने वाले शूद्र ओडों (बेलदारों) से ही हुई होती तो एक यदुवंशी राजपूत राजा के प्राण बचाने के लिये, आपत्काल के समय, एकान्त जङ्गल में, उस के साथ, केवल एक ही वार भोजन कर लेने मात्रही से स्वयं देवायतजीको अपने प्राण प्यारे पुत्र रत्नू को सदा के लिये जाति से अलग करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। बहुत होता तो उचित प्रायश्चित कराके उसे शुद्ध कर लेते। परन्तु धर्म शास्त्र की मर्यादानुसार एक तो हत्यारा (मनुष्य मारनेवाला) और दूसरा नालभ्रष्ट (किसी अन्य जाति वाले के साथ भोजन करने वा मद्य मांस आदि अभक्ष्य पदार्थ खाने वाला) इनको जाति से बाहर कर देने का नियम पुष्करणे ब्राह्मणों में भी परम्परा से चला आता है इसी लिये

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वयं देवायतजीने ही अपने पुत्र रत्नू को जातिसे बाहर कर दिया। तभी तो उसे चारणों की जाति में मिला देने की राजा को आवश्यकता पड़ी थी।

जब कि पुष्करजी का इतिहास लिखते समय टाड साहबने राजस्थान के भाग १ अध्याय २९ वें में पुष्करजी को प्रारम्भ में तो ब्रह्माजी का उत्पन्न किया हुआ और ब्रह्माजी के पीछे मण्डोर के अन्तिम पड़िहार राजा नाहरराव का खुदवाया हुआ होना और नाहरराव पड़िहार का विद्यमान होना विक्रम संवत् १२०६ में भाग १ के अध्याय ४, ५, ७ और २६ वें में माना है, तो टाड राजस्थान के लेखानुसारभी पुष्करजी का तालाब सं० १२००, के लगभग खुदा है, अतः टाड राजस्थानकी पूर्वोक्त 'अजब कहानी, के अनुसार पुष्करणे ब्राह्मणों की उत्पत्ति भी तो तभी से होनी चाहिये। किन्तु उसी टाड राजस्थान के भाग २ के जैसलमेर के इतिहास के अध्याय २ में वर्त्तमान जैसलमेर के महाराजाओं के पूर्वज भाटी राजा विजयराज के पुत्र देवराज को सं० ८९८ में भटिण्डे के वाराह जाति के राजाओं के वंश परम्परा के पुरोहित (कुलगुरु) ने अपना भाई कह कर अपने साथ एकही थाली में जिमा के शत्रुओं से प्राण बचाना लिखा है। भाटी देवराज के साथ भोजन करने वाला वह पुष्करणा ब्राह्मण पुरोहित देवायतजी का पुत्र रत्नू था इस बात को जैसलमेर की तवारीख व रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़ भी स्वीकार करती है। इतनाही नहीं किन्तु भाटी राजा देवराज के साथ भोजन करने वाले रत्नू को पुष्करणे ब्राह्मणों ने अपनी जाति में नहीं रखा; तब भाटी राजा देवराजने उसको अपना पोलपाट बारहट बना के चारणों की जाति में मिला दिया था। उसकी,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्तान अब तक चारणो की जाति में विद्यमान है और पुष्करणे ब्राह्मण रत्नू की सन्तान होने से रत्नूचारण कहलाती है। और रत्नू के दूसरे भाइयों को भाटी राजा देवराज ने अपने पुरोहित बनाये जिन की सन्तान अद्यावधि पुष्करणे ब्राह्मणों की जाति में विद्यमान है। और भाटी देवराज के वशधर होने से जैसलमेर के महाराजाओ की पुरोहिताई सदासे करते आये हैं।

विशेष ही विचार करने का स्थल है कि कहां तो पुष्कर खुदने पर (सं० १२१२ में) पुष्करणे ब्राह्मणों की उत्पत्ति को अजब कहानी और कहां पुष्कर खुदने से ३०० वर्ष पहिले (सं. ८९८ में) ही पुष्करणे ब्राह्मणों का विद्यमान होना ? ये दोनों परस्पर विरुद्ध बातें एक ही जैसलमेर के इतिहास में लिखी गई हैं इस से बढ़कर टाड साहब की और क्या भूल होगी ?

टाड राजस्थान के इस लेख से पुष्कर खुदने से ३०० वर्ष पहिले पुष्करणे ब्राह्मण विद्यमान थे इतना ही नहीं किन्तु पुष्कर खुदने से ५०० । ७०० वर्ष पहिले भी पुष्करणे ब्राह्मणों का विद्यमान होना स्पष्ट सिद्ध होता है। क्यों कि देवराज को बचाने वाला पुष्करणा ब्राह्मण पुरोहित रत्नू भटिण्डे के वाराह जाति के राजाओं के वंश परम्परा का पुरोहित था अतः कमसे कम १०। २० पीढ़ियों से तो इन की पुरोहिताई होनी ही चाहिये तब तो सं० ८९८ से भी २०० । ४०० वर्ष पहिले ही से पुष्करणे ब्राह्मणों का विद्यमान होना स्वयं सिद्ध हो गया तो फिर पुष्कर खुदने से ५०० । ७०० वर्ष पहिले से पुष्करणे ब्राह्मणों का विद्यमान होना तो मानना ही पड़ेगा। परन्तु पुष्करणे ब्राह्मणों के इतिहास से इस से सैंकड़ों ही वर्ष पहिले से विद्यमान होने का पता लगता है जिन के और भी कई प्रमाण आगे लिखता हूं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सं० ८७७ में तणोट नगर के भाटी राजा तराड़जी ने अपने पुत्र विजयराज को युवराज नियत करके आप स्वयं श्री लक्ष्मीनाथजी की सेवा करने लगे। और उस राज्य मन्दिर में कथा बाँचने के लिये पुष्करणे ब्राह्मण टङ्कशाली (जो पीछे से व्यास कहलाये) मानजी को रखे। इन्ही मानजी की रम्भा नाम की कन्या भटिण्डे के वाराह जाति के राजाओं के वंशपरम्परा के पुरोहित देवायतजी के पुत्र दीनजी को व्याही थी।

सं० ८७५ में भटिण्डे के वाराह जाति के राजा जूने का पुत्र नाईया तणोट नगर के भाटी राजा तराड़जी व उनके पुत्र विजयराज से पहिले की पराजय का बदला लेने को गजनी के बादशाह हुसैनशाह की सेना अपनी मदद के लिये मुलतान से ले आया। इस घोर सङ्ग्राम में दोनों ओर के सहस्रों मनुष्य मरे। तो भी जय तो भाटियों ही की हुई। परन्तु बहुत से भाटी मारे जाने के उपरान्त कइ अन्य जातियो में भी जा मिले। उन में कुंवर डुला, चूडा और डागे की सन्तान महेश्वरी महाजनों में जा मिली, जिनसे डुला, चण्डक और डागा जातियें प्रसिद्ध हुई। इन में डागेने तो रंगा और चण्डकने विशा जाति के पुष्करणे ब्राह्मणों की कुलदेवियों के शरण में जा के रक्षा पाई थी, इस उपकार में अपने वंश के लिये डागोने तो रंगोंकी कुलदेवी 'सच्चाई' को और चण्डकने विशोंकी कुलदेवी 'आशपुरा' को कुलदेवी मानीथी सो आजतक वैसे ही मानते आये है।

सं० ७२७ में सातलमेर के तुवर राजा शङ्करने अपनी कन्या गढ़ मरोट के भाटी राजा मूलराज को व्याही। उस समय उन के वंश परम्परा के पुरोहित कपिलस्थ लिया (छाँगणी)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाति के पुष्करणे ब्राह्मण थे। उन के प्रबन्ध से विवाह की शोभा अधिक हुई। इससे भाटी राजा मूलराजभी बहुत प्रसन्न हुये।

सातलमेर के तुंवर राजाओंने अपने पुरोहितों को 'बाँ ना' नामक एक गाँव (जो पोकरण से दक्षिण की ओर एक कोश की दूरी पर है) दत्त दियाथा सो वह गांव आज तक छांगांणी जाति के पुष्करणे ब्राह्मणों की अधीनता में चला आता है।

सं० ५७५ में लुद्रवा नगर में लुद्र (कल्ला) जाति के पुष्करणे ब्राह्मण हरवंशजीने. सहँसभोज (अशेषभोज) नामक विष्णु यज्ञ किया था। उस समय अपनी जातिके सम्पूर्ण ब्राह्मणोंको दूर २ से बुलाके एकत्र किये और ७ दिनतक भोजन कराके प्रत्येक ब्राह्मणोंको २) २) रुपये दक्षिणा देके विदा किये। उस उत्सवमें पुष्करणे ब्राह्मणों के भाट जैतराज को कड़े, कण्ठी, मोती आदि शिरोपाव के अतिरिक्त ५००) रुपये रोकड़ दिये थे। इस यज्ञ का वृत्तान्त भाटों की बहियों में तथा कल्लों के इतिहास में विस्तार से लिखा है।

सं० ५३१ में लाहौर के भाटी राजा 'गजूराव' लाहौरका राज्य अपने पुत्र 'लोमनराव' को दे के आप गजनी (खुरासान) की गद्दी पर जा बैठे। लोमनराव का विवाह लुद्रवा नगरके पँवार राजा 'वीरसिंह' की कन्यासे हुआ। उस समय वीरसिंहने अपने वंश परम्परा के पुरोहित आचारज (आचार्य जाति के पुष्करणे ब्राह्मणों को 'काहला' नामक एक गाँव (जो जैसलमेर से पश्चिम की ओर ५ कोश की दूरी पर है) दत्त देके ताम्र पत्र कर दिया था। पीछे से आचारजोंने वह गाँव अपने सवासने गजा जाति के पुष्करणे ब्राह्मणों को सङ्कल्प कर दिया।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लुद्रवा नगरके पँवारोंका राज्य सं ९१५ में नष्ट हो गया अर्थात् भाटी राजा देवराजने छीन लिया था तबसे इस देश मे देवराज की सन्तान जैसलमेर के भाटी महाराजाओं का राज्य है जिसे आज १०५१ वर्ष हो गये किन्तु पँवारोंके दिये हुये गाँवको भाटी राजाभी वैसा ही साँसन मानते आये हैं जैसा कि पँवारोंने माना था। अतः यह 'काहला' ग्राम आज तक गजा जाति के पुष्करणे ब्राह्मणों की स्वाधीनतामें चला आता है जिसे मिले आज १४३५ वर्ष व्यतीत हो गये हैं। (देखो जैसलमेर की तवारीखके पृष्ठ १३६वें में परगने जैसलमेरके गाँव नम्बर ५२ वें की कैफ़ियता)

सं० २२२ में जैनाचार्य रत्नप्रभुसूरि ने मारवाड़ में ओसियां नगरके १८ खांपके पँवार राजपूतोंको जैनी बनायेथे जिस का सम्पूर्ण वृत्तान्त ओसवालोंके इतिहासमें विस्तारसे लिखा है। उसका सारांश यह है कि वहांके राजाकी वृद्धावस्थामें उन का एक लौता पुत्र सर्प के काटने से मर गया था। उसको रत्नप्रभु-सूरिने इस प्रण पर निर्विष करके पीछा जिला दिया था कि वे सब लोग जैन धर्मको धारण करें। इस लिये वे पँवार राजपूत जैनी हो गये। जैनी हो जानेपर पँवारोंने अपने पुरोहितोंको कहा कि "तुम हमारी विरत रखना चाहते हो तो हमारे घर का अन्न जल लो और हमारे जैन मन्दिरों की सेवा करो"। तब ६ गोत्र के तो गूजर गोड़, ६ गोत्र के खण्डेलवाल और ४ गोत्रके पुष्करणे कुल १६ गोत्रके ब्राह्मणोंने विरतके लोभसे उनके घरमें भोजन किया जिससे भोजक कहलाये जिसके प्रमाण की यह एक कहावत परम्परा से चली आती है कि:-

पँवाराँघर प्रोहिताँ। ओसवालाँघर भोजकाँ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फिर वे १६ गोत्र के ब्राह्मण अपनी जाति अलग बनाके ओसवालों की विरत और उनके मन्दिरोंकी सेवा करने लगे जिससे फिर सेवग कहलाये।

कितनेक लोग कहते हैं कि जैनी ओसवालों की जाति सं० ८०० के लगभग बनी है। किन्तु ऐसे तो सं० ८०० ही क्यों सं० १५०० के लगभग तक ओसवालोंकी जाति बनती रही है, अर्थात् दूसरी जातिके लोग इनमें मिलते चले आये हैं। परन्तु इस जातिका प्रारम्भ तो पँवार राजपूतों से सं० २२२ ही में हो गया है. जिसके प्रमाणका एक दोहा ओसवालोंके इतिहासमें से यहां लिखता हूं:—

संवत् दोय बावीस के ओसवाल क्षत्री हुआ।
चवदैसौ चँवालीस नख सकल कहु जुआ जुआ॥

यद्यपि यह दोहा ओसवालों की जाति बन चुकने पर बना है परन्तु इसके बनानेवालेने भी ओसवालों की जाति बनने का प्रारम्भ होना तो सं० २२२ ही में माना है। अतः सेवगों की जातिभी सं० २२२ होमें बनी है उसी समय ४ गौत्रके पुष्करणे ब्राह्मण भी उस जातिमें शामिल हुये थे।

यही बात स्वयं सेवगोंने भी अपनी उत्पत्ति के इतिहास में लिखाई है। (देखो रिपोर्ट मर्दुम शुमारी, राज्य मारवाड़, सन् १८९१ ई०, के भाग तीसरे के पृष्ठ ३२१ में सेवगोंकी उत्पत्ति।

सं० २१३ में बोथा जातिके पुष्करणे ब्राह्मण पुरोहित हरवंशजी जिनके वंशवाले भाटी राजा देवराजको बचानेके समयसे भाटियों के पुरोहित हुये हैं, अपनी कुलदेवी 'डेहरूमाता' को सिन्ध से अपने साथ मारवाड़ में लाये थे (उस समय मार-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाड़में यादवों का राज्यथा।) फिर जहां पर डेरा कियाथा वहां माताकी आज्ञासे उसी माताके नामपर 'डेहरू' गाँव बसाया जो कि जोधपुर से ईशानकोण की ओर परगने नागोरमें विद्यमान है; और पुरोहित जातिके समस्त पुष्करणे ब्राह्मण तभीसे अपनी उस कुलदेवी की मानता करने को वहीं पर जाते हैं।

सं० २०९ में पुष्करणे ब्राह्मण लुद्र ब्रह्मदत्तजीने विद्या के बलसे शुक्रजी की आराधना करके उन्हें प्रत्यक्ष बुलाये थे। उस समय शुक्रजी से शुक्र का तारा अस्त होने के समय शुभ कार्य करने में तारेका दोष न लगनेका वर मिला था। तबसे लुद्र जातिके समस्त पुष्करणे ब्राह्मण (जो पीछे से कल्ला कहलाये) तारे के अस्त होने का दोष नहीं मानते हैं। इसी लिये लोग कहते आये हैं कि कल्लोंने तारा उतारा था। (देखो रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़ का पृष्ट १८६ वाँ।)

पुष्करणे ब्राह्मणो की प्राचीनता के इतने प्रमाण लिखे गये वे विक्रम संवत् के आधार पर लिखे गये हैं परन्तु इस से पूर्व विक्रम संवत् प्रारम्भ ही नहीं हुआथा इस लिये इस से पहिले के प्रमाण संवत्के आधार परतो नहीं किन्तु पीढ़ियों के आधार पर तो विक्रम संवत् के भी सैकड़ों ही वर्ष पहिले के और भी कई लिख सकता हूं। पर जब कि इतने प्रमाणों से भी यह बात तो स्पष्ट हो गई कि पुष्करका तालाब तो सं० १२१२ में खुदा है और पुष्करणे ब्राह्मण सं० २०९ में भी विद्यमान थे। जिससे पुष्कर खुदने के समयसे १००० वर्ष पहिले तक की तो पुष्करणे ब्राह्मणों की विद्यमानता इन प्रमाणोंही से सिद्ध हो गई तो फिर अब अधिक प्रमाण लिखना गोया पाठकों के अमूल्य समय को वृथा नष्ट करना है। अतः ऐसे प्रमाणों को तो अब मैं यहीं पर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाप्त करता हूं। किन्तु आगे फिर में अन्य प्रकार के कुछ प्रमाण और भी लिखूंगा कि, जिससे पुष्करणे ब्राह्मणों की प्राचीनता और भी अधिक दृढ़ हो जावेगी।

पुष्कर खुदने में किसी किसी का मत भेद।

सम्पूर्ण लोगों का एकही मत है कि पुष्करजी का तालाब मण्डोर के राजा नाहरराव पड़िहारने खुदवाया था और संवत् १२१२ में खुदवाया था जिस की सत्यता के कई प्रमाण लिखे जा चुके हैं। परन्तु कोई २ नवीन इतिहास वेता कहलाने वाले अपनी खिचड़ी जुदी ही पकाना चाहते हैं उन का भी मत दिखला के भ्रम दूर करता हूं।

पुष्करजो के पण्डों की कहांनी।

पुष्कर तीर्थ पर पण्डों के २ भेद हैं। एक तो बड़ी वस्ती वाले और दूसरे छोटी वस्ती वाले। इन में बड़ी वस्ती वाले अपनी तीर्थ पुरोहिताई की प्राचीनता की कहांनी में कहते हैं कि "पुष्करजी के तालाब को मण्डोर के राजा नाहरराव पड़िहारने सं० ७४४ में खुदवाया था।"

परन्तु इस कहांनी की सत्यता के लिये वे केवल अपने मुख की कल्पना के अतिरिक्त अन्य कोई पुष्ट प्रमाण नहीं बतलाते अतः विना प्रमाण इनकी यह बात बिलकुल विश्वास करने योग्य नहीं। क्यों कि—

प्रथम तो अजमेर की तवारीख इस कहांनी को बिलकुल स्वीकार नहीं करती। दूसरा जोधपुर से प्रकाशित 'भारत मार्त्तण्ड' नामक मासिक पुस्तक के सं० १९५५ के श्रावण मासके अङ्क

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में 'मारवाड़के संक्षिप्त इतिहास' में पृष्ठ १९ वें की पंक्ति १। २ में लिखा है कि "पड़िहार राजपूतों की उत्पत्ति विक्रमी संवत् को आठवीं शताब्दि में पाई जाती हैं"।

जब कि मण्डोर के पड़िहार राजपूनों को उत्पत्तिही आठवीं शताब्दिमें हुई है तो फिर उनके वंशमें से कई पीढ़ी पीछे होने वाले नाहरराव पड़िहार सं० ७४४ ही में कैसें पुष्कर को खुदवा सकते थे?

इसके अतिरिक्त सं० ७४४ में मण्डोर में राज्य ही पड़िहारों का नहीं था किन्तु पँवारों का था। पँवारों के इतिहास में यह बात प्रसिद्ध है कि पँवारों में 'धरणी वाराह पँवार' मारवाड़ का बड़ा नामी राजा हुआ, जिसने अपने राज्यके ९ कोट अपने भाइयों को बाँट दिये थे। तभी से मारवाड 'नवकोटी' कहलाती है उसकी तफ़सील रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़ बाबत सन् १८९१ ई० के तीसरे भागके पृष्ठ १०। ११ वें में यों लिखी है:—

मेण्डोवर सावँत हुओ, अजँमेर सिन्ध सू।
गढ़ पूँगल गज मल हुआ, लुद्रँवै भान भू॥
आल पाल अँर्ब्बुद, भोज राज जालन्धर (जालोर)।
जोग राज धँर धाट, हुयो हंसू पारक्कर॥
नव कोट किँराडू संजुगत, थिर पँवारां थरपिया।
धरणी वराह धर भाइयाँ, कोट बाँट जुआ जुआ किया।

यह बँटवाडा (विभाग) सं० ९७६ से पहिले हो चुका था। जिसका प्रमाण यह है कि जिस सावँत पँवार के भागमें मण्डोर आया था उस मण्डारे के राजा सावँत पँवार की पुत्री का विवाह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सं० ५७६ में 'मुमणवाण' के भाटी राजा मङ्गलराव से हुआ था इसी प्रकार सावँत पँवार के वंश में कई पीढ़ी पीछे पँवार उदय राज मण्डोरका राजा हुआ उसकी कन्याका विवाह सं०७१३के पीछे 'मरोट' के भाटी राजा मूलराज से हुआ था। (देखो जैसलमेर की तवारीख़ के पृष्ठ १६ वें की पंक्ति ६।७। ८ तथा पृष्ठ १७ वें की पंक्ति २। ३) इन के पीछे भी कई पीढ़ियों तक मण्डोर में पँवारों का राज्य रहा है।

किन्तु सं० ९०९ के पीछे भाटी राजा देवराजने पँवारों के ९ कोट* जीत लिये इन में से जालोर तो सोनीगरों को और मण्डोर पड़िहारों को दे दिये+। तब से मण्डोर में पड़िहारों का राज्य

* पँवारों के ९ कोट भाटी देवराजने जीत लियेथे उनकी तफ़सील जैसलमेरकी तवारीख़के पृष्ठ २३ वेंकी पंक्ति ४ से १० तक यों लिखी हैं:—

देवराज थये दुर्ग लुद्रवाँ आप घर लाऐ ।
सम वहण त्रय सिन्ध जूनो पारकर जमाऐ ॥
आबू फेरो आण भड्ड जालोर हु भंजै ।
मारे नृप मण्डोर गढ़ अजमेर हु गंजै ॥
पूँगल गढ़ लीधो प्रगट कतल विठंडै कीजिये ।
देव राज चढ़ते दिवस रत्नू आज्ञा धर लीजिये ॥

+ जैसलमेरकी तवारीखमें तो लिखा है कि भाटी देवराजने मण्डोर पड़िहारों को दे दिया। किन्तु पड़िहार राजा बाहुकके शिला लेखमें लिखा है कि पड़िहार राजा शिलुकने भाटी देवराज को युद्धमें जीतके छत्रादि चिह्न पाये। अतः उसी समय मण्डोर भी जीतकर ले लिया हो। इससे भी यही बात सिद्ध होती है कि मण्डोर में पड़िहारों का राज्य सं० ९०९ के लगभग ही हुआ है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुआ। इससे पहिले तो मेड़ते में राज्य था। इस से यह बात निःसन्देह स्वीकार करनी पड़ती है कि सं० ७४४ में मण्डोर में पड़िहारों का राज्य ही नहीं था। तो फिर मण्डोर के पड़िहार राजा नाहररावने सं० ७४४ में पुष्कर के तालाबको खुदवाया था यह बात क्यों कर सिद्ध हो सकती है? मण्डोर के राजा नाहरराव पड़िहार तो सं० १२०० के लगभग हुये थे और उन्होंने सं० १२१२ मे ही पुष्करजी का तालाब खुदवाया था जिस के कई प्रमाणमैं पहिले लिख चुकाहूं। किन्तु इतने परभी यदि कोई सं० ७४४ मेंही पुष्कर खुदवाना मानलें तौभी पुष्करणे ब्राह्मण तो पुष्कर खुदनेसे सैंकड़ों वर्ष पहिलेसे मारवाडमें सिन्धसे आये हैं जिसे जैसलमेर जोधपुर आदिके इतिहास सप्रमाण स्वीकार करतेहैं।

शिला लेखों से भ्रम–

पुष्करजी के तालाब को मण्डोर के पड़िहार राजा नाहरावने खुदवाया है। परन्तु केवल प्राचीन शिला लेखों परही विश्वास करने वाले कोई २ विद्वान् कहते हैं कि पुष्करजी का तालाब नाहरावने खुदवाया ही नहीं किन्तु मण्डोर के पड़िहार राजा चेन्दुकके पुत्र 'शिलुक' ने खुदवाया है। जिसके प्रमाणमें वे पड़िहार राजा बाहुक का शिला लेख, जो सं० ९४० के चैत्र सुदि ५ का खुदा हुआ जोधपुर के कोट में मिला है और इस समय महक में तवारीख राज्य मारवाड़ में रखा है, देते हैं। उसमें यों लिखा है:–

ततः श्रीशिलुकाजातः पुत्रो दुर्वार विक्रमः।
येन सोमा कृता नित्या स्ववणो वलदेशयोः ॥१८॥
भट्टिकं देवराजं यो वल्लमण्डल पालकं।
निपात्य तत्क्षणं भुमौ प्राप्तवाञ्छत्र चिह्नकं ॥१९॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्करिणीकारिता येन त्रेतातीर्थे च पत्तनं ॥
सिद्धेश्वरो महादेवः कारितस्तुंग मंदिरः ॥२०॥

अर्थात् उस चेन्दुक पड़िहार के शिलुक नाम एक अद्वितीय पराक्रमी अजेता, पुत्र हुआ। जिसने खवणी और बल्ल देश की सीमा स्थापित की और वल्लमण्डल के राजा भाटी देवराज को युद्ध में जीतके छत्रादि चिह्न पाये। और त्रेता तीर्थ पर पुष्करणी (चौकोना तालाब) बनाके ऊँचे मन्दिर में सिद्धेश्वर महादेवजी की प्रतिष्ठा कराई।

परन्तु जब कि यह बात सर्वत्र ही प्रसिद्ध है, और प्रमाण भी मिलते हैं, कि पुष्करजी को मण्डोरके राजा नाहरराव पड़िहारने खुदवाया था तो फिर राजा शिलुक का पुष्कर खुदवाना क्यों कर सिद्ध हो सकता है? कभी नहीं। परन्तु यह अनुमान उन्होंने उक्त शिलालेखमें केवल 'पुष्करणी' शब्द देख ही के कर लिया है। किन्तु यह उनका भ्रम है क्योंकि पुष्करणी शब्द पुष्कर का वाचक नहीं है वरन एक छोटी तलाई का द्योतक है। इसके अतिरिक्त उक्त शिलालेखमें पुष्करणी पर सिद्धेश्वर महादेव का मन्दिर स्थापित करना भी तो लिखा है किन्तु पुष्कर पर इस नामका कोई मन्दिर है ही नहीं। अतः पुष्कर खुदवानेवाला शिलुक नहीं है। फिर भी यदि यह मान भी लें कि पुष्करजी को पड़िहार राजा शिलुक नेही खुदवाया था तो भी पुष्करणों के लिये कुछ हानी नहीं। क्योंकि इसी शिलालेखमें राजा शिलुक को भाटी राजा देवराज के साथ युद्ध करना लिखा है और यह युद्ध सं० ९१५ के पीछे हुआ है। परन्तु राजा शिलुक से लड़नेवाले भाटी राजा देवराजको, बाल्याव-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थापें अर्थात् सं० ८९८ में, बारह जातिके राजपूतों के पुरोहित पुष्करणे ब्राह्मण देवायतजीने शत्रुओंसे बचाया था जिसका सविस्तर वृत्तान्त पुष्करणे ब्राह्मणों की प्राचीनताके प्रमाण सं० ८९८ में लिखा चुका है। अतः पुष्करणे ब्राह्मण तो पड़िहार राजा शिलुकसे भी पहिले ही से मारवाड़ में विद्यमान थे।

पड़िहारराजा बाहुकके उक्त संस्कृत शिला लेखमें लिखाहे कि:-

तस्मा न्नरभ टाज्जाः श्रीमान्नागभटः सुतः।
राजधानी स्थिरा यस्य महन्मेडन्तकं पुरं ॥ १२ ॥
राज्ञां श्रीजज्जिका देव्यास्ततो जातौ महागुणौ।
द्वौ सुतौ तातभोजाख्यौ सौदर्यौ रिपुमर्दनौ॥ १३ ॥
तातेन तेन लोकस्य विद्युच्चंचल जीवितं।
बुध्वा राज्यं लघो भ्रातुः श्रीभोजाय समर्पितं॥१४॥
स्वयञ्च संस्थितस्तातः शुद्धं धर्मासमाचरन्।
माण्ड व्यस्याश्रमे पुण्ये नदी निर्झर शोभते ॥ १५ ॥

अर्थात् नरभट के पुत्र नागभटके, कि जिसकी राजधानी मेड़तेमें थी, जज्जिका नाम रानीसे तात और भोज नाम के २ पुत्र हुये। उनमें से तातने तो मनुष्यका जीवन बिजलीके समान चञ्चल समझ के राज्य छोड़ के अपने छोटे भाई को दे दिया। और आप संसारको त्यागके माण्डव्य ऋषिके आश्रम में शुद्ध धर्मका आचरण करने लगा।

परन्तु इसी बाहुकके भाई कक्कुकके मागधी गाथाके एक शिला लेखमें नरभटको 'णारहड' और उसके पुत्र नागभट को 'णाहड' लिखा है। इसी 'णाहड' का अपभ्रंश नाहरराव समझ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर कुछ लोग इस नागभट ही के 'नाहरराव' होनेका अनुमान करते हैं। किन्तु उनका यह अनुमान करना यथार्थ में ठीक प्रतीत नहीं होता है क्योंकि प्रथम तो उक्त शिला लेखमें नागभट की राजधानी 'मेड़ता' लिखी है, किन्तु पुष्कर खुदवानेवाले नाहरराव की राजधानी 'मण्डोर' थी। दूसरे शिला लेखमें नागभट का उपरोक्त अन्य इतिहास लिखा होने परभी 'पुष्कर का तालाब खुदवाने' आदिका कुछ भी वृत्तान्त नहीं लिखा है, किन्तु मण्डोर के नाहरराव का 'पुष्करका तालाब खुदवाना' सर्वत्र ही प्रसिद्ध है। फिर मेड़ते के राजा नागभट क्यों कर पुष्कर का तालाब खुदवानेवाले नाहरराव हो सकते हैं? फिर भी यदि नागभट ही का अपभ्रंश नाहरराव मानलें तौभी यह तो कोई आवश्यक नहीं है कि उन्हें पुष्कर खुदवाने वालेभी मान लें। क्यों कि एकही नामके कई राजा एकही कुलमें हो सकते हैं जैसेः—

जोधपुर के राठौड़ वंशमें महाराजा प्रथम जसवन्तसिंहजी सं० १६९९ में हुयेथे और उनसे ९ पीढ़ी पीछे सं० १९२९ में उसी नामके दूसरे महाराजा फिर हो गये। इसी प्रकार जयपुर के कछवाहा वंशमें जयसिंहजी नामके ३ और रामसिंहजी नामके २ महाराजा हुयेथे। इनमें प्रथम रामसिंहजी सं० १७२४ में हुये थे उनके पिताका नाम जयसिंह जो था। इनसे ९ पीढ़ी पीछे फिर दूसरे रामसिंहजी सं० १८९२ में हुये। उनके भी पिताका नाम जयसिंहजीही था। सो जबकि एकही नामके पिताओं के एकही नामके पुत्र और एकही रियासत के स्वामी होने पर भी दोनों जयसिंहजी और दोनों रामसिंहजी एक नहीं थे, तो एक ही वंशमें जुदे २ परगनोंके राजा और जुदे २ नामों के पिताओं के एकही नामके पुत्र हो जाने मात्र ही से क्या कभी एकही कार्य

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के कर्त्ता मान सकते हैं ? कभी नहीं। क्यों कि उक्त शिला लेखों में मेड़तेके राजा नागभट्टके पिताका नाम नरभट लिखा है। किन्तु पुष्कर खुदनेवाले मण्डोर के राजा नाहरराव के पिता प्रेमपालथे जिसके प्रमाणका एक पूर्वोक्त दोहा सर्वत्रही प्रसिद्ध है कि:—

संवत् बारै बारोत्तरै पुष्कर बाँध्यो धाम।
पेमपाल रा नाहरराव थैं कीयो निश्चल नाम॥

इससे स्पष्ट है कि पुष्कर खुदवाने वाला नाहरराव मेड़तेके राजा नरभटका पुत्र नहीं किन्तु मण्डोरे के राजा प्रेमपालका पुत्र था, जिसने सं० १२१२ में पुष्करजीका तालाब खुदवाया था।

जब कि शिलालेख (कीर्त्ति स्तम्भ) खुदवाने का मुख्य उद्देशही अपनें पूर्वजोंकी कीर्ति स्थापित करनेका है और इसी लिये उपरोक्त शिला लेखोंमें भी प्रत्येक राजाके नामके साथ २ साधारण इतिहास भी लिखे विना नहीं रहे तो क्या समस्त तीर्थों के गुरु पुष्करको खुदवाने जैसै महान् कीर्तिवाले इतिहास को क्या कोई शिला लेखमें लिखना भूल गये ? नहीं नहीं कभी नहीं भूले। तभी तो कहते हैं कि नागभट तो क्या इन शिला लेखों में के किसी अन्य राजानेभी पुष्कर नहीं खुदवाया था इसीलिये इन शिलालेखोंमें पुष्करका कुछभी वृत्तान्त नहीं है।

अतः पुष्कर खुदवानेवाले नाहरराव पड़िहार इन शिला लेखोंके खुदवानेवाले पड़िहार राजा बाहुक तथा कक्कुक से कई पीढ़ी पीछे हुयेथे—जिन्होंने सं० १२१२ में पुष्कर खुदवाया था जिसके कई प्रमाण पहिले लिख चुका हूं।

फिरभी यदि कोई 'बालकी खाल' उतारनेवाले हठात् ही मेड़तेके राजा नरभटके पुत्र नागभटही को पुष्कर खुदवाने वाला

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाहरराव मानलें तो भी वहभी तो सं० ८०० के पीछे ही हुआ है। क्योंकि उसी शिलालेखमें भाटी राजा देवराजसे (सं० ९१५ के पीछे) युद्ध करनेवाले पड़िहार राजा शिलुकसे नागभट को ५ पीढ़ी पहिले हुआ लिखा है और ५ पीढ़ियें अधिकसे अधिक १००। १२५ वर्षों में तो अवश्य ही समाप्त हो गई होगी। अतः नागभट भी सं० ८०० के तो पहिले कदापि नहीं हो सकता। परन्तु पुष्करणे ब्राह्मण तो नागभट के समयसे भी बहुतही अधिक समय पहिले हीं से मारवाड़ में विद्यमान थे जिस के कई प्रमाण पहिले लिखे जा चुके हैं।

उपरोक्त प्रमाणोंसे पाठक भली भाँति समझ गये होंगे कि पुष्करजी की उत्पत्तिमें कोई २ लोग जो मतभेद मानते हैं वह केवल उनका भ्रम है। किन्तु फिर भी उस भ्रमकोभी 'दुर्जनतोष न्याय' से मानभी लें तोभी पुष्करणे ब्राह्मणों की प्राचीनता में तो कुछ भी बाधा नहीं आती। क्यों कि येतो उपरोक्त मतभेद में बताये हुये समयसे भी सैकड़ों ही वर्ष पहिले से विद्यमान हैं जिसकी सत्यता के कई पुष्ट प्रमाण पाठक पढ़ ही चुके है और आगे भी पढ़ेंगे।

पुष्करणे ब्राह्मणों की राज्य पुरोहिताई।

यदुवंशी राजपूतों की पुरोहिताई—

पुष्करणे ब्राह्मणों की जाति के अग्रगण्य (मुख्य) महर्षि गर्गाचार्यजी थे। इस लिये यह जाति 'गर्गमती' कहलाती है। और गर्गाचार्यजी यदु वंशीयों के पुरोहित (कुलगुरु) थे। अतः यदुवंशी मात्र पुष्करणों की समग्र जाति को भी अपना पुरोहित

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(कुलगुरु) मानते चले आये हैं। और श्री कृष्ण चन्द्र महाराजने अवतार धारण यदुवंशही में किया था। अतः कुलकी मर्यादाके अनुसार उन्हों नेभी अपने कुलगुरु गर्गाचार्यजी के पैर पूजे थे। यदुवंशियों की राज्य गद्दी द्वारिका में थी और उनका राज्य उसके आसपासके देशों में गुजरात, कच्छ, सिन्ध, पञ्जाब और मारवाड़ तक फैला हुआ था। इसी लिये उनके पुरोहित (कुलगुरु) पुष्करणे ब्राह्मण भी इन्हीं देशोंमें ही विशेष करके बसते हैं।

श्री कृष्ण महाराजसे १२ पीढ़ी पीछे 'गजबाहु' नामक यदुवंशी राजा हुये उन्होंने खुरासान में जाके अपने नामपर 'गजनी' नगर विक्रम संवत् से २७३३ वर्ष पहिले (अर्थात् उस समय जो युधिष्ठिर महाराजका संवत् चलता था, उसके संवत् ३०८ में) बसाया था जिसके प्रमाणका एक दोहा तवारीख़ जैसलमेर के पृष्ठ १० वें की पंक्ति १ में यों लिखा है:—

तीन सत आठशक धर्म, वैशाषे सित तीज।
रवि रोहिणि गज बाहुने, गजनी रची नवीन॥

तभीसे खुरासानमें भी यदुवंशीयों का राज्य समय २ पर रहता आया है। और उनोंके पुरोहित पुष्करणे ब्राह्मणभी उन्हींके साथ २ खुरासान में गये थे तभीसे पुष्करणे ब्राह्मणों का खुरासानमें जाना आना जारी है इस समयभी जैसलमेर आदि के पुष्करणे ब्राह्मण खुरासानमें—गजनी, क़ाबुल, खुलम, कन्धार, हेरात, बल्ख, बुखारा, समरकन्द, यारकन्द आदि कई स्थानोंमें विद्यमान है और इनके पूर्वजोंके स्थापित किये हुये देवस्थान (जिन्हे अब 'द्वार।' कहते हैं) कई पीढियों से चले आते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाटी राजपूतों की पुरोहिताई–

यदुवंशियों में भाटीजी नाम एक बहुत बड़े नामी और प्रतापी राजा सं० ३३६ में लाहोर में हुये। उन्होंने अपने नामपर पञ्जाब में 'भटनेर' नगर बसायाथा जो अब बीकानेरके राज्यमें 'हनुमानगढ़' नामसे प्रसिद्ध है। भाटीजीकी तथा उनके ७ भाइयोंकी सन्तान राजपूतों में भाटी कहलाये। उनसे २० पीढ़ी पीछे तणोट नगरके भाटी राजा विजयराजके पुत्र कवर 'देवराज'ने शत्रुओंके हाथ मारे जानेके भयसे पुष्करणे ब्राह्मण देवायतजीके शरणमें आके रक्षा पाई तब इन्हें गुरु माना। तबसे अर्थात् भाटियों की ३६ पीढियों से उनके पुरोहित पुष्करणे ब्राह्मण देवायतजीके वंशवाले ही चले आते हैं।

पँवार राजपूतों की पुरोहिताई–

यदुवंशियों के पश्चात् पँवारों का राज्य इस देशमें फैला था तो पँवारोंने भी पुष्करणे ही ब्राह्मणों को अपने पुरोहित बनाये थे जैसे:—

ओशीयां नगर के पवार राजाओंने ४ गोत्र के तो पुष्करणे ब्राह्मणोंको भी पुरोहित मानेथे किन्तु उन पँवारों से सं०२२२में जैनी ओसवालों की जाति बनगई तो उनके पुरोहितभी उनके घर में भोजन कर लेने से "भोजग" कहलाये उन्ही के साथ ४ गोत्र वाले पुष्करणे ब्राह्मणभी मिल गये जिसका वृत्तान्त पुष्करणे ब्राह्मणों की प्राचीनता के सं० २२२ के प्रमाण में लिखा है।

उस समय जो पँवार जैनी हो जानेसे बच गयेथे उनोंने छाँगांणी जातिके पुष्करणे ब्राह्मणोंको अपने लिये पुरोहित माने थे और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खेतीके उपयोगी कुछ भूमि देकर उन्हें ओशियां नगरमें बसा लिये थे जिनकी सन्तान आजतक ओशीया नगरमें बसते हैं।

लुद्रवा नगर के पँवारोंने आचार्य जाति के पुष्करणे ब्राह्मणों को पुरोहित मानेथे। फिर कई पीढ़ी पीछे सं० ५३१ में 'काहला' नाम एक गाँव भी अपने पुरोहितों को दिया था। जिस का वृत्तान्त पुष्करणे ब्राह्मणोंकी प्राचीनताके सं० ५३१वें के प्रमाणमें लिखा है।

अमरकोट तथा घाट आदि के पँवारोंकी एक शाखा सोढा राजपूतोंने भी आचार्य जातिके पुष्करणे ब्राह्मणों को पुरोहित मानेथे सो आजतक उनकी पुरोहिताई चली आती है।

पुगलके पँवार राजाओंने छाँगाणी जातिके पुष्करणे ब्राह्मणोंको पुरोहित माने थे।

इसी प्रकार अन्यान्य पँवार राजाओं के यहां भी पुष्करणे ही ब्राह्मण पुरोहित नियत थे।

—०—

बाराह राजपूतों की पुरोहिताई—

भटिण्डेके बाराह जातिके राजपूत राजाओंने बोथा जातिके पुष्करणे ब्राह्मणों को पुरोहित मानेथे। फिर कई पीढ़ी पीछे उनके पुरोहित देवायतजीने अपने सरणमें आये हुये भाटी राजकुमार देवराजको अपना पुत्र कहकर अपने यजमान बाराह रजपूतों से बचा लिया तबसे फिर भाटियों के पुरोहित हो गये। जिस का वृत्तान्त पुष्करणे ब्राह्मणोंकी प्राचीनताके सं० ८९८में लिखा है।

—०—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुंवर राजपूतों की पुरोहिताई—

साथलमेर के तुंवर राजपूत राजाओंने छाँगाणी जातिके पुष्करणे ब्राह्मणों को पुरोहित मानेथे । और कई पीढ़ी पीछे 'बाँकना' नाम एक गाँव दत्त दियाथा वह गाँव आजतक पुष्करणे ब्राह्मणों के स्वाधीन है।

पड़िहार–ईंदा राजपूतोंको पुरोहिताई—

मण्डोर के पड़िहार राजपूत राजाओंने कपटा (बोहरा) जातिके पुष्करणे ब्राह्मणोंको पुरोहित मानेथे । परन्तु कई पीढ़ी पीछे पड़िहारों की एक शाखा ईंदा राजपूतों को कन्याओं का विवाह करा देने की दक्षिणा देने लेने में बहुत विवाद हो जाने से इन की पुरोहिताई छोप दी । इतनाही नहीं किन्तु ईंदोंके गाँव में भी नहीं जाते और जो कभी भूलसे भी चले जावें तो उस गाँव में पानी तक नहीं पीते और न ईंदोंको आशीर्वाद देते हैं ।

राठौड़ राजपूतों की गुरु पदवी—

राठौड़ कन्नौज से जब मारवाड़ में आये तो इनके पुरोहित भी वहींसे इनके साथ आये थे इस लिये पुरोहित तो उन्हीं ब्राह्मणों को रखे जो अब सेवड़ नामसे 'राजगुरु पुरोहित' प्रसिद्ध हैं । परन्तु इस देशके राजाओं के पुरोहित पुष्करणे ही ब्राह्मण सदा से रहते आये हैं इस लिये राठौड़ोंने भी पुष्करणे ब्राह्मणोंको 'राज्यगुरु' माने सो इस प्रकार मानते चले आये हैं:–

आयस्थानजीसे लेके चन्द्रसेनजी तक छाँगाणियों को
उदयसिंहजी से लेके रामसिंहजी तक नाथावत व्यासोंको,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वख्तसिंहजी से लेके विजयसिंहजी तक चण्डवाणी जोशियोंको
भीमसिंहजीके समय नाथावत व्यासों को,
मानसिंहजीके समय पुरोहित, छाँगाणी, चण्डवाणी जोशी
और नाथावत व्यासों को,
तख्तसिंहजीके समय पुरोहित, नाथावत व्यास, और चण्ड-
वाणी जोशियों को, और

यशवन्तसिंहजी से वर्तमान महाराजा सर्दारसिंहजी साहिबों के समय में चण्डवानी जोशियों को इस समय इस पदपर चण्ड-वाणी जोशी भैरूंदासजी नियत हैं और जोधपुर दरबारके गुरु होने से व्यासजी कहलाते हैं।

जोधपुर का नगर वसानेवाले राठौड़ राव जोधाजी के पुत्र 'बीकोजी' ने अपने नांवपर बीकानेरका नगर वसाके अपनी राजधानी स्थापित की तो उनही के यहां भी पुष्करणे ही ब्राह्मण गुरु भावसे पूजे गये थे। वे प्रारम्भ में तो व्यास जातिवाले थे किन्तु सं० १६७० में आचार्य जातिके पुष्करणे ब्राह्मण 'वेणीदासजी' के कथनानुसार बीकानेर का राज्य सूरसिंहजी को मिलाथा तभीसे वेणीदासजी की सन्तान इस पद पर रहती आई है। वर्तमान बीकानेर के महाराज गङ्गासिंहजी साहबों के समय में इस पद पर आचार्य गेरमलजी आदि हैं और राज्य के देरासरी होनेसे देरासरी जी कहलाते हैं।

जोधपुर के महाराजा उदयसिंहजी के पुत्र 'कृष्णसिंहजी' ने अपने नामपर कृष्णगढ़ का राज्य स्थापित किया तो वहांपर भी पुष्करणे ही ब्राह्मणोंका गुरु भावसे सत्कार होता आया है।

इसी प्रकार ईडर, रतलाम, झाबुवा, अमजरा, सीतामाऊ आदि राजा महाराजा राठौड़ वंश के होने से अपने पूर्वजों के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माने हुये पुष्करणे ही ब्राह्मणों को गुरु भावसे मान्यकर सत्कार करते आये हैं।

अर्थात् भाटी और राठौड़ राजपूतों के जहां २ राज्य और छोटे बड़े ठिकाने हैं वहां २ पुष्करणे ब्राह्मणों का पूज्य भावसे मान्यकर सत्कार होता आया है।

राठौड़ों के राजगुरु सेवड़ पुरोहितोंकी पुरोहिताई—

जोधपुर दरबार के राजगुरु जो सेवड़ जातिके पुरोहित हैं उन्होंने भी कन्नौजसे मारवाड़ में आनेपर अपने लिये उपाध्याय जातिके पुष्करणे ब्राह्मणोंको पुरोहित बनाये थे। इन सेवड़ पुरोहितों की एक शाख दमाणी' है वे जहां २ राठौड़ राजपूतों का राज्य तथा छोटे बड़े ठिकाने हैं वहाँ २ रहते हैं। इनकी संख्या अनुमान १००००० की होगी। इनमें 'तिंवरी' के पुरोहितजी पाटवी होनेसे जोधपुर दरबारकी पुरोहिताई करते हैं। उनके भी पुरोहित ओझा जातिके पुष्करणे ही ब्राह्मण हैं।

पुष्करणे ब्राह्मणों की अन्यान्य जातियों को पुरोहिताई।

इस प्रकार पुष्करणे ब्राह्मणों की प्रत्येक जाति (नख वा खांप) वाले किसी न किसी राजपूत जाति के पुरोहित थे। फिर उन राजपूतों से और कई जातियें बन गई तो वे जाति वाले भी अपनी पूर्व जाति के पुरोहित पुष्करणे ब्राह्मणों को अपनी नवीन जाति के लिये भी पुरोहित मानते रहे। जैसेः—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाटिये महाजनों को पुरोहिताई—

भाटी राजपूतोंमें से महाजन भाटियों की एक पृथक् जाति सं० १२२६ में मुलतान में बनी है। वह भी यदुवंशी होने से अपनी कुल परम्परा के कुल गुरु पुष्करणे ब्राह्मणों को गुरु भावसे पूज्य मान के सदा सत्कार करते हैं।

इन महाजन भाटियों की पृथक् जाति बनने का संक्षिप्त इतिहास यों है:—

भाटी राजपूतों का पहिले बहुत बड़ा राज्य था। अतः जैसलमेर के इलाके में भी ये बहुत वसते थे। परन्तु शत्रुओं के उपद्रव से २००० । २५०० भाटी अपना देश छोड़ के सिन्ध तथा पञ्जाब की ओर चले गये। उस समय इनके पुरोहित (कुलगुरु) पुष्करणे ब्राह्मण भी इनके साथ २ गये थे। फिर इन भाटी राजपूतोंने वहां जाके क्षत्रिय धर्म को त्याग के वैश्य धर्म (व्यापार) धारण कर लिया। इस लिये अन्य राजपूतोंने इनके साथ विवाह आदि सम्बन्ध तोड़ दिया। जिससे इनके बेटे बेटी कुँवारे ही बहुत बड़े २ हो गये थे। उनके विवाह की चिन्ता लग जानेसे इन सब भाटियों ने मुलतान में जाके ब्राह्मणों की एक सभा एकत्र करके उनसे व्यवस्था माँगी जिसका सम्पूर्ण वृत्तान्त अजाची भाट 'जसा' कृत भाटियों की 'कुल कथा' नामक ग्रन्थ में छन्दोबद्ध लिखा है। उसमें से थोड़े से छन्द यहां लिखताहूं:—

बारेसै छब्बोस. में मिले जाय इकठोर।
कीन्हों बिचार अब कहा करैं, कछु माहे में ज़ोर॥
ज्ञाति सब चिन्ता करे, अब करैं कौन उपाय।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बेटे बेटी सब रहे, नाहजु कछू उपाय ॥
क्षत्रि रीति सब छुट गई, भयो वैश्य व्यापार ।
वाको कन्या देवँ नहीं, कहा करें उपचार ॥
मुलतान में आय के, विप्र विनतो कराय ।
ब्रह्म सभा भेली भई, धर्मशास्त्र कढ़वाय ॥
हमसों विधि सब पूछि के, देखो शास्त्र विचार ।
देखी ग्रन्थ एक मतो, करी दियो निर्धार ॥
पोढ़ी दशसों पाँच गुनि, तामें एक निकास ।
तामें बाँधो गोत्र सब, करो प्रस्ताव सुवास ॥
ऊपर पोढ़ी जो रही, जात सबै जु कहाय ।
तामें करों विवाह सब, शास्त्र आज्ञा दिवाय ॥
यदुवंश में याद वभये, तिन कियो आपसमें विवार ।
बहुत पोढ़ी बीते भई, (तहं) दोष नहीं निर्धार ॥
मुलतान के मध्य में, विप्र सभा सब जोड़ ।
बाको विधि सब पूछ के, दान देत है रोड ॥
भाटिया सब भेले भये, दीन्हों दान अपार ।
नुख नाम सब बाँधके, चले जु अपने द्वार ॥
ब्राह्मण कुलकी जाति में, पोकरना जु कहाय ।
तुलसी लोन्हो हाथमें, तुम हम गुरु जु कहाय ॥
सिन्ध, कच्छ, हालारमें, और सबै ही ठौर ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जहंजहं जाति विराजही ता पठवे सब ओर ॥

उन भाटी राजपूतों ने ब्राह्मणों से पूछा कि हे ब्राह्मणो ! अब हम अपना निर्वाह कैसे करें ? तब ब्राह्मणोंने कहा कि धर्म शास्त्र के अनुसार अपनेसे ७ सपिण्ड अर्थात् ४९ पीढ़ी तक का वंश छोड़कर फिर परस्परमें विवाह करने को दोष नहीं है तभी तो पूर्व काल में यदुवंशियोंने परस्परमें विवाह किये थे। जैसे यदुराज श्रीकृष्णचन्द्र महाराजने सतराजित यादव की कन्या सतभामा से विवाह किया था। अतः तुमभी अपने २ से ४९ पीढ़ी ऊपर वाले पुरुष के नाम से गोत्र बांधकर विवाह करलो ऐसी आज्ञा देदी। तब ये अपनी नवीन जाति तथा पृथक् २ गोत्र बना के वहां से पीछे विदा होते समय सम्पूर्ण ब्राह्मणों को बहुत सा दान दिया और अपनी वंशपरम्परा के पुरोहित (कुल गुरु) पुष्करणे ब्राह्मणों को सदा के लिये अपनी जाति के गुरु माने परन्तु उस आपत्काल में जिन २ जातिवाले पुष्करणे ब्राह्मणोंने जिन २ भाटियों का सङ्ग नहीं छोड़ा था उन २ भाटियोंने अपने २ वंशके लिये उस २ जाति के पुष्करणे ब्राह्मणों को विशेष करके पुरोहित (कुलगुरु) नियत किये। जैसेः—

भाटियों की जाति में से २८ जातिवाले तो पुष्करणों की जातिमें से पणियों को, २५ जातिवाले हरषों को, १३ जातिवाले केवलियों को, २ जातिवाले लुद्रों (कल्लों) को, २ जातिवाले ढाकियों को, २ जातिवाले आचारजों को, १ जातिवाले वासुओं को, १ जातिवाले पुरोहितों को, १ जातिवाले बोड़ों को, १ जातिवाले थानवियों को, १ जातिवाले वासुओं को और ७ जातिवाले अन्याय जातिके पुष्करणे ब्राह्मणों को अपने पुरोहित मानते सो आज तक वैसेही मानते चले आये हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महेश्वरी महाजनों की पुरोहिताई–

इसी प्रकार कई जाति के राजपूतों के एकत्र मिलने से 'महेश्वरी नामक महाजनों की एक जाति बनी है। उनमें के कई एक राजपूतों के पुरोहित पुष्करणे ही ब्राह्मण थे अतः उन राजपूतों की सन्तान महाजन महेश्वरियोंने भी अपने वंशवालों के लिये पुष्करणे ही ब्राह्मणों को पुरोहित माने थे सो आज तक उनके वंशवाले भी वैसे ही मानते चले आये हैं। जैसेः—

'डाहरु' जाति के राजपूत से 'हुरकट' नाम की जाति बनी है जिस को हुरकट, भोलाणी, कयाळ और चौधरी नामक ४ शाखाएं हो गई। वे सब वटु जातिके पुष्करणे ब्राह्मणों को पुरोहित मानते हैं।

'निर्वाण' जाति के राजपूत से 'वाहेती' नामकी जाति बनी है जिसकी खडलोया और वाहेती नामक शाखावाले तो छाँगाणियों को, मछुडं नामक १ शाखावाले विशों को और मुसाण्या नामक १ शाखावाले चोहटिया जोशी जाति के पुष्करणे ब्राह्मणों को पुरोहित मानते हैं।

'पँवार' जाति के राजपूत से 'राठी' नाम की जाति बनी है जिसको मालाणी, खटमल, कछाणी महोता, सालाणी आदि १६२ शाखाओं हो गई वे सब छाँगाणी* जाति के पुष्करणे ब्राह्मणों को पुरोहित मानते है।

'पँवार' जाति के राजपूत से विदुहला (वडला) नाम

---

* छाँगाणियों की जातिमें चार स्थंभा हैं १ छाँगाणी, २ कोलाणी, ३ गंढाडिया, और ४ देराशरी। इन चारों ही स्थम्भोंवालों की पुरोहिताईका एकसा अधिकार है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की जाति बनी है जिन की गोड्या और छुर्या नामक २ शाखाएं हो गई। उनके पुरोहित प्रथम तो पुरोहित जाति के पुष्करणे ब्राह्मण थे। फिर उन्होंने अपनी विरत अपने भानजे विशा जातिवालों को देदी तब से वे विशा जातिके पुष्करणे ब्राह्मणों को पुरोहित मानते हैं।

'भाटी' जाति के राजपूत से 'माल पाणी' नामकी जाति बनी है जिसकी माल पाणी, मूथा, मोदी, जूँहर, लुलाणी, लोलण और भूरा नामक ७ शाखाएं हो गईं वे सब छाँगाणी जातिके पुष्करणे ब्राह्मणों को पुरोहित मानते हैं।

'पँवार' जाति के राजपूत से 'पडताणी' नाम की जाति बनी है जिसकी पडताणी, पुण्य पालिया और दागड़िया नामक ३ शाखाएं हो गईं इनके भी पुरोहित प्रथम तो पुरोहित जाति के पुष्करणे ब्राह्मण थे। उन्होंने अपनी विरत अपने भानजे विशा जातिवालों को देदी तब से वे विशा जाति के पुष्करणे ब्राह्मणोंको पुरोहित मानते हैं।

'चौहान' जातिके राजपूत से 'सारड़ा' नामकी जाति बनी है जिसकी केला सारड़ा और सेठी सारड़ा आदि शाखाएं हो गईं वे वासू जातिके पुष्करणे ब्राह्मणों कों पुरोहित मानते हैं।

'पँवार' जातिके राजपूत से 'सिकची' नाम की जाति बनी है वह चोहटिया जोशी जाति के पुष्करणे ब्राह्मणों को पुरोहित मानती है।

'झाला (मकवाणा)' जाति के राजपूत मालदेजी के बेटे हमीरजी से 'टावरी' नाम की जाति लुद्रवा नगर के भाटी राजा मुन्धजीने अपने दीवान महेश्वरी पुरुषोत्तमदास मलु की बेटी व्याह के सं० १०३० के लगभग में बनाई है और हमीरजी के सुसराल-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वालों के पुरोहित विशा जाति के पुष्करणे ब्राह्मण थे इस लिये टावरियोंने भी उन्हीं के पुरोहितों को अपने लिये पुरोहित मानेथे सो आज तक वैसे ही मानते चले आये हैं।

अग्रवाल महाजनों की पुरोहिताई–

मारवाड़में के गोयल गोती अग्रवाले विशा जातिके पुष्करणे ब्राह्मणों को पुरोहित मानते हैं।

इसी प्रकार किराड़ वाणिये, रत्नू चारण, काले सुनार, सई सूथार, सेवग (भोजक) ब्राह्मण आदि और और कई जाति वाले भी पुष्करणे ब्राह्मणों को पुरोहित मानते हैं।

पुष्करणे ब्राह्मणों के पुरोहित भी पुष्करणे ही ब्राह्मण।

ब्राह्मण परस्पर में भोजन कराते और करते हैं, परस्पर में पूजते और पुजाते हैं, परस्पर में दान देते और लेते हैं, अतः परस्पर में एक दूसरेको तारते हैं और आप भी तर जाते हैं। इस में 'संवर्तस्मृति' का यह प्रमाण है यथाः–

अन्योन्यान्नप्रदा विप्रा अन्योन्य प्रतिपूजकाः।
अन्योन्यं प्रतिगृह्णन्ति तारयन्ति तरन्ति च॥

इसी लिये ब्राह्मण परस्पर में भोजनादि करते कराते हैं परन्तु भोजनादि करानेमें भी अन्य ब्राह्मणो की अपेक्षा स्वजाति के ब्राह्मणों का विशेष फल बताया है और स्वजातिमें भी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपने सवासनों (दोहितों वा भानजों) को अत्यन्त पूजनीय माने हैं। अतः ब्राह्मणों में पुरोहिताई आदि कार्य अपने २ सवासनों से करवाते हैं। इसी नियमानुसार पुष्करणे ब्राह्मणों में भी अपने सवासनों को पुरोहित मानने की प्राचीन प्रथा है। परन्तु कालपाके फिर वही प्रथा ही स्थिर हो गई। जैसेः—

सिन्ध देशके 'आशनी कोट' नामक गाम में पुरोहित जाति के एक पुष्करणे ब्राह्मणने अपनी 'मण्डी' नामकी कन्या 'खीमन नामके एक ओझा जाति के पुष्करणे ब्राह्मण को व्याही थी। उसके जो पुत्र हुये उनको अपने वंशवालो के लिये पुरोहित बनाये। और उस मण्डीका नाना आचार्य जाति का पुष्करणा ब्राह्मण था उसने भी अपनी दोहिती के पुत्रों को अपने वंशवालों के लिये पुरोहित बनाये। येदोनों पुरुष प्रतिष्ठित थे इस लिये पुरोहितों के सगोत्री गजा आदिने और आचार्यों के सगोत्री कपटा (बोहरा) आदिनेभी उन्हींको पुरोहित मान लिये।

ऐसे ही जैसलमेर के एक प्रतिष्ठित व्यासजीने भी अपनी 'वाली' नामको कन्या विशाजाति के एक पुष्करणे ब्राह्मण को व्याही थी और उसके पुत्रों को अपने वंशवालों के लिये पुरोहित बनाये थे।

इसी प्रकार अन्यान्य जातिवाले पुष्करणे ब्राह्मणोंने भी अपने२ वंशवालो के लिये पुरोहित अपने२ सवासनोंको बनाये थे। यही नहीं वरञ्च पुष्करणे ब्राह्मणों की जातिमें से निकल कर जो किसी कारणसे अन्य जातियों में मिल गये हैं उन्होंने भी अपनी पूर्व जातिके सवासने पुष्करणे ही ब्राह्मणों को अपनी नवीन जातिके लिये भी पुरोहित बनाये हैं। जैसे पुष्करणे ब्राह्मण पुरोहित रत्नूसे चारणों की जातिमें रतनू नामक जाति बनी है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उसनेभी अपनी पूर्व पुष्करणा जाति के सवासने (अपने भानजे) 'सज्जोजी' नामक चोहटिये जोशी को अपनी नवीन चारण जाति के लिये पुरोहित बनाया था सो आजतक रत्नू चारणों के यहां भी पुरोहिताई पुष्करणे ब्राह्मण चोहटिये जोशियों की चली आती है। (देखो रिपोर्ट मर्दुमशुमारी राज्य मारवाड़ के भाग तीसरे का पृष्ठ १६१)

अतः पुष्करणे ब्राह्मणों के पूर्वोक्त सवासनों की सन्तान-वाले आजतक सिन्ध, कच्छ, जैसलमेर, फलौधी, पोकरण, जोधपुर, नागौर मेड़ता, बीकानेर आदिके पुष्करणे ब्राह्मणों की पुरोहिताई करते आये हैं। परन्तु जोधपुर इलाके में पुष्करणे ब्राह्मणों की पुरोहिताई करनेवाले पुष्करणे ब्राह्मणों के घर बहुतही थोड़े होनेसे अपने सम्पूर्ण यजमानों की पुरोहिताई करने में पूरा नहीं आसकने के कारण अपनी ओर से कर्म कराने की दक्षिणा (महनताना) ठहराके श्रीमाली ब्राह्मणों से करा देते हैं किन्तु पुरोहिताई का जो नेग मिलता है उसे तो वे स्वयं-ही लेते हैं। इसके उपरान्त जिन २ पुष्करणे ब्राह्मणों की पुरोहिताई करनेवाले पुष्करणे ब्राह्मण कहीं पर हाज़िर नहोंतो वहां के वे २ पुष्करणे ब्राह्मण भी कर्म तो दक्षिणा दे के श्रीमालियोंसे करा लेते हैं किन्तु पुरोहिताई का नेग अपने सवासनों को देते हैं।

इसके उपरान्त मृतक का तीसरा, नवां, एकादशा, द्वादशा आदि प्रेतकर्म मारवाड़ भरमें पहिले महा ब्राह्मण (जो अब आचारजिया वा कारटिया नामसे प्रसिद्ध हैं वे) कराते थे। परन्तु वे लोग कर्म करानेकी दक्षिणा लेने में बहुतही कष्ट देते थे। इस बातको देखकर पुष्करणे ब्राह्मण 'श्रीपान् नाथाजी व्यास'ने सं०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१६८० के लगभग अपनी ओरसे उन महा ब्राह्मणों को सहस्रो रुपये दे के लोगों का कष्ट मिटा दिया और प्रेतकर्म कराने के लिये श्रीमाली ब्राह्मणोंको नियत किये क्योंकि मारवाड़ के ब्राह्मणों में कर्म कराने का पेसा करनेवाले प्रायः श्रीमाली ब्राह्मण ही हैं। तबसे पुष्करणों के यहां भी प्रेतकर्म श्रीमाली ब्राह्मण कराते हैं*

* इस प्रकार मारवाड़में जिन २ पुष्करणे ब्राह्मणोंके यहां कर्म करानेवाले जो श्रीमाली ब्राह्मण हैं वे उन २ पुष्करणोंको अपने २ यजमान समझके आशीर्वाद देने लगगये और वे पुष्करणे भी अपने २ कर्म करानेवालों कों आचार्य समझकर पगे लागना करने लगगये हैं। इस बात को देखकर कितनेक अन्यान्य भी अनभिज्ञ श्रीमाली लोग पुष्करणोंकी समग्र जातिही को अपने यजमान होनेका ख़याल करने लगगये हैं। किन्तु ऐसा ख़याल करनेवालों की बड़ी भारी भूल है। क्योंकि:—

प्रथम तो सिन्ध, कच्छ, गुजरात, मारवाड़, पञ्जाब आदिमें पुष्करणे ब्राह्मणों के घर अनुमान २०००० होंगे जिनमें केवल मारवाड़ इलाके के ३००० । ४००० ही घरवालों के यहां श्रीमाली कर्म कराते हैं न के सर्व देशों में। दूसरे जो कर्म कराते भी हैं तो पुष्करणोंके प्राचीन पुरोहित जो पुष्करणेही हैं उनकी आज्ञासे अथवा उनके अभावमें उन्हींके प्रतिनिधि बनके कराते हैं न के अपने स्वाधिकार से। तीसरे मारवाड़ में श्रीमालियोंके घर सहस्रोही हैं उनमें पुष्करणों के यहां कर्म कराने के लिये तो केवल १०। २० ही घर नियत हैं न के उनकी सर्व जाति। तो फिर क्योंकर सम्पूर्ण श्रीमाली अपने को पुष्करणों की समग्र जातिके पुरोहित वा कर्म करानेवाले कुलगुरु समझ सकते हैं? यदि इतनीसी बातही से एसा मानना पड़े तबतो फिर ऐसे तो कई श्रीमाली भी तो पुष्करणोंके शिष्य बनके उनसे ज्योतिष्, वैद्यक, व्याकरण आदि विद्याए पढ़ते

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परन्तु महा ब्राह्मणों सें कर्म छुड़ा देनेपर भी नाथाजीने उनका कुछ नेग नियत कर दिया था वह तो अब तक जारी है। देखो रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़के तीसरे भागके पृष्ठ १८१)

पुष्करणे ब्राह्मणो को तीर्थ पुरोहिताई।

सिन्ध और कच्छ देशोंके बीचमें समुद्रके किनारेपर 'नारायण सरोवर' नामका एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। पूर्वकाल में इन देशोंमें यदुवंशियों का राज्य होनेसे इस तीर्थ पर यदुवंशी भी अधिकतासे आते थे। अतः अपनी तीर्थयात्रा सफल करानेके लिये अपने पुरोहित पुष्करणोंको भी साथ २ ले आते थे। फिर अन्त में कई पुष्करणे ब्राह्मण वहीं पर बस गये तब से उनकी सन्तानवाले नारायण सरोवर पर आनेवाले अपने यजमानों की तीर्थ पुरोहिताई आजतक करते आये हैं।

पुष्करणे ब्राह्मण राज्य विद्यागुरु।

राजकुमारों को विद्या पढानेके प्रारम्भ का मुहूर्त तो जो पुष्करणे ब्राह्मण राज्य ज्योतिषी हैं वे नियत करते हैं परन्तु विद्या पढ़नेका प्रारम्भ भी सबसे प्रथम तो जो पुष्करणे ब्राह्मण राज्य विद्यागुरु हैं उन्ही से करते हैं।

इस इदपर बीकानेर के राज्य में तो सदा से रङ्गा जातिके

हैं तो इससे क्या पुष्करणोंकी भी समग्र जातिही को श्रीमालियोंकी सम्पूर्ण जातिही का गुरु मानना पड़ेगा ? नहीं। क्योंकि ये दोनों सम्बन्ध समस्त जाति भरके साथ नहीं किन्तु व्यक्ति विशेष के हैं। अतः नतो सम्पूर्ण श्रीमाली समग्र पुष्करणों को अपने यजमान समझ सकते हैं और न सम्पूर्ण पुष्करणेभी समग्र श्रीमालियों को अपने शिष्य समझ सकते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्करणे ब्राह्मणही नियत हैं किन्तु जैसलमेर जोधपुर में ऐसे एक जातिवाले नियत नहीं है परन्तु जिस समय इस पदपर जो नियत होते हैं उन्ही के पास विद्याभ्यास करवाते हैं।

पुष्करणे ब्राह्मण राज्य कथा व्यास।

इस जातिमें जैसे वेदोंका प्रचार हैं वैसेही मन्वादि धर्मशास्त्रो, महाभारतादि इतिहासों और भागवतादि पुराणों काभी प्रचार है। इस लिये मारवाड़ देशमें धर्मके उपदेशक भी बहुधा पुष्करणेही ब्राह्मण हैं। जैसलमेर जोधपुर बीकानेर के महाराजाओ के राज्य मन्दिरों में तथा इन राज्यों के अन्तरगत के छोटे बड़े जागीरदारों के मन्दिरों में प्रतिदिन कथा बाचने के लिये सदासे पुष्करणेही ब्राह्मण नियत हैं। इसके उपरान्त अपन अन्यान्य यजमानों के यहां भी कथा बाचते है और वंश परम्परा से कथा बाचनेवालोंकी उपाधि भी 'कथा व्यास' के नामसे प्रसिद्ध हो गई है।

पुराणादिक शास्त्रों का पाठ करनेवालों को व्याकरण कोष काव्य अलङ्कार छन्द आदि अन्यान्य ग्रथभी पढ़ने पड़ते हैं अतः पुष्करणे ब्राह्मण भी इन ग्रन्थों के बडे विद्वान पूर्ण ज्ञाता पण्डित होनेसे नाना प्रकार की उपाधियोंसे विभूषित हैं।

पुष्करणे ब्राह्मण राज्य पुस्तकाध्यक्षः।

राजाओ के यहां प्राचीन हस्त लिखित पुस्तकोंका सङ्ग्रह सदासे रहता आया है और मारवाड़के ब्राह्मणों में बहुधा पुष्करणे ब्राह्मण ही विशेष विद्वान होते हैं अतः राज्य के 'पुस्तका-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लय' का प्रबन्ध करने के लिये प्राय पुष्करणे ही ब्राह्मणों को नियत करते हैं। अतः बहुत समयसे जोधपुर दरबार के यहां पुरोहित जाति के पुष्करणे ब्राह्मण ही राज्य पुस्तकाध्यक्ष हैं।

पुष्करणे ब्राह्मण राज्य दानाध्यक्षः।

राजाओंके यहां नित्य और नैमित्य समयमें यथायोग्य दान किया जाता है। उस दानको लेनेवाले तो अनेकानेक ब्राह्मण आते हैं उन्हीं को दिया जाता है परन्तु दान का संकल्प करानेवाले 'दानाध्यक्ष' सदासे सदा से पुष्करणे ही ब्राह्मण हैं। इस समय जैसलमेर दरबार के यहां तो उन्हीं के पुरोहित, बीकानेर दरबार के यहां कीकाणी व्यास और जोधपुर दरबार के यहां व्यास पदवी-वाले चण्डवाणी जोशी हैं।

पुष्करणे ब्राह्मण राज्य के जोशी वेदिया।

राजाओं के यहां शान्ति, पूजा, पाठ, मन्त्र अनुष्ठान आदि करने के लिये प्राय पुष्करणे ब्राह्मण भी सदासे नियत रहते हैं और आवश्यकता पडनेपर उपरोक्त कर्म करने के लिये उन की बरणी बिठलाई जाति है। उस समय वर्ण दक्षिणा तथा कर्म दक्षिणा देने के उपरान्त उन्हें प्रतिदिन इच्छा भोजन भी कराते हैं। ऐसे कर्म करने का प्रचार जोधपुर की अपेक्षा जैसलमेर तथा बीकानेर के राज्यों में अधिक है।

पुष्करणे ब्राह्मण राज्य ज्योतिषी।

इस जाति में ज्योतिष विद्या का प्रचार सदासे चला आता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है जिसके प्रतापसे भूत भविष्य और वर्तमानका चमत्कार कई राजा महाराजाओं को दिखलाया है। और कईयोंने तो देवताओं को भी चकित किये थे (जैसेः—चोवटिया जोशी परवरजीने शुक्र और बृहस्पतिजी को तथा लुद्र (कल्ला) ब्रह्मदत्तजीने शुक्रजीको इत्यादि)

जैसलमेर के भाटी महाराजाओं के वंश परम्पराके पुरोहित राघोजी बडे विद्वान थे उनके पुत्र चण्डूजी तो साक्षात भास्कर का अवतार ही हुये। वे जोधपुर के राव मालदेजी जो जैसलमेर परणे थे उनके साथ जोधपुर आ गये। फिर उनोंने अपने नाम का 'चण्डू पञ्चाङ्ग' सं० १५८८ में निकाला था सो आजतक उनके वंशवाले प्रतिवर्ष बराबर बनाते आये हैं। इस भारतदेश में जितने पञ्चाङ्ग प्रकाशित होते हैं उनमें प्राचीन व प्रतिष्ठा प्राप्त यही एक चण्डू पञ्चाङ्ग ही गिना जाता है। चण्डूजीने ज्योतिष के कई अद्भुत ग्रन्थ बनाये थे जो उनके वंश वालोंके पास विद्यमान हैं। चण्डूजी के वंशवाले भी बड़े २ विद्वान हुये हैं और ज्योतिष विद्या के प्रभाव से जोधपुर के महाराजाओं से कईयोंने प्रतिष्ठा प्राप्त की है।

जैसलमेर में व्यास अचलदास जी भी बड़े विद्वान ज्योतिषी हुये थे। उन की फलित विद्या इतनी प्रबलथी कि उस समय में उनकी बराबरी करनेवाला इस प्रान्तभरमें सायतही कोई हुआ होगा।

बीकानेर में भी किराडू किस्तूरचन्दजी आदि नामी विद्वान हुये थे जिन से ईन्दोर प्रान्त के कई दक्षिणी ब्राह्मणों ने विद्याध्ययन की थी।

मरहट्टों के राज्य सासनकाल में एक कल्ला जातिके पुष्करणे ब्राह्मणने मरहट्टो के सेनापति को युद्ध के समय ज्योतिष का च-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मत्कार दिखलाया था जिस से प्रसन्न होके 'माँगलियावास' नामका एक गाँव, जो अजमेर के इलाके में है, दिया था; सो आज तकउनकेवंशवाले पुष्करणे ब्राह्मणोंकी स्वाधीनतामें चला आता है।

बड़ौदाके महाराजा गणपतराव गायकवाड़को चण्डवाणी जोशी 'ज्येष्ठमलजी' ने ज्योतिष् के फलित के कई वार अद्भुत२ चमत्कार दिखलाये थे, जिस के प्रभावसे उनको लाखो ही रुपये मिले थे। वे भी उन रुपयों को ब्राह्मण भोजन कराने आदि ही में लगा देते थे। आजतक उनकी सन्तानको भी बड़ौदेके राज्यसे कुछ वार्षिक मिलता है।

इसी प्रकार कइयोंसे पुष्करणे ब्राह्मणोंको गाँव, कुँए, खेत आदि मिले हैं। और जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, आदि की रियासतों में 'राज ज्योतिषी' के पद पर पुष्करणे ही ब्राह्मण नियत हैं।

पुष्करणे ब्राह्मण राज्य वैद्य।

इस जातिमें आयुर्वेद विद्या भी परम्परा से चली आती है। इस के प्रतापसे बादशाहों के समयमें भी जागीरें मिली थीं, जिनका संक्षिप्त वृत्तान्त टंकशाली व्यास लल्लूजी व व्यास देवऋषिजी के इतिहास में लिखा गया है। इस के उपरान्त अन्यान्य राजाओंसे मिली हुई जागीरें तो अब तक विद्यमान हैं।

जोधपुर के राव जोधाजी के पुत्र बीकाजी अपना राज्य पृथक् स्थापित करने के लिये 'जाङ्गलु' देशकी ओर गये तो वहां 'कोडमदे सर' नामक एक गाँवमें ठहरे थे। वहांपर उनकी महाराणी आसन्न प्रसुता होने के कष्टसे बहुतही अधिक पीड़ीत थी। उस समय जैसलमेर के राजवैद्य व्यास देवऋषिजी के पुत्र 'जू-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ठाजी' तीर्थयात्रा को जाते हुये वहांपर आ गये। उन्होंने तत्काल महाराणी को उस कष्टसे मुक्त किई, जिस से प्रसन्न हो के बीकाजीने बीकानेर का राज्य स्थापित होनेपर उनको एक गाँव दिया था, सो आज तक उनकी सन्तान की स्वाधीनतामें है। और वेही जूठाणी व्यास बीकानेर दरबार के यहां राज्यवैद्य हैं।

इसी प्रकार जैसलमेर, जोधपुर आदिमें 'राज्यवैद्य' के पद पर भी पुष्करणे ही ब्राह्मण हैं।

पुष्करणे ब्राह्मण राज रक्षक।

जिस प्रकार जैसलमेर के भाटी महाराजाओं के पूर्वज भाटी देवराजजी को पुष्करणे ब्राह्मण देवायतजी व उन के पुत्र रत्नू ने प्राण रक्षा किई थी। उसी प्रकार जोधपुर के राठौड़ महाराजों के पूर्वज महाराजा यशवन्तसिंहजी के बालक पुत्र अजितसिंहजी की रक्षा भी पुष्करणे ब्राह्मण पुरोहित जयदेवजीने किई थी।

यशवन्तसिंहजी के काबुल में देहान्त हो जाने पर उनकी एक गर्भवती राणी उनके साथ सती न होने दिई जाने पर पीछी मारवाड़ को लौट रही था। मार्ग में लाहोरमें उनके गर्भसे अजितसिंहजी का जन्म हुआ। राठौड़ इन्हें जोधपुर का राज्याधिकारी बनाने के लिये दिल्ली ले गये। किन्तु बादशाहने स्वीकार न करके पकड़ने को इन्हें घेर लिये। उस समय उदयसिंहजी कूँपावत दुर्गादासजी करनसोत व गोइन्ददासजी खीची आदि की सम्मति से अजितसिंहजी घेरे में से निकाल लिये गये, जिन्हें पुरोहित जयदेवजीने आबू के अन्तर्वर्त्ती छप्पन के पहाड़ों में ले जाकर अपनी स्त्रीको सौंप के ७ वर्षों तक तो वहां पर पालन किया।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फिर पीछे मारवाड़ में लाये। और इधर मारवाड़का अधिकार कर लेनेवाली बादशाही सेनासे ठाकुर देवीदासजी चाँपावत आदि राठौड़ोंने कई वर्षों तक बड़ी वीरता से लड़कर मारवाड़ का खोया हुआ राज्य पीछा महाराजको दिलाया। उस समय महाराजने भी उक्त दुर्गादासजी आदि स्वामि भक्त वीरोंका बड़ा सत्कार किया और पुरोहित जयदेवजी के पुत्र 'जग्गूजी'को 'श्री पुरोहितजी'की पदवी दी और 'भाई' कहकर पुकारते थे तथा जागीर में गाँव भी दिये थे। उस समय महाराज अजितसिंहजीने अपने निज हस्ताक्षरों का एक ख़ास रुक्का सं. १७७० में लिख दिया था जिसमें यह एक दोहा लिखा है:—

माता म्हारी थावरी. पिता प्रोत प्रमाण ॥
जन्म लियो जसवन्त घर, जोध तिलक जोधाण ॥१॥

अर्थात् मैं (जोधपुर के महाराजा अजितसिंह) ने यद्यपि जन्म तो महाराज यशवन्तसिंहजी के घरमें लिया है, परन्तु यथार्थ में मेरी रक्षा करनेवाले पिता तो पुरोहित (पुष्करणे ब्राह्मण 'जयदेवजी') ही हैं, और मेरी पालन करनेवाली माता उनकी 'थावरी' नामकी स्त्री है। (देखो रिपोर्ट, मर्दुमशुमारी, राज्य मारवाड़, के भाग तीसरे का पृष्ठ १८३).

—※—

पुष्करणे ब्राह्मण राज्य भक्त ।

मारवाड़ के राठौड़ राव जोधाजीने सं० १५१५ के ज्येष्ठ सुदि १५ को अपने नामपर जोधपुर नगर बसाके पर्वत पर क़िलेकी नींवदी। उस पर्वतपर 'चिड़ियानाथजी' नामी एक सिद्ध पुरुषको जो तपस्या करते थे उनको वहांसे हटा दिये, जिससे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्रोधित होके उन्होंने क़िला न बन सकने आदि का श्राप दे दिया। अन्त में उस श्रापको मिटानेके लिये एक जीते हुए मनुष्यको क़िले की नींवमें गाडनेकी आवश्यकता आ पड़ी, तो एक पुरोहित जाति का पुष्करणा ब्राह्मण प्रसन्नता पूर्वक जीता हुआ ही क़िलेकी नींवमें गड़ गया, तब उसके ऊपर क़िला बन सका इससे प्रसन्न होके राव जोधाजीने उनके भाई को अपना गुरु बना के 'व्यास' पदवी तथा गांव दिया था। (देखो रिपोर्ट, मर्दुम शुमारी, राज्य मारवाड़, के तीसरे भागका पृष्ठ १८३)

पुष्करणे ब्राह्मण राज प्रतिनिधि।

जोधपुर के महाराजा गजसिंहजी के क्रोधित हो जाने से उनके ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंहजी शाहजहाँ बादशाहके पास चले गये थे। बादशाहने इनको नागौरका पृथक् राज्य दे दिया। किन्तु एक समय उन्होंने आगरेमें बादशाहके कृपापात्र बख़्शी सलावतख़ाँ को तकरार हो जाने के कारण सरे दरबार मार डाला और अपने डेरेको प्रस्थान कर दिया। किन्तु गढ़ का द्वार तत्काल बन्द कर देने से खिड़की तोड़कर बाहर निकलना ही चाहते ही थे कि उन्हीं के साथी और साले होने पर भी अर्जुन गौड़ ने बादशाहका कृपापात्र बनने के लिये पीछेसे खड्ग चलाके उन्हें मार दिया। फिर बादशाहने उनके शरीरकी दुर्दशा करनी चाही किन्तु उनके डेरेके सब राठौड़ बल्लूजी चाँपावत व भाऊजी कूँपावत नाम अपने मुख्य दो सरदारों सहित गढ़पर चढ़ आये और द्वार तोड़ के अमरसिंहजी के कलेवर (शव) को निकाल लाये। फिर अर्जुन गौड़ के डेरे पर चढ़ धाये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिस की मदद को बादशाही सेना भी आई थी उस समय राजाके अभावमें उनकी राणीकी आज्ञा से अमरसिंहजी के गुरु व्यास गिरिधरजी राठौड़ोंके सेनापति बनकर हाथी पर बैठ के लड़े। अन्तमें सं १७०१ के श्रावण सुदि १। २। ३ तक बड़ी वीरतासे लड़के उन दोनों सरदारों सहित काम आये। अतः उनकी सन्तानवाले (गिरिधरोत व्यास) श्रावण सुदि १। २। ३ को यद्यपि उनको वीरताका उत्सव तो अब तक करते हैं किन्तु उस दिनका 'छोटी तीज' का त्यौहार नहीं मनाते। (देखो रिपोर्ट, मर्दुम शुमारी, राज्य मारवाड़, का पृष्ठ १८२)

पुष्करणे ब्राह्मण राज्य सहायक।

जोधपुर के महाराजा अजितसिंहजी को और जयपुर के महाराजा जयसिंहजी को बादशाहके ख़िराज के रुपये देने थे सो, कुछ अवधि में रुपये भेजनेका प्रण करके, दिल्लीसे अपने२ राज्य में चले आये। और रुपये पहुँचने तक अपनी एवज़ में जोधपुर के महाराजा तो पुष्करणे ब्राह्मण पुरोहित जग्तूजीके ज्येष्ठ पुत्र शिवकृष्णजी को और जयपुर के महाराजा अपने श्रीजीके महन्तजीको सौंप आये। निदान पीछेसे शिवकृष्णजीने अपनी बुद्धिमानी से बादशाह को ऐसा प्रसन्न कर दिया कि इन दोनों राज्यों के ख़िराज के कई लाख रुपये क्षमा करवाके स्वयं भी जोधपुर चले आये और अति समय जयपुर के महन्तजीको भी साथ लेते आये। इससे प्रसन्न होके जयपुर के महाराजाने शिवकृष्णजी को रु. १२०००) की जागीरका चकवाड़ी नामक गांव जागीरमें लिख दिया था।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्करणे ब्राह्मण राज्य बोहरे ।

जोधपुर के महाराजा राजायसिंह जीके पुत्र उदयसिंहजी अपने पिताकी आज्ञा से फलौधी में रहते थे। उस समय मलार नामक गांव में रहनेवाले कपटा जाति के पुष्करणे ब्राह्मण शेऊजीने उन्हें कई लाख रुपये दिये थे। फिर जब उदयसिंहजी जोधपुर के राजा हुये तो शेऊजीको बोहरा की पदवी देकर जोधपुर बुलाये। परन्तु उन्होंने स्वयं तो अपना घर छोड़ कर आना स्वीकार नहीं किया किन्तु महाराज के बहुत आग्रह करनेसे अपने भानजे व्यास भोजाजी, गांगाजी तापोजी व चोहटिया जोशी गोपालदासजी को जोधपुर भेज दिये। महाराजाने इनमें व्यास भोजाजी को तो अपने गुरु और अन्यों को अपने मुसाहिब बनाये। कपटा शेऊजीकी सन्तान तब से बोहरा कहलाती है। (देखो रिपोर्ट, मर्दुम शुमारी, राज्य मारवाड़, के भाग तीसरे का पृष्ठ १८५)

ऐसे ही जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी को चण्डवाणी जोशी श्री कृष्णजीने भी कई लाख रुपये उधार दिये थे।

इसी प्रकार जैसलमेर तथा बीकानेर के महाराजाओंको भी आवश्यकता पड़नेपर पुष्करणे ब्राह्मणोंने रुपयोंकी सहायता के अतिरिक्त इस देश के छोटे बड़े जागीरदारों दी है।

—o—

पुष्करणे ब्राह्मण राज्य हितेच्छु ।

जोधपुर के महाराजा विजयसिंहजी को मरहट्टों के खिराज के कई लाख रुपये देने थे सो जमा कराने के लिये

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपाध्याय जातिके एक पुष्करणे ब्राह्मणकों रुपये दे के पूने भेजा । किन्तु उसने वहां जाके देखा कि अंग्रेज़ों के साथ उनका युद्ध हो रहा है। अतः वह बुद्धिमान् उस समय रुपये देने उचित न जान कर युद्धका अन्तिम फलाफल (अख़ीर नतीजा) देखने तक वहां पर ठहर गया; और अन्तमें जब मरहट्टों की हार हो गई तब रुपये बचाके पीछा लौट आया । इससे प्रसन्न होके महाराजने उन्से एक ग्राम पट्टे में लिख दिया था ।

पुष्करणे ब्राह्मण राज्य मुसाहिब ।

यदुवंशियों से लेके राठौड़ वंशके राजा महाराजाओं के इतिहासों स तथा पुष्करणे ब्राह्मणों के वृत्तान्तों से स्पष्ट सिद्ध होता है कि पुष्करणे ब्राह्मण पूर्वोक्त राजाओंके यहां राज्य पुरोहित, राज्यगुरु आदि ब्राह्मणों के करने योग्य ही कार्य करते आये हैं । हां राज्य कार्य में भी बड़े दक्ष (चतुर) होनेसे समय २ पर राज्याधिकार के भी कार्य करके अपने राजाओं को हर-एक प्रकार से सहायता पहुँचाते थे । यद्यपि सदैव ही राज्यका अधिकार भोगनेपर ब्रह्मकर्मकी शिथिलता हो जानेके भयसे बहुधा राज्याधिकार के कार्यों से अपने को बचाते थे परन्तु तथापि रात दिन राजाओं के संसर्गसे राज्याधिकारके कार्य करनेमें भी प्रवर्त्त हो गये । यहां तक कि अब तो मारवाड़ में राज्यका ऐसा कोई विरला ही विभाग (महकमा) होगा कि जिस में पुष्करणे ब्राह्मण न हों, और ऐसे कोई विरले ही पुष्करणे ब्राह्मण होंगे कि जिनका कुछ भी सम्बन्ध राज्यसे न हो । अर्थात् राज्य के साधारण से साधारण ओहदेसे लेके आला दर्जेके रा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्यमन्त्री, दीवान, क़िलेदार, फ़ौज बख़शी, ख़ज़ाञ्ची तथा परगनों के हाकिम आदि प्रत्येक ऊँचे पदपर रहते आये हैं। अतः पुष्करणे ब्राह्मणों की जाति राज्य पुरोहित तथा राज्यगुरु आदि गिनी जानेके उपरान्त राज्यके मुसाहिबों मेंभी गिनी जाती है। इतना ही नहीं किन्तु मुसाहिबों में भी विशेष रीति से राज्य के विश्वास पात्र और शुभ चिन्तक मुसाहिबोंकी पंक्तिमें गिनी जाती है।

पुष्करणे ब्राह्मण राज्य सन्मानित।

पुष्करणे ब्राह्मण सदा से राजाओं के शुभ चिन्तक होनेसे जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, कृष्णगढ़, जयपुर, उदयपुर, बूँदी, कोटा, ईडर, रतलाम, झाबुआ, अमजरा, सीतामऊ, नरसिंहगढ़, इन्दौर, बड़ौदा, भुज, पटियाला—इत्यादि रियासतों में इनका समय२ पर उचित सत्कार तथा सन्मान होता आया है। अर्थात् कइयों से तो जागीर में गाँव, कइयोंसे पैर में पहिननेको सोना, कइयों से बैठने के लिये हाथी तथा पालखी आदि और कइयों से कड़ा, कण्ठी, मोती, दुपट्टा, दुशाला आदि धनादि पदार्थोंके शिरोपाव मिले हैं। राज्य सन्मान पुष्करणे ब्राह्मणों की जातिमें अद्यावधि विद्यमान हैं जिससे इन की जाति के राजाओं की शुभ चिन्तक और सन्मानित होने का पूर्ण प्रमाण मिलता है।

पुष्करणे ब्राह्मणो के पास राज्य शासन पत्र तथा ताम्रपत्र आदि।

यदुवंशी राजाओं से लेके अद्यावधि के राजा महाराजाओं के दिये हुये सैकड़ों ही राज्य शासन पत्र (राज्य के परवाने)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तथा कई ताम्रपत्र आदि राज्य लेख पुष्करणे ब्राह्मणों की जातिमें विद्यमान हैं। राज्य शासन पत्र तीन दर्जों में गिने जाते हैं। एक तो राजाकी आज्ञासे दीवान आदि के हस्ताक्षर वाले, दूसरे स्वयं राजाके हस्ताक्षर वाले, और तीसरे सम्पूर्ण लेख ही स्वयं राजाके हस्ताक्षरों से लिखे जानेवाले जो कि 'खास रुक्के' कहलाते हैं। इन में प्रथम की अपेक्षा तो दूसरा और दूसरे की अपेक्षा तीसरा अत्यन्त ही अधिक सन्मान सूचक माना जाता है। 'पुष्करणे ब्राह्मणों के पास भी ऐसे अधिक सन्मान सूचक ख़ास रुक्कों की भी कमी नहीं है। जिनके देखनेसे पुष्करणे ब्राह्मणों की जाति की बहुत कालसे राजाओंके शुभ चिन्तक होने रूपी महान् कीर्त्ति प्रगट होती है।

परन्तु इस छोटी सी पुस्तकमें तो इतना स्थान कहाँ ही जो वे लेख लिखे जा सकें? अतः वे सब लेख पुष्करणोत्पत्ति नामक पुस्तक में, जो अब बन रही है, उन परवानों तथा ताम्रपत्रों के देनेवाले राजाओं के और पानेवाले पुष्करणों के पूर्ण वृत्तान्त सहित लिखे जावेंगे।

पुष्करणे ब्राह्मण व्यापारी।

व्यापार करने वालों में मारवाड़ी ही अधिक प्रसिद्ध हैं। और मारवाड़ में महेश्वरी, ओसवाल, अग्रवाल, और पुष्करणे ब्राह्मण ही अधिक हैं। परन्तु व्यापार करना विशेष करके वैश्यों ही का कर्म होने और स्वयं पुष्करणे ब्राह्मण इस देश के राजाओं के पुरोहित, गुरु, मुसाहिब आदि होने से वे व्यापार कम क-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रते हैं। तथापि इस जाति में भी व्यापार करनेवालों की कमी नहीं है, और व्यापार भी कई प्रकार के करते हैं। जैसेः—

राज्य इज़ार दार—

पहिले इस देशके राजा महाराजा अपनी रियासतके गाँवों का भूमिकर तथा मालपर का कर (ज़कात वा हासिल) आदि प्रायः वर्ष भरके लिये इज़ारे (ठेके) पर दे देते थे। उनका इ-ज़ारा लेने वालों में अधिकांश पुष्करणे ब्राह्मण ही मुख्य थे।

राज्य सदायत—

राज्यके अन्तर्गत छोटे बड़े जागीरदारों से राज्यका 'रेख, चाकरी, सेरना, भोम बाब आदि' लगान प्रति वर्ष खेतीकी फ़सल आनेके समय लिया जाता है। वह द्रव्य राज्यमें जमा करानेके लिये पहिले से साद (ज़मानत) करानी पड़ती है। एसी साद करनेवालों में भी अधिकांश पुष्करणे ब्राह्मण ही होते हैं।

राज्य मोदी—

पिछले समय में राजाओं के यहां सेना बहुत सी रहीती थी। उनको आटा, दाल, घी, आदि भोजनकी सामिग्री देने के लिये राज्यकी ओरसे मोदी नियत किये जाते थे। वे मोदी भी प्रायः पुष्करणे ब्राह्मण ही होते थे। जैसे सं० १८८४ में बीकानेर की २०००० सेना जैसलमेर पर चढ़ आई थी। उस सेना को मोदी ख़ाना तौलनेका प्रबन्ध फलौधी के थानवी जालजी नामक एक प्रतिष्ठित पुष्करणे ब्राह्मणने अपनी ओरसे कर दिया था।

व्याज वा धरोहर—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ब्याजपर रुपये उधार देनेका काम भी बहुधा पुष्करणे ब्राह्मण भी अधिक करते हैं। क्योंकि ये राजवर्गी होनेसे इनके रुपये पीछे वसूल होने में दिक्कत नहीं पड़ती। तिसपरभी यदि किसीका विश्वास न हो तो फिर गहना आदि गिरवी रखकर देते हैं।

किसानी बोहरगत—

खेती करनेवाले जोतनेको बैल, बोनेको बीज, खाने को धान्य, और पहनने को वस्त्र, इत्यादि वस्तुएं लानेके लिये एक बोहरा बना रखते हैं; जिससे द्रव्य लातेहैं, और फिर फ़सल आने पर उनके यहां पीछा जमा करा देते हैं। ऐसी बोहरगत करनेवाले भी पुष्करणे ब्राह्मण अधिक हैं। जैसे जोधपुर के बोड़ा मवदत्तजी शालग्रामजी आदि।

बाहरसे माल लाना ले जाना—

अमर कोट, फलौधी, मलार, जैसलमेरके कितनेक पुष्करणे ब्राह्मण प्रत्येक प्रकारका माल सिन्ध आदि देशों से ला करके तो मारवाड़ में बेचतेथे, और मारवाड़ से ले जाके बाहर बेचते थे। इस प्रकारका व्यापार करने के लिये वे अपने निजके ऊँट रखते थे। परन्तु अब रेलका विस्तार हो जाने से उनका यह व्यापार उठ गया।

महाजनी व सर्राफ़ी रोज़गार—

हाज़िर माल वा हुण्डी चिठी, आदिका कार्य करनेवालों में भी पुष्करणे ब्राह्मण अधिक नामी हुये हैं। पहिले रेल नहीं थी, उस समय भी बाहर दिशावरों में दूर २ तक कई स्थानों में इनकी दूकानें थीं। जैसे जैसलमेर के विशा सालिमचन्दजी आलमचन्दजी की मालवा प्रान्त में, विशा शंकरलालजी देवकरणजीकी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उमटवाड़ी आदिमें, पुरोहित हरिदासजी उद्धवदासजीकी पञ्जाब आदिमें, और इस ग्रन्थ कर्त्ताके पूर्वज खेतसीदासजी अटलदासजीकी पाली आदि में थीं। इनके अतिरिक्त और भी अनेकोंकी दूकानें थीं और अब भी कई स्थानों में विद्यमान हैं।

सट्टेका रोज़गार—

इस समय देशमें सट्टेका रोज़गार चल पड़ा है तो पुष्करणे ब्राह्मण इसका भी सहस्रों तथा लाखों ही रुपयोंकी हारजीतका रोज़गार करते हैं। उनमें फलौधी वाले मुख्य हैं।

दलाली—

बम्बई, कलकत्ता, हैदराबाद दक्षिण, इन्दौर, खाँम गाँव, और कलकत्ता आदि में हुण्डी, प्रामिसरी नोट, चाँदी आदिकी दलाली करने वालोंमें भी प्रायः पुष्करणे ब्राह्मण अधिक हैं।

महाजन आदिकी नौकरी—

जो लोग घरू रोज़गार नहीं करते हैं, और जिनमें राज्यकी नौकरी करनी भी बनती नहीं पड़ती है, तथा जो पुरोहिताई करनी भी नहीं चाहते वे लोग महाजनोंके यहां मुनीमगीरी (मुख़तियारी), कीलीदारी (रोकड़ का काम), तथा बही खाता लिखने आदिकी नौकरी करते हैं और इन कामोंमें पुष्करणे ब्राह्मण बड़े होशियार व विश्वासपात्र होने से महाजन भी इन्हें प्रसन्नता पूर्वक रखते हैं। इसके उपरान्त ये रसोई बनाने में भी बड़े चतुर होनेसे बड़े २ सेठ साहूकारों तथा राज्य मुत्सद्दियों के अतिरिक्त राजाओंके यहांभी कोई २ लोग रसोईका भी काम करते हैं। इस समय मारवाड़ की रेलमें भी अधिकांश पुष्करणे ही ब्राह्मण नौकरी करते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्करणे ब्राह्मणों की जीविका।

इस जातिवाले अपनी जीविका बहुत प्राचीन काल से राज्य पुरोहित, राज्य विद्यागुरु, राज्य कथा व्यास, राज्य पुस्तकाध्यक्ष, राज्य दानाध्यक्ष, राज्य जोशी वेदिया, राज्य ज्योतिषी, और राज्य वैद्य आदि ब्राह्मणोंके करने योग्य कर्मों द्वारा ही करते हैं। परन्तु राजाओं के यहां पूर्वोक्त कर्म करते२ फिर काल पाके ये राज्य रक्षक, राज्य भक्त, राज्य प्रतिनिधि, राज्य सहायक, राज्य बोहरा, राज्य हितेच्छु, और राज्य मुसाहिब आदि का भी कार्य करने लग गये, तब से राज्यकी नौकरीसे भी जीविका करते हैं। इस बात को जैसलमेरकी तवारीख़के पृष्ठ १९ वें की पंक्ति १० तथा पृष्ठ २३२ की पंक्ति ११ में स्वीकार किई है कि पुष्करणे ब्राह्मण—

"ज़ी इज़्ज़त व मुसाहिब हर ओहदों पर रहते हैं।" "पुष्करणोंमें पुरोहित, व्यास, आचार्य थानवी आदि मुसाहिबोंमें हैं।"

इसी प्रकार रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़के भाग तीसरे के पृष्ठ ३९७ वेंकी। पंक्ति १८ तथा पृष्ठ १६१ वेंकी पंक्ति १९ में लिखा है कि—

"पुष्करणे ब्राह्मण भी बहुत वर्षों से यह (मुत्सद्दियोंका) पेशा करते हैं।।" "राज्य की नौकरी को ज़ियादा पसन्द करते हैं।"

इसके उपरान्त बहुतसे लोग व्यापार भी अधिकतासे करते है। इस बातको भी रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़ के भाग तीसरेके पृष्ठ १६१ वेंकी पंक्ति २० में स्वीकार किई है कि—

"बहुत लोग वनिज व्यापार भी करते हैं और उसके वास्ते परदेशों में दूर २ चले जाते हैं।"

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस जाति में भीख माँगनेकी प्रथा बिलकुल नहीं है। इस बातको भी स्वीकार करके रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़ के तीसरे भागके पृष्ठ १६१ की पंक्ति २० में लिखा है कि पुष्करणे ब्राह्मणों में—

"भीख बहुत कम लोग माँगते हैं।"

पुष्करणे ब्राह्मण अधिकांश तो नगरों हीमें रहते हैं। उनकी तो जीविका पूर्वोक्त ही कारणोंसे है। परन्तु कितनेक लोग बाहर ग्रामों में भी रहते हैं। उनमें अधिकांश तो वहां पर रहनेवाले अपने यजमानों की पुरोहिताई करते हैं, किन्तु कोई २ खेती भी करते हैं। यही बात रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़ के भाग तीसरेके पृष्ठ १६१ की पंक्ति २० में लिखी है कि पुष्करणे ब्राह्मणों में से—

"जो लोग गाँवों में रहते हैं वे खेती भी करते हैं।"

इस प्रकार से पुष्करणे ब्राह्मणों की जीविका बहुत कालसे चली आती है।

परन्तु टाड साहबने तो अपनी अनभिज्ञतासे यहाँ तक लिख दिया कि ये व्यापार आदि कुछ भी नहीं करते किन्तु या तो खेती करते हैं या पशु पालते हैं। अतः उनके लेखानुसार तो इन की जीविका के मुख्य साधन ये ही होने चाहियें। किन्तु यह बात भी टाड साहब की बिलकुल कपोल कल्पित है। क्योंकि इनकी जीविका के मुख्य साधन तो पूर्वोक्तही प्रकारसे हैं जिसके कई उदाहरण व टाड साहब ही के समय के प्रत्यक्ष प्रमाण ऊपर लिखे जा चुके हैं। हां कोई २ मेक लोग खेती भी करते हैं किन्तु उसका का ण यह हुआ है कि राजाओंकी दिइ हुई भूमि जिन पुष्करणों के पास है उसमें किसान न

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिलनेसे लाचारन वे ब्राह्मण स्वयं ही खेती करने लग गये। किन्तु ऐसे तो सभी देशों के और सभी जातिके ब्राह्मणोंमें खेती करने वाले विद्यमान मिलेंगे। यहाँ तक कि इस कलियुगमें ब्राह्मणोंके लिये खेती करनेकी आज्ञा भी 'पाराशर स्मृति' में है। इसके उपरान्त समस्त पुष्करणों के घर २०००० होंगे, उनमें खेती करने वाले घर १००००। ५०० भी कठिनता से मिलेंगे। तो इतनेसे इने गिने लोगों के खेती करने और खेतीके लिये पशु रखने मात्रहीसे पुष्करणे ब्राह्मणों की समग्र जाति भर ही की जीविका खेती करने और पशु पालनेसे लिख देनेमें तो टाड साहबने स्वयं ही अपनी अनभिज्ञता सिद्ध करते हुये अपनी भूल भ्रम वा किसी प्रकारका धोखा खा लेनेका भी क्या पूर्ण परिचय नहीं दिया है?

यहां पर यदि कोई महान् सूक्ष्म बुद्धि वाला ऐसी शंका करे कि टाड साहबने जिस समय पुस्तक लिखी थी उस समय तो इनकी जीविका इसी प्रकार होगी परन्तु पीछे से इन्होंने बदल ली होगी। तो उन्हें यह विचार कर लेना चाहिये कि प्रथम तो टाड साहबको हुये कोई २००। ४०० वर्ष व्यतीत नहीं हो गये हैं किन्तु केवल ७४ ही वर्ष हुये हैं। तो क्या इतनेही से वर्षों में इतना परिवर्त्तन हो गया? दूसरे यदि हो भी गया तो फिर जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, कृष्णगढ़, जयपुर आदि के राजाओं के इतिहासों में सैकड़ों ही वर्ष पहिले से उनके पुरोहित, गुरु, मुसाहिब आदि होनेके प्रमाण कैसे मिलते हैं? तीसरे टाड साहब को प्रत्यक्ष देखनेवाले भी अब भी कोई २ मारवाड़में मिल सकते हैं; और उस समयके जन्मे हुये तो बहुत ही अधिक विद्यमान हैं। तो क्या उनमेंसे भी कोई टाड साहबके उक्त कथनकी पुष्टि करता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है! चौथे टाड साहब अंग्रेज सरकारकी ओरसे कई वर्षों तक राजपूतानेके बड़े साहब (चीफ़ कमिश्नर वा एजण्ट गवर्नर जनरल) के पदपर रहे थे तभी उन्हें यह पुस्तक लिखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उस समय भी राजपूतानेकी कई रियासतों में राज्य के बड़े२ओहदों पर भी पुकरणे ब्राह्मण विद्यमान थे (जैसे जैसलमेर में दीवान व मुसाहिब पुष्करणे ब्राह्मण ईश्वरलालजी आचार्य व जोधपुर में जोशी त्रभुलालजी मुसाहिब) और उनमें कइयोंसे आपको मिलने का भी काम पड़ा है। तोभी आप मारवाड़के ब्राह्मणों में एक ऐसी प्रसिद्ध, प्रधान व प्रतिष्ठित जाति के विषयमें इतने अन जान ही बने रहें तो यह क्या ऐसे इतिहास लेखकों के लिये कम भूलकी बात है? अतः इस जातिके विषयमें टाड साहबकी इस प्रकारकी प्रत्यक्ष अनभिज्ञता देखकर भी क्या यह निश्चय नहीं होता कि इनकी उत्पत्ति की मिथ्या 'अजब कहानी' भी इसी प्रकार की भूलसे नहीं लिखी गई?

पुष्करणे ब्राह्मणों के गोत्र प्रवर।

हम प्रथम लिख आये हैं कि पुष्करणे ब्राह्मणों की जाति सिन्ध देश में बनी है। उस समय पूर्वोक्त १२८ गोत्रोंमें से कई गोत्रके ब्राह्मणों के सम्मिलित होने से यह जाति बनी थी जैसे कि उतथ्य,भारद्वाज,शाण्डिल्य,गौतम, उपमन्यु, कपिल,गविष्ठर,पाराशर, कश्यप, हारितस, शुकनस, वत्स, कौशिक, और मुद्गल इत्यादि गोत्र पुष्करणे ब्राह्मणों में हैं।

इस जातिके अन्तर्गत जो ब्राह्मण एकत्र हुये हैं वे देश, ग्राम, गुण कर्म अथवा राजा आदिकी दी हुई उपाधियों के अनुसार उपनामोंसे पहिचाने जाते हैं, जिन्हें जाति के बीचमें आद नाम,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवटङ्क, खाँप, नख वा जाति भी कहते हैं। इनमें किस जाति-वालों का कौनसा गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा, सूत्र, तथा भैरव, गणेश, कुलदेवी आदि है, उसका निर्णय 'पुष्करणोत्पत्ति' नामक पुस्तक में विस्तार पूर्वक करेंगे।

—०—

पुष्करणे ब्राह्मण वेद पाठी।

जिन सिन्धी ब्राह्मणोंसे यह जाति बनी है उनमें पूर्वोक्त गोत्रोंवाले कई तो ऋग्वेदी, कई यजुर्वेदी, कई सामवेदी, और कई अथर्ववेदी थे। परन्तु इस समय ऋग् और अथर्व की अपेक्षा यजुर् और सामवेदी ब्राह्मण ही पुष्करणोंमें अधिक हैं। इसलिये पुष्करणे ब्राह्मणों की जातिमें इन्हीं दो वेदोंका प्रचार है।

—※—

पुष्करणे ब्राह्मणों में अग्निहोत्री।

पहिले समयमें कई पुष्करणे ब्राह्मण अग्निहोत्री थे जिनके बनाये हुये यज्ञ मण्डप—यज्ञशालायें तथा अग्निहोत्रके कुण्डों के चिह्न लुद्रवा आदि नगरों में तथा जोधपुरके नाथावत व्यासों के यहां अबतक विद्यमान हैं जो पुष्करणे ब्राह्मणों के पूर्वजों के अ-ग्निहोत्री होनेका स्मरण कराते हैं।

यद्यपि मुग़ल बादशाहों के अत्याचारके समय इसका प्रचार प्रायः नहीं रहा था किन्तु अब अंग्रेज़ोंके इस शान्तिमय शासन कालमें इसका पीछा प्रचार हुआ है। इनमें प्रथम यज्ञ के भागी जोध-पुर निवासी पाराशर गोत्री व सामवेदी हर्ष जातिके पुष्करणे ब्राह्म-ण 'श्रीमान् शिवराजजी शर्मा' हुये हैं। इन्होंने सं० १९९९ में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बड़ौदे आदिसे श्रोत्रिय विद्वान् दक्षिणीय ब्राह्मणोंको एकत्र कर बहुत सा धन व्यय करके अग्निहोत्र धारण करके पुष्करणे ब्राह्मणोंके 'अग्निहोत्री' नामको सार्थक कर दिखाया। यद्यपि दो वर्ष पीछे उनकी स्त्रीका देहान्त हो गया और विना स्त्रीके अग्निहोत्र हो नहीं सकता इसलिये एक वार पीछा बन्द कर देना पड़ा था। परन्तु उन धर्म वीरने शास्त्रोंकी आज्ञानुसार फिर बहुत सा धन लगाके 'पुनराधान' करके फिर दूसरी वार अग्निहोत्र धारण किया सो आज तक उस कर्मका यथावत् पालन करते हैं।

अग्निहोत्र करने में इष्टिके दिन ब्रह्मा, अध्युर्य, होता, उद्गाता आदि अन्य श्रोतिय विद्वान् ब्राह्मणोंकी आवश्यकता रहती है अतः वे भी सभी कर्म करानेके लिये पुष्करणेही ब्राह्मण हैं।

इसी प्रकार जोधपुर निवासी शाण्डिल्य गोत्री व यजुर्वेदी पुरोहित जातिके पुष्करणे ब्राह्मण 'श्रीमान् गौतमजी शर्मा' ने भी वहीं के श्रोतिय श्रीमाली ब्राह्मणों को एकत्र करके अग्निहोत्र धारण किया था, सो शरीर वर्त्तमान रहने तक इस कर्मको यथावत् करते रहे।

आशा की जाती है कि अन्यान्य भी पुष्करणे ब्राह्मण ईश्वर की प्रेरणासे इस महान् वैदिक धर्म कार्य में शीघ्र ही प्रवर्त्त होंगे।

पुष्करणे ब्राह्मणों में यज्ञ करने की प्रथा।

इस जातिवाले परम्परासे श्रौत तथा स्मार्त धर्मानुसार अनेक प्रकारके यज्ञ करते आये हैं। उनमें 'विष्णु यज्ञ' नामक यज्ञ प्रधान है जिसके तीन भेद हैं। एक तो 'महा विष्णुयज्ञ', दूसरा 'विष्णु यज्ञ', और तीसरा 'लघु विष्णु यज्ञ'। इनमें महाविष्णु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यज्ञ तो 'लक्ष भोज' नामसे, विष्णुयज्ञ 'अशेषभोज' वा 'सहस्रभोज', नामसे और लघुविष्णु यज्ञ 'पञ्चपर्वी' नामसे पुष्करणोंमें प्रसिद्धहै।

ऐसे यज्ञोंके समय ब्राह्मण भोजन करानेके लिये अपनी जातिके सम्पूर्ण ब्राह्मणों को देश देशान्तरों में निमन्त्रण भेजकर दूर२ से बुलाक एकत्र करतेथे। उन एकत्र हुये सहस्रों ब्राह्मणों को लक्ष भोजके समय तो २१ दिनों तक, अशेषभोज वा सहस्र-भोज के समय ७ दिनों तक और पञ्चपर्वीके समय ५ दिनोंतक उत्तमोत्तम भोजन करानेके पश्चात् प्रत्येक ब्राह्मणको लक्षभोज में तो वस्त्र तथा पात्र देनेके उपरान्त १)) १)) सुवर्ण मुद्रा (सोनेकी मोहर), अशेषभोज वा सहस्र भोजमें २) २) वा ४) ४) रुपये, और पञ्चपर्वी में १) १) वा २) २) रुपये दक्षिणा देनेके उपरान्त आने जानेका मार्ग व्यय देके बड़े सत्कारके साथ पीछा विदा करते थे। इस समयकी अपेक्षा पूर्वकालमें धान्य, घृत, गुड़, खाँड़ आदि सम्पूर्ण वस्तुएं बहुत ही सस्ते भावसे मिलती थीं तो भी इन यज्ञोंमें लाखों रुपये लग जाते थे।

पहिले पुष्करणे ब्राह्मण सिन्ध देशके 'अरोड़' नामक नगर में अधिक वसते थे। परन्तु विक्रम संवत् के प्रारम्भसे२७०वर्ष पहिले यूनानके बादशाह 'सिकन्दर' ने इस देशपर चढ़ाई की तो 'अरोड़' नगरके राज्यको नष्ट कर दिया। उस अत्याचारके समय बहुतसे पुष्करणे ब्राह्मणभी मारे गये और जो कुछ शेष बचे वे मारवाड़की ओर भाग आये जिन की सन्तान लुद्रवा आदि नगरों में बस गई। फिर लुद्रवेके भाटी राजा जैसलजीने सं. १२१२ में अपने नामपर जैसलमेरका नगर बसाया तब पुष्करणे ब्राह्मणोंको भी जैसलमेरमें ला बसाये। जैसलमेर में बसने से प-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हिले लुद्रवा आदिमें और लुद्रवे से पहिले सिन्धके अरोड़ नामक नगर आदिमें वसनेके समय वहां पर तो पुष्करणे ब्राह्मणों के किये हुये पूर्वोक्त प्रकारके यज्ञोंकी तो गणना करनाभी कठिन है परन्तु जैसलमेरमें वस जाने के पीछे भी जैसलमेर, फलौधी, जोधपुर, मेड़ता, बीकानेर आदिमें ही किये हुये यज्ञोंका वर्णन किया जावे तो भी एक बड़ी भारी पुस्तक बन जावे। अतः उन सबका पूर्ण वृत्तान्त 'पुष्करणोत्पत्ति' नामक पुस्तकमें लिखा जावेगा जिससे पुष्करणे ब्राह्मणों के पूर्वजों को यज्ञ करनेकी दृढ़ता प्रगट होगी। किन्तु उनमेंसे अन्तिम एक 'विष्णुयज्ञ', 'अशेष भोज', वा 'सहस्रभोज' जिसे जोधपुर निवासी शाण्डिल्य गोत्री यजुर्वेदी पुरोहित जातिके पुष्करणे ब्राह्मण चण्डवाणी जोशी श्रीमान् प्रभुलालजी, हंसराजजी, गङ्गाविष्णुजी, रामनारायणजी व शिव नारायणजी आदिने अपने स्वर्गवासी पिता शम्भुदत्तजी के आज्ञानुसार सं० १९०२ में मिगशर वादि ६ से प्रारम्भ करके माघ सुदि १५ तक समाप्त किया था। उसी का पाठकों को सङ्क्षेप से स्मरण कराता हूं जिससे अन्य यज्ञों के भी व्यय आदि का अनुमान हो सकेगा।

इस यज्ञके समय यज्ञशाला—यज्ञ मण्डप कुण्ड आदि बनाके अग्निकुण्डमें ७ दिन तक लगातार आहुति लगती रही और उस कुण्डमें एक घृतकी अखण्ड धारा भी साधारण रूपसे ऊपरसे गिरती थी। इस यज्ञके लिये घृतके पात्र (लोहेके कड़ाह) इतने बड़े२ भरेथे कि उतने कभी पानीसे भी भरे हुये देखनेमें नहीं आये होंगे। इस 'विष्णुयज्ञ' के समय उपर लिखे अनुसार सम्पूर्ण पुष्करणे ब्राह्मण निमन्त्रित किये गये थे। एकत्र हुये सहस्रों ब्रा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ह्मणों कों ७ दिन भोजन कराके पूर्णाहुतिके पश्चात् प्रत्येक ब्राह्मणको ४) ४) रुपये दक्षिणा देके विदा किये। यज्ञ कर्त्तागण जोधपुरके महाराज श्रीमान् तख्तसिंहजीके गुरु व मुसाहिब आदि थे, इसलिये जोधपुर दरबारसे सर्व प्रकारके अन्यान्य प्रबन्ध कर दिये गये थे। तथा धान्यादिका भावभी उस समय बहुतही मन्दा था। तोभी अनुमान १,००,०००) रुपये उनके घरसे व्यय हुये थे। इस समयमें तो वैसा यज्ञ १० लाख रुपये लगाने परभी होना कठिन है। अब भी ऐसे धनाढ्यों की तो कमी नहीं है किन्तु वैसा प्रबन्ध होना महा कठिन है।

इस यज्ञके पश्चात्भी कई वर्षों तक उस यज्ञके स्मरणार्थ उसी यज्ञ शालामें प्रतिवर्ष, जोधपुर में सम्पूर्ण पुष्करणे ब्राह्मणों की जातिभर को भोजन कराया जाता था, अर्थात् उपरोक्त प्रकारके यज्ञों में तथा जाति भोजन में इनके घरसे लाखों ही रुपये व्यय हुये हैं। ऐसे धार्म्मिक परोपकारी महानुभावोंके वंश भूषण श्रीमान् जोशीजी आशकरणजी साहिब इस समय जोधपुर दरबार की कौन्सिलकी शोभा बढ़ा रहे हैं। ईश्वर इन्हें चिरायु करें।

पुष्करणे ब्राह्मणों में ब्रह्मभोज करने का आग्रह।

मन्वादि धर्म शास्त्रोंमें ब्राह्मण भोजन करानेका बहुत आग्रह किया गया है। और ब्राह्मणों में भी स्वजातिके ब्राह्मणों को भोजन करानेका विशेष फल लिखा है। इसी लिये पुष्करणे ब्राह्मणों में भी जाति भोजन करानेकी प्राचीन प्रथा आजतक चली आती है। अर्थात् पुत्र आदिके जन्म

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तथा उपनयनादि संस्कारों के समयमें, कन्या आदि के विवाह समयमें, और मातापिता आदिके देहान्त हो जाने के पश्चात् अपनी सामर्थ्यके अनुसार स्वजातिके ब्राह्मणों को अवश्य भोजन कराते हैं और सम्पूर्ण जाति भरको भोजन करानेके समय प्रत्येक ब्राह्मणको ।) ।), १) १), २) २) तक दक्षिणा भी देते हैं। अतः एक वार जाति भोजन कराने में बड़े नगरों में तो ५०००) ५०००) वा १००००) १००००) तक रुपये लग जाते हैं। ऐसे जाति भोजन एक वर्षमें कई वार हो जाते हैं जिनसे पाठक अनुमान कर सकते हैं कि आजतक इस कार्यके लिये पुष्करणे ब्राह्मणोंकी जातिने लाखों ही नहीं वरन करोड़ों रुपये व्यय कर दिये होंगे और आगेको भी ऐसे ही व्यय करती जाने ही में वह अपना गौरव समझती है। किन्तु यदि इसी प्रकार जात्युपकारी अन्यान्य कार्यों में द्रव्यादि से सहायक बने तो क्या कम उत्तम होगा?

—०—

पुष्करणे ब्राह्मणों में स्वजाति में परस्पर सहानुभूति।

इसी प्रकार दुर्भिक्ष आदि के कष्टके समय भी वे एक दूसरे से सहानुभूति रखते हैं।

एक समय सं. १६८० के लगभग मारवाड़ में बड़ा भारी दुर्भिक्ष (अकाल) पड़ गया। उस समय बहुतसे पुष्करणे ब्राह्मण देशको त्यागकर विदेश जाने लगे तो जोधपुरके महाराजा शूर-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिंहजीके गुरु व मुसाहिब व्यास नाथाजीने अपने पाससे धान्य देकर लोगों को जोधपुर ही में बसा लिये थे । उस समय की यह एक कहावत आजतक लोग कहते आये हैं कि:-

न्यात न्यात में होतो नाथो ।
तो काहे को लोग मालवे जातो ? ॥

इसी प्रकार सं. १८६९ में भी मारवाड़ में बड़ा भारी दुर्भिक्ष पड़ा था। उस समय सिन्धकी ओर को जानेवाले पुष्करणे ब्राह्मणों को तो जैसलमेर के व्यास शूरदासजी व शिवदासजीने और मालवेकी ओर जाने वालोंको जोधपुरके चण्डवाणी जोशी श्री कृष्णजीने पीछा संवत् होने तक अपने यहां भोजन करने का निमन्त्रण सम्पूर्ण न्यात को देकर भोजनादिका उचित प्रबन्ध करके अपनी २ ओरसे वृहत् भोजन शालायें खोल दीं। उनमें हर कोई पुष्करणा ब्राह्मण भोजन कर सकता था। ऐसे करने से लोगोंका दुर्भिक्ष का कष्ट दूर हो गया।

पुष्करणे ब्राह्मण सदासे मारवाड़के छोटे बड़े प्रायः सभी गाँवोंमें राज्यकी ओरसे हवालदार आदि अथवा बोहरों आदि की ओरसे उनकी रकम बसूल करनेके लिये रहते हैं। यदि कोई पुष्करणा ब्राह्मण मार्ग चलता हुआ भी उनके गाँवमें होके निकल जावे तो उनको वहां पर ठहरा के एक टंक तो भोजन कराये विना कदापि आगे नहीं जाने देते । जैसी परस्पर सहानुभूति इस बात की पुष्करणे ब्राह्मणों में देखी जाती है वैसी स्यात् ही किसी अन्य जातीमें होगी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्करणे ब्राह्मणोंके दान नहीं लेनेका कारण।

मन्वादि धर्म शास्त्रों में ब्राह्मणों के लिये ६ कर्म माने हैं। यथाः—

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥

मनु० अ० १ श्लो० ८८

विद्या पढ़ना, यज्ञ करना, और दान देना ये ३ कर्म तो परमार्थके लिये; और विद्या पढ़ाना, यज्ञ कराना, और दान लेना ये ३ कर्म जीविकाके लिये:—इस प्रकार ये ६ कर्म ब्राह्मणोंके हैं।

प्रतिग्रहसमर्थोऽपि प्रसङ्गं तत्र वर्जयेत्॥
प्रतिग्रहेण ह्यस्याशु ब्राह्मं तेजः प्रशाम्यति॥

मनु० अ० ४ श्लो० १८६

प्रतिग्रह (दान) लेना यद्यपि है तो ब्राह्मणों ही के कर्मों में, तथापि विना सामर्थ्यके तो लेनेकी आज्ञा ही नहीं है। किन्तु सामर्थ्यवान्को भी अपने ब्रह्म तेजकी रक्षाके लिये इससे अपनेको बचाना लिखा है। यहां तक कि आपत्काळके विना तो ऐसे वैसे (पापवृत्तिसे जोविका करनेवाले) मनुष्यका तौ भोजन भी लेने का निषेध है। यथाः—

दुष्कृतं हि मनुष्याणामन्नमाश्रित्य तिष्ठति।
यो यस्यान्नं समश्नाति स तस्याश्नाति किल्विषम्॥

अङ्गिरास्मृति।

मनुष्योंके किये हुये पापकर्मों का फल उन के अन्नमें रहता है। अतः उनके दिये हुये अन्नका भोजन करनेवाले भी उनके

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किये हुये पापोंके भागी हो जाते हैं। इस लिये भोजनभी शुद्ध वृत्तिसे जीविका करनेवालों ही का लेना चाहिये। अतः मनु स्मृति में लिखा है कि–

सावित्रीमात्रसारोऽपि वरं विप्रः सुयन्त्रितः।
नायन्त्रितस्त्रिवेदोऽपि सर्वाशी सर्वविक्रयी॥

मनु० अ० २ श्लो० ११८

जो ब्राह्मण वेदविक्रय (पैसे ठहराके वेदका पाठ) करनेवाला और हर किसी मनुष्यका दिया हुआ अन्न खानेवाला हो वह यदि चारों वेदोंका वक्ता हो तो भी ब्राह्मणों में श्रेष्ठ नहीं गिना जाता, किन्तु जो ब्राह्मण वेद विक्रय करने और हरएकका अन्न खाने रूपी दुष्कर्मसे बचा हुआ हो तो वह ब्राह्मण केवल गायत्री मन्त्र ही का जाननेवाला हो तो भी ब्राह्मणों में श्रेष्ठ गिना जाता है।

इन्हीं पूर्वोक्त धर्म शास्त्रोंकी आज्ञानुसार पुष्करणे ब्राह्मणों की प्रायः समग्र जाति ही प्रतिग्रह (दान) लेने और वेदविक्रय करनेरूपी असत्कर्मोंसे बची हुई है। यहां तक कि जोधपुर आदि के तो पुष्करणे ब्राह्मण 'ब्रह्मभोज' भी केवल एक अपने महाराजा के अतिरिक्त अपने अन्य यजमानों तकका भी नहीं लेते हैं। हां सिन्ध, कच्छ आदिके प्रायः पुष्करणे ब्राह्मण अपनी जीविका ब्राह्मण वृत्ति से करते हैं किन्तु वे भी बहुधा अपने यजमानों हीसे करते हैं न कि सर्व लोगों से।*

* प्रतिग्रह (दान) लेनेवाले ब्राह्मणों के घर का अन्नजल लेने में प्रायः लोग संकोच करते हैं किन्तु पुष्करणे ब्राह्मणों में प्रतिग्रह (दान) लेने की प्रथा न होने से इनके यहां का अन्नजल सर्व साधारण से लगा के महाराजा भी प्रसन्नतापूर्वक ले लेते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिह्वा दग्धं परान्नेन हस्तदग्धं प्रतिग्रहात् ।
मनो दग्धं परस्त्रीणां मन्त्रसिद्धिः कथं भवेत् ॥

नित्यप्रति पराया अन्न खानेसे जिह्वा दग्ध हो जाती है, सदैव ही प्रतिग्रह (दान) लेनेसे हाथ दग्ध हो जाता है और पर स्त्रीकी इच्छा करनेसे मन दग्ध हो जाता है । अतः ऐसा करनेवाले ब्राह्मण को मन्त्रकी सिद्धि प्राप्त नहीं होती अर्थात् ब्रह्म तेज नहीं बढ़ता है जिसके कारण उसका दिया हुआ श्राप वा आशिष् फलीभूत नहीं होती । किन्तु ब्राह्मणों का गौरव ऐसी सामर्थ्य होनेही में है ।

इसी शुद्धता के कारण पुष्करणे ब्राह्मणों में भी ब्रह्म तेज बना हुआ है, जिसका प्रभाव कई वार देखने में आया है। इसका पूर्ण वृत्तान्त पुष्करणोत्पत्ति नामक पुस्तक में लिखेंगे ।

पुष्करणे ब्राह्मणोंमें दान लेने की सामर्थ्य ।

बहुधा पुष्करणे ब्राह्मण दान (प्रतिग्रह) नहीं लेते हैं, परन्तु आवश्यकता पड़ जानेपर तो कठिनसे कठिन दान (प्रतिग्रह) लेनेकी सामर्थ्य भी रखते हैं । जैसेः–

जयपुरके महाराजाधिराज श्रीमान् सवाई जयसिंहजीने सं० १७८९ में 'अश्वमेध' यज्ञ कियाथा । उसके अन्तमें दान करनेके लिये अन्न, वस्त्र, धातु आदि बहुतसे पदार्थों के ढेर लगाके बीच में एक 'लोहेका पुतला' बनाके रख दिया । इस यज्ञके समय बहुतसे ब्राह्मण एकत्र हुयेथे किन्तु उस दानके लेनेका साहस कि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सीने भी नहीं किया। ऐसे कई दिन बीत जानेसे राजाको दुःखित होता सुनके जोधपुर के चण्डू कुलोत्पन्न चण्डवाणी जोशी 'कन्हीरामजी' नाम एक पुष्करणे ब्राह्मणने, जिन्होंने पुष्करजी पर गायत्री मन्त्रके २४। २४ लाख जपके दो पुरश्चरण समाप्त करके जो तीसरा पुरश्चरण प्रारम्भ कियाथा उसे छोड़के, ब्राह्मणोंकी पुष्टिके लिये जयपुर जाके राजासे कहा कि "हे महाराजाधिराज आप स्वयं जानते हैं कि राजाओंका दान लेना कोई खेलकी बात नहीं हैं। क्योंकि जितना पाप १० कसाइयों को होता है उतना तो १ कुम्भकारको लगता है, जितना १० कुम्भकारों को होता है उतना १ तेलीको लगता है, जितना १० तेलियोंको होता है उतना १ वेश्याको लगता है और जितना १० वेश्याओं को होता है उतना एक राजाको लगता है। अर्थात् १०००० कसाइयों के तुल्य पाप १ राजा को लगता है। अतः विना सामर्थ्य के राजाओंका दान (प्रतिग्रह) लेनेवाला २१ प्रकारके घोर नरकों में जाता है। निदान राजाओंका दान विना सामर्थ्यके तो कोई ले सकता ही नहीं किन्तु सामर्थ्यवान्को भी अपने ब्रह्म तेजकी रक्षाके लिये बचना पड़ता है। इसमें मनुस्मृति के चतुर्थ अध्यायका यह प्रमाण है:—

दशसूनासमं चक्रं दशचक्रसमो ध्वजः।
दशध्वजसमो वेशो दशवेशसमो नृपः॥ ८५॥
दशसूनासहस्राणि यो वाहयति सौनिकः।
तेन तुल्यः स्मृतो राजा घोरस्तस्य प्रतिग्रहः॥८६॥
यो राज्ञः प्रतिगृह्णाति लुब्धस्योच्छास्त्रवर्त्तिनः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स पर्यायेण यातीमान्नरकानेकविंशतिम् ॥८७॥
एतद्विदन्तो विद्वाँसो ब्राह्मणा ब्रह्मवादिनः ।
न राज्ञः प्रतिगृह्णन्ति प्रेत्य श्रेयोऽभिकाङ्क्षिणः॥९१॥
प्रतिग्रहसमर्थोऽपि प्रसङ्गं तत्र वर्जयेत् ।
प्रतिग्रहेण ह्यस्याशु ब्राह्मं तेजः प्रशाम्यति ॥१८६॥

परन्तु ब्राह्मणोंका यहभी धर्म है कि आप भलेही दुःख पा लेवे किन्तु दूसरोंको दुःखोंसे बचावे; अतः आपका दान लेनेको मैं आया हूं। यह कहके वह दान ले लिया। दान लेनेसे पहिले वे सुन्दर स्वरूपवान् बड़े तेजस्वी दीखते थे परन्तु दानके सङ्कल्पका जल हाथमें लेतेही अग्निदग्ध के समान (काले, भीलसरीखे) हो गये। अतः उस दानका धन तो ब्राह्मणोंको खिला दिया और आप फिर पुष्करजी पर गायत्री मन्त्रका पुरश्चरण करके उस दानके प्रायश्चित्तसे निवृत्त हुये। तब उनका शरीर पूर्ववत् सुन्दर तथा तेजस्वी हो गया। किन्तु जिस हाथमें सङ्कल्पका जल लिया था उसकी हथेलीमें एक काला दाग़ लोगोंको यह दिखानेके लिये रहने दिया कि राजाओंका दान लेनेसे ऐसा कष्ट उठाना पड़ता है। फिर जयपुर नरेशने उनकी यह सामर्थ्य देखके उनका बड़ा सत्कार करके 'क़ायमाबाद' नाम एक गाँव जो अब मालियोंकी वासणी कहलाती है' उनको दिया सो आज तक उनके वंशवालों की स्वाधीनतामें है।

—o—

पुष्करणे ब्राह्मणोंमें दान करनेकी उदारता।

पुष्करणे ब्राह्मण व्यास तापाजी जोधपुरके महाराजा मोटा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजा उदयसिंहजीके गुरु व मुसाहिबोंमें से थे। उनके पास धन तो बहुत था, किन्तु पुत्र नहीं था। इसलिये अपने बड़े भाई गाँगाजीके पुत्र गिरिधरजीको दत्तक (गोद) ले लिया। किन्तु फिर किसी महात्माकी आशिषसे तापाजीके एक औरस भी पुत्र उत्पन्न हो गया। उनका नाम नाथाजी रखा। जब तापाजीका अन्त समय समीप आया तो उन्होंने गिरिधरजीको बुलाके कहा कि तुम दोनों भाई मेरे सामने अपनी सम्पत्ति बाँटलो। गिरिधरजीने कहाकि 'आपकी कृपासे मेरे किसी बातकी कमी नहीं है अतः मैं बंट लेना नहीं चाहता। और आपका सम्पूर्ण धन मैं नाथा के लिये छोड़ता हूँ ऐसा कहके अपनी ओरसे एक फारिग़खती छोटेभाईके नामपर लिखदी। तब तापाजीने अपने छोटे पुत्र नाथाजीको बुलाके गिरिधरजीका सब वृत्तान्त कहा। नाथाजीने अपने बड़े भाईकी ऐसी उदारता देखके अपने हाथमें जल लेके पिताका सर्वस्व अर्थात् धनादि सम्पूर्ण पदार्थ पिताके नामपर श्रीकृष्णार्पण करनेका सङ्कल्प कर दिया। उस समय नाथाजीकी अवस्था केवल ९ वा १० ही वर्ष की थी। फिर उस धनमेंसे अनुमान २,००,००० दो लाख रुपये लगाके पिता तापा जी के नामपर सं० १६८६ में 'तापी' नामक एक बहुत बड़ी बावड़ी बनवा दी, जो जोधपुरकी वस्तीके बहुतही काम आती है। और शेष धनसे खेतीके योग्य बहुतसी भूमि मोल लेके ब्राह्मणों को दे दी। वह आजतक है और 'व्यासकी सुरह' कहलाती है। पिताका लाखों रुपये का धन धर्मार्थ लगा देना और उसमेंसे अपने लिये एक कौड़ीभी नहीं रखना एक ९। १० वर्षके बालकके लिये दान करनेमें कितनी उदारता है! फिर नाथाजीने स्वयं भी लाखों ही रुपये पैदा किये और ऐसेही ऐसे उपकारी कामोंमें लगाते रहे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्करणे ब्राह्मणों में सन्तोषिता ।

जैसलमेरके पुष्करणे ब्राह्मण आचार्य वेणीदासजी सं० १६६८ में तीर्थयात्राको जाते हुये फलौधी नगरमें आये । उस समय बीकानेरके महाराजा रायसिंहजीकी गङ्गा नाम राणी (जो जैसलमेरके भाटी राजा हररायजीकी पुत्री थीं) वहांपर रहतीथीं उन्होंने वेणीदासजीसे कहा कि मेरा पुत्र शूरसिंह है, उसका राज्यमें कुछभी मान्य नहीं है । वेणीदासजीने कहाकि आजसे तीसरे वर्ष आपका पुत्र बीकानेरकी राजगद्दीका अधिकारी होगा, आप चिन्ता न करें । यह सुनके राणीको बहुत आश्चर्य हुआ । परन्तु अपने पुत्रको राज्य मिलने पर आधा राज्य इन वेणीदासजीको दे देनेका अपनें मनमें प्रण कर लिया । वेणीदासजी तौ तीर्थयात्रा को चले गये, किन्तु पीछेसे सं० १६७० में राणीके पुत्र शूरसिंहजीको बीकानेरका राज्य मिल गया । तब गङ्गा राणी अपना प्रण पूर्ण करनेके लिये बहुत आग्रहके साथ वेणीदासजी को बीकानेरमें बुलाके अपना आधा राज्य देनेको तैयार हुई । किन्तु परम सन्तोषी वेणीदासजीने राज्य लेनेसे स्पष्ट इनकार करके कह दिया कि हमें तौ राज्य नहीं चाहिये । लाचारन राणीने अपने राज्यका आधा लवाज़िमा मात्र ही देके अपना प्रण पूर्ण किया । फिर इनके वंशवाले वहांपर बड़े प्रतापी हुये और ७ वार विष्णु यज्ञ किये उस प्रत्येक यज्ञमें अपनी जातिके सम्पूर्ण ब्राह्मणोंको दूर२ से बुलाके एकत्र किये और प्रत्येक वार ७ । ७ दिन तक भोजनादिसे सत्कार करके प्रत्येक वार और प्रत्येक ब्राह्मणको २) २) रु० दक्षिणा देके विदा किये । ऐसे विष्णु यज्ञ (सहस्रभोज) ३ तौ धरणी धरजीने, १ महानन्दजीने, १

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रघुनाथजीने,१ जगन्नाथजीने, और २ पोकरजीने किये थे। बीकानेरके राज्यमें उनके वंशवालोंका वैसाही सत्कार बना हुआ है और राज्यसे मिले हुये ३ गाँव (१) थावरिया, (२) खातीवास और (३) कुँतासरिया इनके आधीन आजतक विद्यमान हैं।

पुष्करणे ब्राह्मणों में सिद्ध पुरुष।

ब्रह्मोजी नामक एक आचारज (आचार्य) जातिके पुष्करणे ब्राह्मणने सिन्ध देशमें सिन्धु नदकी तटपर गायत्री मन्त्रका पुरश्चरण (२४ लाखका जप) प्रारम्भ कियाथा। उस समय एक वृद्ध कुम्भकार अपनी स्त्री तथा एक कुँवारी कन्या सहित इनकी टहल करनेको आ रहा। फिर वे स्त्री पुरुष तो तीर्थ यात्रा को जानेकी बात कहकर वहांसे चले गये, और लौटके पीछे आने तक अपनी कन्याको इन्हींके पास छोड़ गये। वह कन्या इनकी टहल करती रही। इसकी सुन्दरता देखकर एक दिन वहाँके मुसलमान नव्वाबने इसे लेनी चाही। यह समाचार सुनकर ब्रह्मोजीको बड़ा क्रोध आया किन्तु उस दुष्टके आगे कुछ वश नहीं चलता देख बहुत घबराये। परन्तु जिस समय नव्वाब इस कन्याको लेनेके लिये ब्रह्मोजीकी झोंपड़ीके भीतर आया तो वही कन्या सिंहपर चढ़ी हुई साक्षात् अष्टभुजा देवी नज़र आई। इससे घबराकर ब्रह्मोजी से क्षमा प्रार्थनाकी और आगेसे ऐसा अनाचार नहीं करनेका प्रण करके अपनी जान बचाई। वह कन्या वास्तवमें साक्षात् गायत्रीही थी जो ब्रह्मोजीकी तपस्यासे प्रसन्न होके इस रूपसें स्वयं इनकी टहल करनेको आ के रह गई थी। फिर वह कन्या ब्रह्मोजीको

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गायत्री का जप सिद्ध होनेका वर देके वहाँपर अदृश्य हो गई। फिर इस कन्याके वरदानसे ब्रह्मोजी बड़े सिद्ध पुरुष हुये और उन सिद्धियों द्वारा जगत्काभी बड़ा उपकार करते रहे।

इसी प्रकार चोहाटिया जोशी 'बलीरामजी' सिन्ध देश के रोड़ी नामक ग्राममें रहते थे। इनकेभी साक्षात् गायत्री अरसपरस थी। एक समय लोगोंके बहकानेसे कितनेक मुसलमान रात्रिके समय उनकी सोते हुयेकी चार पाई उठाके सिन्धु नदीमें डुबोनेको ले गये। परन्तु जब चारपाईको डुबोनी चाही तो वह तो उनके कन्धों ही पर चिपक रही। इस से घबराकर उन मुसलमानोंने क्षमा माँगी। तब उन्होंने कहाकि चार पाई तो पीछी ले जाके रख दो और सदाके लिये हिन्दुओंका चिह्न धारण करो तब छोड़ूँ। मुसलमान इस बातको स्वीकार करके 'चोटी' रखाने लगे; सो उनकी सन्तानभी आजतक बलीरामके नामकी चोटी रखवाते हैं। और उस रोड़ी ग्राममें बलीरामजीकी छत्री है जहां प्रतिवर्ष एक मेला भरताहै। उस समय हिन्दू मुसलमान सभी उनकी ज़ियारत करनेको जाते हैं।

इसी प्रकार सिन्ध आदि देशोंके अतिरिक्त जैसलमेर, पोकरण, फलौधी, जोधपुर, पाली, नागौर मेड़ता, बीकानेर, कृष्णगढ़, आदिमेंभी कई पुष्करणे ब्राह्मण बड़े नामी सिद्ध हुयेहैं। यहांतक कि इस समयभी ऐसे कई सिद्ध पुरुष इस जातिमें विद्यमान हैं। इनकी सिद्धियोंका अधिक वृत्तान्त 'पुष्करणोत्पत्ति' नामक पुस्तकमें लिखेंगे।

—※—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्करणे ब्राह्मण ग्रन्थ कर्त्ता।

पुष्करणे ब्राह्मण सदासे विद्वान् होते आये हैं। इस समय भी सिन्ध, कच्छ, गुजरात, मारवाड़, आदिमें कई अच्छे २ विद्वान् विद्यमान हैं। इनके निर्माण किये हुये ग्रन्थोंको छोड़कर इनके पूर्वजों ही के निर्माण किये हुये ग्रन्थों का वर्णन करें तो भी एक बड़ी पुस्तक बन जावे। अतः उन सबका निर्णय पुष्करणोत्पत्ति नामक पुस्तक में लिखेंगे जिससे पुष्करणे ब्राह्मणों के धर्म शास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष्, वैद्यक, तथा मन्त्र शास्त्र आदि के पूर्ण ज्ञाता होने का परिचय मिलेगा।

जिस प्रकार ये संस्कृत के कवि होते आये वैसे भाषाके भी अच्छे२ कवि होते आये हैं। एक समय जोधपुर में विद्वान् कवियोंकी एक सभा एकत्र हुई तो वहां पर अधिकांश चारण तथा भाट ही अधिक थे। उस सभा में 'हरलालजी' नामक एक पुरोहित जातिके पुष्करणे ब्राह्मण, जो कवि थे, आ गये। उनको देख कर उन चारण भाटोंमें से कोई बोल उठा कि ब्राह्मण कविता करनी क्या जानें? इसपर उन हरलालजीने तत्काल एक कवित्त कहा था वह आगे लिखताहूं जिससे इनके भाषाके कवि होनेका भी परिचय मिलेगा।

आदि कवि विधि वेद रचे
पुनि व्यास पुराण बनाय के दीनी।
सो सुन शुक्र रचे सब काव्य
तुलसी अरु सूर सुनाय के दीनी॥
लाल भने कवि के सब भेद

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेवग ने अध वीच में छीनी ।
ब्राह्मण के मुख की कविता
कछु भाट लई कछु चारण लीनी ॥

—०—

पुष्करणे ब्राह्मणों का धम

यह जाति सदासे श्रौत (वेद) और स्मार्त (स्मृति) धर्म की अनुयायिनी है। और यह स्वयं भी धर्मकी पुष्टि करनेवाली होने ही से तो इसका नाम भी 'पुष्टिकरणा' (पुष्करणा) हुआ है। मारवाड़ देशमें 'पुष्टि मार्ग (वल्लभ कुलकी सम्प्रदाय)' के धर्मका प्रचार हुआ है तबसे पुष्करणोंने भी इस सम्प्रदायको स्वीकार की है। इस देशमें पुष्टिमार्गका प्रचार होनेका वृत्तान्त यों है।

जोधपुरके महाराजा अभयसिंहजीके गुरु नाथावत व्यास माणिकचन्दजी व जैसलमेर के महाराजा अमरसिंहजी के पाट व्यास (गुरु) मधुवनजीने प्रथम इस सम्प्रदायके धर्मको स्वीकार किया और देश भरमें प्रचार करानेके लिये अपने २ महाराजाओंको भी इस धर्मको स्वीकार करनेका बहुत आग्रह किया। उ महाराजाओंने कहा कि पुष्टिमार्गके आचार्य गोसांईजी महाराज को यदि हम गुरु बना लेंगे तो फिर हमारे वंशवालेभी इन्हींके वंशवालोंको गुरु मानने लग जावेंगे जिससे आपके वंशवालोंका फिर उतना गुरु भाव नहीं रहेगा। परन्तु धर्मकी पुष्टि चाहनेवाले उन महाशयोंने अपने वंशवालों का गुरुभाव कम हो जानेकी कुछ भी परवाह न करके अपने महाराजाओंको गोसाईजी महाराजके शिष्य बना दिये। इसी प्रकार बीकानेरके महाराजा भी इन के शिष्य पुष्करणों हीके अनुरोधसे हुये। तबसे जैसलमेर, जोधपुर,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बीकानेर आदिकी रियासतोंमें पुष्टिमार्गके धर्मका प्रथम ही प्रथम प्रचार हुआ। फिर जैसलमेर के तो महाराजा मूलराजजी व जोधपुरके महाराजा विजयसिंहजी और बीकानेरके महाराजा सूरतसिंहजीने इस धर्मका बहुतही अधिक प्रचार किया था

कच्छ तथा सिन्ध देशके भाटिये महाजनोंमें भी जो पुष्टिमार्गका प्रचार हुआ है उसके प्रारम्भ करानेवाले मुख्य पुष्करणे ही ब्राह्मण हैं। क्यों कि भाटिये महाजनोंके वंशपरम्पराके गुरु पुष्करणे ब्राह्मणोंने जिस धर्मको स्वीकार कर लिया तो फिर उनके शिष्य भाटिये महाजन क्यों नहीं करते अर्थात् अपने गुरुओंका अनुकरण इन्होंने भी कर लिया।

अतः एव पुष्टिमार्गकी सम्प्रदाय में पुष्करणे ब्राह्मणों की जाति 'लाल फ़ौज (वल्लभ कुल की अङ्ग रक्षक सेना)' समझी जाती है।

पुष्करणे ब्राह्मणों की धर्म पर दृढ़ता।

पुष्करणे ब्राह्मणों की प्राचीनता के प्रमाण सं० ९९२ तथा ९९६ में टंकशाली-व्यास लल्लूजीका लख भाज करने आदिका वृत्तान्त लिखाहै। उनके वंशमें २३ पीढ़ी पीछे व्यास राम ऋषिजी हुये थे। वे आयुर्वेद (वैद्यक) विद्य में अद्वितीय थे। यह विद्या इनके घरमें वंशपरंपरासे चली आती थी। इसी विद्याके प्रभावसे इनके पूर्वजोंको बादशाहों से कुछ जागीर भी मिल थी। एक समय बादशाहके अदृष्ट व्रण (अदीठ फोड़ा) होगयाथा, जिसका इलाज इन्होंने बहुत सावधानीसे करके आराम कर दिया। इस जीवदानके बदलेमें बादशाहने अपनी कन्या इनके पुत्र देवरूपि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीको व्याह देनी चाही। वह शाहज़ादीभी इनके रूपसे मोहित हो गई थी। किन्तु राजकन्या सहित राज सम्पदाके ऐश्वर्य का लाभ देखकर भी धर्मकी पुष्टि करनेवाले क्या ऐसे अधर्मके कार्यको कभी स्वीकार करसकतेथे? उस समय इस श्लोकका स्मरण किया:—

न जातु कामान्न भयान्न लोभात्।
धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतोः।
धर्मो नित्यः सुखदुःखस्त्वनित्यो
जीवो नित्यो हेतुरस्यत्वनित्यः॥

अर्थात् धर्मको न तो किसी कामना के लिये, न भयसे, न लोभसे और न जीवनके लिये त्यागे। क्योंकि संसारमें जितने प्रकारके सुख दुःख हैं वे सब अनित्य हैं किन्तु यह धर्म है सो नित्य है और जीव भी नित्य है। अतः अनित्य वस्तु के लिये नित्य वस्तु का त्याग कभी भी न करे।

अतः धर्म पर दृढ़ विश्वास करके उस आपत्तिसे बचने के लिये बरात बनाके विवाह करनेको पीछा आनेका बहाना करके वहांसे अपनी जागीर काकरेच के मुल्कमें चले आये और वहां से फिर व्याह करनेकी नाहीं करदी। तब बादशाही फ़ौज आई तो ये सब कुटुम्ब सहित लड़ मरे केवल एक देवऋषिजी अपना जी बचा पूर्वजोंकी जागीरको तिलाञ्जलिदे के ब्रह्मचारी के वेषमें जैसलमेरमें जाके लड़कों [illegible] ढ़ाने लग गये। दैव योग से वहाँके भाटी राजा लक्ष्मणजीके भी बहुत समयसे वैसा ही अदृष्ट व्रण था। उन्होंने उनको भी आरोग्य कर दिये। फिर राजाने इनका विवाह अपनी वंशप रम्पराके पुरोहि[illegible] देवायतजीके वंश-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घर पुरोहित 'पैलाजजी' की कन्या व लखूजी तथा वीरोजी की बहन 'वगड़ी' के साथ अपनी ओरसे धन लगाक करा दिया। तथा इनको अपना पाट व्यास (गुरु) बनाये सो आजतक जैसलमेर के राज्य में पाट व्यास उन्हीं की सन्तान वाले हैं॥ देखो जैसलमेरकी तवारीखका पृष्ठ ४६)

एक समय देवऋषिजी द्वारिकाकी यात्राको गये। वहां पर श्री भगवान्ने साधुका बेष धारण करके इनके पास आके कहा कि "तुम्हारे वंशमें ३२ पीढ़ीसे जो सुवर्ण सिद्धि (रसायन विद्या) चली आती है इसीलिये तुमारा वंश नहीं बढ़ता है अतः तुम इस विद्याको त्याग दे सो फिर तुम्हारा वंश बहुत बढ़ेगा"। यह कहकर इनकी जटामें जो रसायनकी शीशी थी वह लेके गौमतीजीमें फेंकके आप अदृश्य हो गये। तबसे देवऋषिजीने इस विद्याको छोड़ दी। तब इनके ४पुत्र हुये। उनमेंसे प्रथम पुत्र 'पोपाजी' की सन्तानतो जोधपुर आदिमें नाथावत, गिरिधरोत, चत्ताणी, जोधावत आदि है; दूसरे पुत्र 'जूठाजी' की सन्तान बीकानेर आदिमें जूठाणी, लालाणी, कीकाणी आदि हैं; तीसरे पुत्र 'नउंजी' की संतान जैसलमेर आदिमें रणछोड़, हरखा, जसाणी, भोपत, श्रीधर, किसनाणी, डावांणी, गोविंद, सेऊवडसी आदि हैं और चोथे पुत्र गदाधरजीकी सन्तान कच्छ आदिमें हैं। भगवान्की आज्ञासे रसायन विद्याको छोड़ देनेसे इनका वंश इतना बढ़ा कि ४५० ही वर्षोंमें उन ४ पुत्रों की सन्तानके इस समय अनुमान ४००० घर होंगे। व्यास लल्लूजीके वंशधर होनेस देव ऋषिजी की संतानवाले भी पुष्करणों में व्यास कहलाते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्करणे ब्राह्मणों का आचार।

देशों के भेदसे गौड़ और द्राविड़ ब्राह्मणोंकी पृथक्२ सम्प्रदायें चली आती हैं। देश भेदसे इनके आचार विचार, खानपान आदि सम्पूर्ण व्यवहारों में भी भेद पड़ गया है। पुष्करणे ब्राह्मणोंकी जाति पञ्च द्राविड़ोंके अन्तर्गत गुर्जरोंकी एक शाखा होनेसे इनका भी आचार विचार, खानपान आदि द्राविड़ों ही के अनुकूल चला आता है। परन्तु बहुत समय तक निर्जल देश में निवास करने और वहांके राज्य कर्त्ताओं के पुरोहित, गुरु, मुसाहिब आदि होनेसे उनके साथ२ बहुत वर्षों तक आपत्कालमें जहांतहां भटकते फिरने आदि कारणोंसे तथा मुग़लोंके शासनकालमें जैसलमेर, जोधपुर आदिमें उनका अधिकार हो जानेके समय उनके अत्याचारसे लोगोंका प्राण बचानाही जब महा कठिन हो गया था वैसे समयमें ऐसा कठिन आचार निर्वाहहोता न देखके पुष्टिमार्ग (वल्लभाचार्यजी की सम्प्रदाय)* की मर्यादानुसार अनसखरी अर्थात् पक्का भोजन (लड्डू पूरी आदि) द्विजमात्र के हाथका खाने लग गये। किन्तु सखरी अर्थात् कच्चा भोजन (सीरा लपसी आदि) तो अपनी जातिवालोंके सिवाय अन्य किसी ब्राह्मण के भी हाथका बनाया हुआ अब भी नहीं खाते हैं। परन्तु कई पुष्करणे ब्राह्मण तो अब तक भी अपनी पूर्व मर्यादानुसार लड्डू पूरी आदि पक्का भोजन भी दूसरोंके हाथ का बनाया

* पुष्टि मार्गके आचार्य श्री गोसाँईजी महाराज भी द्राविड़ सम्प्रदाय में के तैलङ्ग ब्राह्मणोंकी एक शाखा में हैं और पुष्करणे ब्राह्मणोंने भी उसी द्राविड़ सम्प्रदाय के गुर्जर ब्राह्मणों की एक शाखा सिन्धी ब्राह्मण होने से पुष्टि मार्ग का आचार स्वीकार कर लिया है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुआ नहीं खाते हैं। इसीलिये सम्पूर्ण जातिको भोजन करानेके समय तो–क्या कच्चा और क्या पक्का–सभी पकान्न अपनी जातिवालोंही के हाथसे बनाया जाता है। इस प्रथाके लिये सम्पूर्ण पुष्करणे ब्राह्मणों को बालपन ही से भोजन बनाने की शिक्षा दी जाती है।

इसके उपरान्त विवाह आदिके समय जातिमें बाँटनेके लिये जो लड्डू बनाये जाते हैं तो प्रथम आटेको केवल घृत में भून (सेक) लेते हैं। फिर गुड़को भी केवल घृतमें गला लेतेहैं। पीछे उसमें उक्त भूना हुआ आटा मिलाके लड्डू बना लेते हैं। इनमें तैल वा पानी आदि कुछ भी पदार्थ न मिलनेसे ये लड्डू द्राविड़ सम्प्रदाय के अनुसार फलवत् ग्राह्य होते हैं। इससे भी पुष्करणे ब्राह्मणों का प्राचीन आचार द्राविड़ सम्प्रदायके अनुकूल होने का पूर्ण पता लगता है।

पुष्करणे ब्राह्मणों में संस्कार।

धर्म शास्त्रों की आज्ञानुसार इस जातिमें भी गर्भाधानादि संस्कार यथावत् किये जाते हैं। जैसे गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नाम करण, अन्न प्राशन, चूडा कर्म, कर्ण वेध, उपनयन, वेदाध्ययन, समावर्त्तन, विवाह आदि संस्कार उचित कालमें करते हैं। इन में सोमन्तोन्नयन, जात कर्म, चूडा कर्म, यज्ञोपवीत, समावर्त्तन, विवाह, और अन्त्येष्टि के समय तो अपनी सामर्थ्य के अनुसार बहुत अधिक द्रव्य लगाते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्करणे ब्राह्मणों में वानप्रस्थ आश्रमी ।

इस जाति में भी आश्रम धर्मानुसार वानप्रस्थ आश्रम का भी पालन करते आये हैं। जैसे जोधपुरके चण्डवाणी जोशी वृत्ति नारायणजी, पुरोहित परशु रामजी, बलदेव ऋषि, बोहरा अणतरामजी आदि बड़े तपस्वी तेजस्वी व वचनासिद्ध महात्मा हो गये हैं। तथा अब भी पुरोहित रूपरामजी आदि कई महाशय उक्त आश्रम की शोभा बढ़ा रहे हैं।

पुष्करणे ब्राह्मणोंमें संन्यासी ।

वानप्रस्थ के उपरान्त कई महाशय संन्यास भी धारण कर के परम पदको प्राप्त होते हैं। जैसे मत्तड़ जातिके एक पुष्करणे ब्राह्मण संन्यास धारण करने पर 'सुखानन्द' नाम से प्रसिद्ध हुये थे। उन्होंने सदेही कैलास गमन करने के लिये 'केदार कल्प' की साधना किई तो उनका शरीर ऐसा दृढ़ हो गया कि उसे अग्नि भी नहीं जला सकती थी। फिर वे बद्रिकाश्रम हो के हिमालय की ओर आगे बढ़ चले गये। जोधपुर से कई लोग जो उनके साथ गयेथे उन्हें वे बहुत दूर तक बरफ पर जाते हुये दृष्टि आये। फिर पर्वत की ओटमें आ जाने से नहीं दीखे। उन सुखानन्द स्वामी जी की बागीची तथा कुआ आदि आश्रम अब तक जोधपुर में पुष्करणे ब्राह्मणों की स्वाधीनता में बहुत वर्षों से चला आता है।

इसी प्रकार जोधपुर के कावजी नामक एक चत्ताणी व्यासने बड़ौदे में द्राविड़ सम्प्रदाय के एक प्रतिष्ठित संन्यासी जी से संन्यास धारण किया था। तब फिर वे 'अचला नन्दजी' नाम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से प्रसिद्ध हुये। एक विशा जाति के पुष्करणे ब्राह्मण 'भौमानन्दजी' नाम से बड़े संयमी हुये थे। वे मौन रखते थे। एक दिन किसी मूर्खने उन के परमहंस पद की परीक्षा करने के लिये चूने के पेड़े बना कर खिला दिये और वे प्रसन्नता पूर्वक खा गये। किन्तु उन को कुछ भी बाधा नहीं हुई। इस बात को देख कर वह मूर्ख बहुत घबराया और क्षमा प्रार्थना किई।

पुष्करणे ब्राह्मणोंकी कुलीनता।

द्विजों में उत्तम कर्म करने वाले तो कुलीन और अधम कर्म करने वाले अकुलीन माने जाते हैं। अतः पुष्करणे ब्राह्मणों में भी कन्या विक्रय आदि निन्द्य कर्म करने वाले तो अकुलीन और न करने वाले अकुलीन मानने की प्राचीन प्रथा है। जिस कुल में पूर्वोक्त निन्द्य कर्मों का दोष नहीं लगा हो वह कुल तो चाहे निर्धन ही क्यों न हो, यहां तक कि केवल कुंकुम और कन्या के अतिरिक्त कुछ भी नहीं दे सके, तो भी उस कुल से कन्या लेने देने का सम्बन्ध प्रसन्नता पूर्वक प्रायः सभी पुष्करणे लोग कर लेते हैं। किन्तु जिस कुल में पूर्वोक्त दोष लग गया हो तो फिर उस से सम्बन्ध रखनेमें प्रायः हिचकते हैं। इतना ही नहीं। किन्तु कच्छ देश वाले तो उन को अपनी जाति से भी पृथक् जाति (अर्थात् अकुलीन जाति) समझते हैं। और उन की कन्या व्याह लाने वाले को भी दूसरी जाति की कन्या व्याह लाने वाला (अकुलीन) पुकारते हैं।* इस प्रकार जाति

*इसी बात को सुन कर कितनेक अनभिज्ञ मारवाड़ी पुष्करणे ब्राह्मण ऐसा खयाल करने लग गये कि सचमुच ही कच्छी पुष्करणे दूसरी जाति की कन्या व्याह लाते होंगे। किन्तु यह उनका केवल भ्रम है, क्योंकि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रथा की कठोरता के कारण पुष्करणे ब्राह्मणों की समग्र जाति कन्या विक्रय आदि दुष्कर्मों से बहुधा बची हुई है।

कच्छी पुष्करणे जिसे दूसरी जाति कहते हैं वह वास्तव में पुष्करणे ब्राह्मणों से भिन्न कोई अन्य जाति नहीं है और न पुष्करणोंकी जातिसे बाहर किई हुई जाति है। केवल कन्याओंका द्रव्य ले लेनेसे उन्हें अकुलीन समझकर दूसरी जाति कहते हैं, जिसका वृत्तान्त यों है:—

कच्छ देशके समीप वर्त्ती हालार, मच्छुकाँठा, सोरट, गोयलवाड़, और काठियावाड़ आदि प्रान्तोंके छोटे २ ग्रामोंमें वासु, हेड़ाउ (पुरोहितोंके सह गोत्री), कपिलस्थलिया (छाँगाणी), और बोड़ा आदि नख वाले पुष्करणे ब्राह्मणोंके घर अनुमान १००।१२५ होंगे उनके साथ कच्छी पुष्करणोंका रोटी बेटीका सम्बन्ध सदासे चला आता है। परन्तु बाहर ग्रामोंमें रहनेके कारण पिछले थोड़े समयसे उनको विना द्रव्य दिये कन्याएं मिलनी दुर्लभ हो जाती देखकर वे स्वयं भी लाचारन अपनी भी कन्याओंका द्रव्य लेने लग गये। इसी लिये उन्हें दूसरी जाति पुकारने लग गये हैं।

परन्तु पुष्करणोंकी जाति मर्यादानुसार कन्याका द्रव्य लेने वाला जाति से बाहर कदापि नहीं हो सकता। इसी लिये कच्छियोंने भी केवल सम्पूर्ण जाति भोजनके समय बीचमें लकड़ी रख देनेके अतिरिक्त परस्परमें एक दूसरेके भोजन आदि अन्य व्यवहारोंमें कुछ भी अन्तर नहीं डाला है। इतनाही नहीं किन्तु आवश्यकता पड़ने पर उनकी कन्याएं भी व्याह लाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि बीचमें लकड़ी रखना भी प्रारम्भमें तो केवल इसी लिये किया गया होगाकि इस भयसे ये कन्या विक्रय करना छोड़ दें, परन्तु अन्तमें वह प्रथाही चल पड़ी होगी। पर ऐसे कन्याओंका द्रव्य लेने वाले इने गिने तो सभी समुदायोंमें पाये जावेंगे तो भी उनका इतना अपमान कहीं भी नहीं किया जाता जितना कि कच्छी पुष्करणोंने किया है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्करणे ब्राह्मणोंमें कन्या देनेकी प्राचीन रूढ़ि।

इस जाति वाले कन्याएं जिन गोत्रों में सदा से देते आये हैं, प्रायः फिर भी कन्याएं उन्हीं गोत्रों में देने ही में अपना विशेष गौरव समझते हैं। इसी प्रकार कन्याएं जिन गोत्रों की सदा से लेते आये हैं, उन्हीं गोत्रों से फिर भी कन्याएं मिलने में भी अपना विशेष सौभाग्य समझते हैं। अर्थात् कन्या सम्बन्ध में जहां तक हो सके नवीन सम्बन्धी करने की अपेक्षा प्राचीन सम्बन्धियों ही को श्रेष्ठ मानते हैं। इस लिये इस जाति में यद्यपि कन्याओं की कमी से तो अलबत्ता किसी २ को कन्या मिलनी दुर्लभ हो भी जाती है, तथापि इस प्राचीन प्रणाली के कारण साधारणतः प्रत्येक साधारण स्थिति वालों को भी कन्याएं मिल ही जाती हैं।

पुष्करणे ब्राह्मणों में कन्या देने की उदारता।

एक समय जोधपुर के महाराज शूरसिंहजी के गुरु व मुसाहिब श्रीमान् नाथाजी व्यास को उन की स्त्रीने कहा कि अपनी कन्या विवाह करने योग्य हो गई है अतः अब इस की सगाई कर के शीघ्र विवाह कर देना चाहिये। नाथाजीने पूछा कि लड़का

न्यात पतित पावनहै, न्यातही अपांक्त कोभी सपांक्त कर सकती है। तो फिर उनके साथ खुल्लम खुल्ला रोटी बेटी का सम्बन्ध रखते हुये भी सम्पूर्ण जाति भोजनके समय बीचमें लकड़ी रखना और उनको दूसरी जाति कह कर लोगोंमें वृथाभ्रम पैदा करना कच्छी समुदायके पुष्करणे ब्राह्मणों को शोभा नहीं देता। अतः कच्छी पुष्करणोंको चाहिये कि वे उन ग्रामवालों पर दया कर उन्हें इस अपमान से बचा के महान् यशके भागी बनें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कितना बड़ा देखें ? स्त्रीने अपने रसोई करने वाले एक नौकर के लड़के को दिखा के कहा कि इतना ही बड़ा और ऐसा ही स्वरूप वान् होना चाहिये। नाथाजीने कहा कि बहुत अच्छा। एक दिन स्त्रीने फिर पूछा कि क्या कोई लड़का मिला ? नाथाजीने कहा कि हां मिल गया। स्त्रीने पूछा कि वह कौनसा है ? नाथाजीने कहा कि जिस रसोई करने वाले के लड़के को तुमने पसन्द किया था वही तो है। इस बात को सुन कर स्त्री चुप हो गई। तब नाथाजीने कहा कि यह लड़का अपनी ही जाति का है, सुन्दर स्वरूप वाला भी है, गोत्र तथा कुल में भी अपन योग्य है, और तुमने भी इसी को पसन्द किया था। अर्थात् एक निर्धनता के अतिरिक्त और कोई हानि नहीं है। और इस हानि को तो तुम ही मिटा सकती हो। अर्थात् जितनी इच्छा हो उतना धन दे देना। ऐसा कह के अपनी कन्या की सगाई उसी अपनी रसोई बनाने वाले के लड़के से कर के उसे व्याह दी। और धनादि सम्पदा देके उसे भी धनाढ्य बना दिया।

इसी प्रकार जैसलमेर के एक प्रतिष्ठित व श्रीमान् व्यास जीने भी अपनी 'वाली' नाम की कन्या एक रसोई करने वाले अपने पुष्करणे नोकर को दे दी थी।

ऐसे कइयोंने ही कन्याएं दी हैं। परन्तु उन पुरानी बातों को छोड़कर अभी सं० १९३१ में ही जोधपुर दरबार के मुसाहिब श्रीमान् चण्डवाणी जोशी हंसराजजीने भी अपने पुत्र आशकरण जी की कन्या एक अत्यन्त साधारण स्थिति के लड़के को दे कर उसे भी श्रीमन्त बना दिया था

विचार का स्थल है कि कहां तो ऐसे २ राज्य मान्य श्री-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन्तों की कन्याएं और कहां अत्यन्त ही साधारण स्थिति के लड़के? अर्थात् कन्याएं देनेमें जैसी उदारता पुष्करणे ब्राह्मणोंमें है वैसी स्यात् ही किसी जातिमें देखने वा सुननेमें आई होगी। यद्यपि अब ऐसी उदारता का कुछ २ लोप होना सम्भव होता जाता है, तथापि ऐसे उदारोंकी अब भी कमी नहीं है; और जो २ ऐसी उदारता दिखलाते हैं उन्हें उपरोक्त 'नाथाजी व्यास' की उपमा देते हैं।

पुष्करणे ब्राह्मणोंमें सगाईकी शास्त्र मर्यादा।

कन्या का दान करने में धर्म शास्त्रों में २ कर्म मुख्य माने हैं। प्रथम तो वाग्दान अर्थात् वचन से कन्या देना जिसे सगाई करना कहते हैं। और दूसरा कर्मदान अर्थात् कन्या का हथलेवा पाति से जोड़ के प्रत्यक्ष कन्या देना जिसे विवाह करना कहते हैं। सगाई पूर्व काल में तो विवाह के समय से थोड़े ही समय पहिले करते थे और पञ्च द्राविड़ सम्प्रदाय वाले ब्राह्मण तो आज तक प्रायःऐसे ही करते हैं। अतः पुष्करणे ब्राह्मण भी पञ्चद्राविड़ों में के गुर्जरोंकी एक शाखा होने से उसी प्राचीन रूढ़ि पर चलते हैं। किन्तु सगाई करने के पहिले जो कन्या देने का विचार स्थिर करते थे कि हमारी लड़की तुम्हारे लड़के को देंगे, काल पाके लोक रूढ़ि से उसी को सगाई पक्की हुई मानकर लड़कों के बाप लड़कियों के लिये गहना कपड़ा आदि देने लग गये। परन्तु पुष्करणे ब्राह्मण कन्या देने का ऐसा विचार स्थिर कर लेने मात्र को शास्त्रानुसार सगाई होनी नहीं मानते इसी लिये विवाह से पहिले लड़की के लिये गहना कपड़ा आदि कुछ भी नहीं देते ऐसी अवस्था में यदि किसी का पाहिले का विचार बदल जावे तो अपने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लड़के लड़की की सगाई पक्की नहीं भी करते हैं। इस बात को देख कर ही लोग कहते हैं कि पुष्करणों में * सगाई छूट जाती है। किन्तु ऐसा कहने का मूल कारण केवल देश रूढ़ि पड़ जाना ही है। वास्तव में पुष्करणों में सगाई शास्त्र मर्यादानुसार 'वाग्दान' हो जाने पर ही पक्की समझी जाती है। इस प्रकार सगाई हो जाने पर पुष्करणों में न तो कभी पहिले ही छूटी है और न कभी आगे ही छूटने की सम्भावना होती है।

पुष्करणे ब्राह्मणों में शास्त्र मर्यादानुसार वाग्दान-सगाई-करने की यह रीति है कि विवाह से १ वा २ दिन पहिले कन्या के कुटुम्ब वाले स्त्री पुरुष एकत्र हो के लड़के वाले के यहां जाते हैं। लड़के वाले भी सब एकत्र हो के लड़के को गहने कपड़े पहिना के घर के बाहर एक गद्दी पर बिठला देते हैं। फिर वहां पर लड़के और लड़की के कुल के तथा इन दोनों के ननिहाल (नानाणे) वालों के कुल के गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा आदि का उच्चारण कराते हैं जिस से यह निश्चय हो जावे कि सगाई कर ने में कोई गोत्र तो नहीं अटकता। इस के पीछे इन चारों ही कुटुम्बों के अर्थात् लड़के और लड़की के बाप, दादा, परदादा, और नाना, पर नाना, लड़ नाना के नाम तथा दोनों की माताओं के नाम पूछे जाते हैं; जिस से कि यह निश्चय करना है कि तीन पीढ़ी तक में किसी प्रकार की अकुलीनता तो नहीं है

* जिस प्रकार शास्त्र मर्यादानुसार वाग्दान होनेसे पहिले पुष्करणोंमें सगाई पक्की नहीं समझी जाती उसी प्रकार श्रीमाली ब्राह्मणों में भी सगाई पक्की नहीं समझी जाती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसके उपरान्त जब सगाई करनेका विचार दृढ़ हो जाता है तब 'वाग्दान' (जिसे सम्प्रदान भी कहते हैं) अर्थात् कन्या देने का संकल्प कर देते हैं। तभी सगाई पक्की हुई समझ के फिर उसी समय लड़की वाले लड़के वालोंको मिलनी देते हैं। यह इसी सुनियमका प्रताप है कि पुष्करणे ब्राह्मणों में सगाई तथा विवाह सम्बन्धी किसी प्रकारका वाद विवाद राज्य तक कदापि नहीं जाता है।

पुष्करणे ब्राह्मणोंमें विवाहको शास्त्र मर्यादा।

शास्त्र मर्यादा जैसे सगाई करने की है वैसे ही विवाहकी भी है। अतः पुष्करणे ब्राह्मणों में विवाह भी शास्त्र मर्यादानुसार ही होता है। विवाह सम्बन्ध में आधुनिक रूढ़िके अनुसार न तो प्रत्येक लड़के लड़की की जन्म पत्रिका आदि मिलाते हैं और न प्रत्येक लड़के लड़कीके लिये विवाहका मुहूर्त्त ही पृथक् २ निकालते हैं किन्तु पारस्कर आदि गृह्य सूत्रों की आज्ञानुसार विवाह करने योग्य श्रेष्ठ कालमें अपने२ ग्राममें समय२पर केवल एक ही उत्तम मुहूर्त्त निकाल लेते हैं उस समय वहां की जाति भरमें जितने विवाह होनेवाले हों वेसभी उस एकही मुहूर्त्तमें हो जाते हैं। हां विवाहके कार्यके प्रारम्भसेलेके विवाहका कार्य समाप्त होने तकके विवाहके अंगभूत प्रत्येक कार्य के लिये शास्त्रकी आज्ञानुसार पृथक् २ मुहूर्त्त अवश्य नियत करते हैं। अर्थात् वैसे तो विना मुहूर्त्त के तो कोई कार्य नहीं करते, इसलिये पुष्करणों में विवाह हो जानेके पीछे भी विवाहका कार्य समाप्त होने में १५।२० दिन लग जाते हैं। सगाई करनेका विचार स्थिर कर लेनेसे लगाके विवाह सम्बन्धी समस्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कार्य सम्पूर्ण होने तक का विवरण रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़के तीसरे भागके पृष्ठ १६२ से लगा के १८० तक (१९ पृष्ठों) में विस्तार से लिखा गया है। इन सब कार्यों के शास्त्र मर्यादानुसार होनेके प्रमाण विस्तार पूर्वक 'पुष्करणोत्पत्ति' नामक पस्तक में दिखलावेंगे।

पुष्करणे ब्राह्मणों में सम्बन्धियों के परस्पर प्रेम।

विवाह आदि के समय सम्बन्धियों में परस्पर प्रेम जैसा पुष्करणे ब्राह्मणों में सदासें रहता आया है वैसा स्यात् ही किसी और जातिमें रहता होगा। इस शिष्टाचारके लिये पुष्करणों की जाति प्रसिद्ध है। रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़ने भी अपने तीसरे भागके पृष्ठ १६२ में इनकी प्रशंसा की है वही पाठकों को सुनाने के लिये यहां पर लिख देता हूं:—

"पुष्करणे ब्राह्मणो में व्याह शादीके दस्तूर बहुत सीधे सादे हैं और उन के आपसके बर्त्ताव भी बहुत अच्छे हैं जिस से बहुत कुछ फ़ायदा न्यात संबंधी होता है, और इसी संबंधसे इनके व्याहों में कभी कोई झगड़ा बखेडा दूसरी कौमों के माफ़िक़ नहीं होता, बल्कि दुतरफ़ा बहुत रंग और प्यार रहता है। बेटीका बाप चाहे कुछ न दे तो भी बेटेका बाप और भाई वग़ैरा उसकी तारीफ़ ही करते हैं कि आपका क्या कहना है आप तो इन्द्र होकर हमारे ऊपर बरसे हैं।

"दूसरी उमदा बात यह है कि व्याह में चाहे ज़ियादा रुपया खरच करें और चाहे कम, मगर बहुत कम हिस्सा उसका

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग़ैर कौमों में जाता है। क्यों कि जो देने दिलानेका दस्तूर है, वह सब अपने ही लागती वालों में दिया जाता है, ग़ैर क़ौम नाई ब्राह्मण भाट वग़ैरा को, जैसा कि दूसरी कौमोंमें दस्तूर है, नहीं दिया जाता और जो दिया भी जाता है तो बहुत कम।

"तीसरे, बेटे वालेसे रोत या ब्यौहार लेनेका दस्तूर नहीं है। गरीबसे गरीब हो वह भी कुछ नहीं लेता। हां जो कोई गांवों में कुछ छुपे चोरी ले ले तो उसको अच्छा नहीं समझते।

"चौथे बिरादरी वाले खुशी से हरेक अमीर ग़रीब के घर बराबर बुलाये से आ जाते हैं। और वहां जो खाना कम भी हो तो भी थोड़ा २ खाकर वाहवाह करके चले जावेंगे, और यह बात हरगिज़ नहीं ज़ाहिर होने देंगे कि खाना नहीं था या कम था।

"पांचवें जनेऊ, ब्याह और उनके जीमन सब क़ौम के वास्ते हरसाल एक ही दिन और एक ही मुहूर्त्त पर मुक़र्रर किये जाते हैं, कि जिससे ग़रीब आदमियों का निभाव हो जाता है।"

—※—

पुष्करणे ब्राह्मणों में सती होने की प्रथा।

इस देशमें द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्यों) में सती होनेकी प्रथा परम्परासे चली आती है। तदनुसार पुष्करणे ब्राह्मणों में भी सतियें होती आई हैं। जैसेः—

जोधपुर के चण्डवाणी जोशियों की एक कन्या बोहरा जातिके एक लड़केको ब्याही थी। एक दिन रात्रिके समय वह कन्या ससुरालमें रहनेके लिये गई। किन्तु उसका पति (लड़का) अपने सोनेके स्थानका द्वार भीतरसे बन्द करके पहिले हीसे सो रहा था, इसलिये लज्जाके मारी पतिसे द्वार न खुला के रातभर कमरे के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्वारके पास बाहर ही सोती रही। सवेरा होते ही यहतो शीघ्र उठकर अपनेपीहरको चलीगई। औरउधर लड़का उठकर तापी नानकबावड़ीमें स्नान करनेगया।वहांवह दैव योगसे उसमेंडूब गया।इसको निकालनेके लियेदूसरा मनुष्य जलमें घुसा तो वह भी डूब गया। ऐसे एकके पीछे एक करके ७ मनुष्य डूब गये। इस बात को दैवकोप समझकर पीछे तो लोगोंने और किसीको भी जलमें नहीं घुसनेदिया।किन्तु अन्तमें वे७मनुष्यतोमरही गयेउस कन्याके पतिके जलमें डूब मरनेका समाचार कन्याके पीहरवालों को पहुँचने से पहिले ही उस कन्याके हृदयमें इस बातकी स्फुरणा हो गई थी। फिर वह कन्या स्नान कर पवित्र वस्त्र तथा आभूषण पहिन के 'सती' होनेको ससुराल में आ खड़ी हुई और उस बालक पतिके साथ सती हो गई। उसकी छत्री जोधपुर में सिवानची दर्वाज़ेके भीतर है; और प्रति वर्ष उस तिथिको उनके दोनों वंशवाले वहां पर जाके उत्सव करते हैं।

इस प्रकार लुद्रवा, आशनीकोट, जैसलमेर आदि से लेके जहां २ पुष्करणे ब्राह्मणों का निवास स्थान रहा है वहां २ पुष्करणे ब्राह्मणों की सतियोंपरकी कई छत्रियें अद्यावधि विद्यमान हैं; और उनके वंशवाले उनकी मानता करते हैं। इतना ही नहीं किन्तु उन सतियोंने जो२ कार्य करने की मनाई की थी उन कार्योंको भी आजतक वे नहीं करते हैं। यहां तक कि यदि वे कार्य भूलसे भी हो जाँय तोभी उनका कु फल तुरन्त जतला देता है। ऐसे कई सतियों का चमत्कार आजतक देखने में आता है। अलबत्तः जबसे सती होनेकी प्रथा इस देशमें राजाज्ञासे बन्द करदी गई है तबसे पीछे तो पुष्करणोंमें भी सती होने नहीं पाती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्करणे ब्राह्मणों का निवास स्थान।

इनके पूर्वज बहुत प्राचीनकालसे सिन्ध देशमें निवास करते थे। ऊपरी सिन्धदेश की 'आलोर' वा 'आरोर' नामकी पुरी प्राचीन राजधानी वहांके राजाओं का मुख्य स्थान, शिकारपुर ज़िले में 'रोहरी' वा 'रोहड़ी' नामक स्थानसे ३ कोश पूर्व, सिन्धु नदीके पुराने मार्गके किनारे, मुलतानसे भी चढ़ी बढ़ी थी। वह-उत्तर में काश्मीर, पश्चिम में सिन्धु नदी, दक्षिणमें समुद्र, और पूर्व में मरु स्थल-इनके मध्यमें थी। पुष्करणे ब्राह्मण वहां के राज्यकर्त्ताओं के वंश परम्पराके पुरोहित (कुलाचार्य्य) होनेसे उस 'आलोर वा आरोर पुरी' में भी अधिकतासे बसते थे।* विक्रम संवत् के प्रारम्भसे २७० वर्ष पहिले यूनान देशके बादशाह 'सिकन्दर' ने इस देशपर चढ़ाई किई तो प्रथम पञ्जाबके राजाओं पर जय प्राप्त करके फिर सिन्धकी ओर बढ़ा। उस समय आलोर

---

* 'आलोर' वा 'आरोर' में पहिले यदुवंशियों का और पीछे पँवारों का राज्य रहा। वे दोनों ही पुष्करणे ही ब्राह्मणों को अपने पुरोहित मानते थे। वहां के 'साहिर' नामक पँवार राजापर फारस देशकी सेना चढ़ आई तो उसके साथ युद्ध करके वह राजा मारा गया और उसका 'रायशा' नामक पुत्र गद्दी बैठा। इससे कई पीढ़ी पीछे 'दाहिर' नामक अन्तिम पँवार राजा संवत् ७७४ में ईरानके हाकिम हिजाज की भेजी हुई सेना के नायक मुहम्मद कासिमके साथ युद्ध करके स्वर्ग सिधारा तब उसकी रानी व पुत्र वधू अपने देश, जाति, व धर्म के मानार्थ प्रज्वलित चिता में प्रवेश कर गई।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के राजाने, जिसको यूनानियोंने 'मैसिकनोज़' करके लिखा है, सिकन्दरके सामने आके उसकी अधीनता स्वीकारकर ली। इससे सिकन्दर भी प्रसन्न हो के आगे चला गया। किन्तु इस प्रकार क्षत्रिय धर्म से विरुद्ध कायरता से एक विदेशी विजेताको शिर झुकाकर अपने उच्च कुलको कलंकित कर देनेसे राजाके कुलाचार्य्य पण्डितों (अर्थात् राज पुरोहित पुष्करणे ब्राह्मणों) ने राजाको बहुत धिक्कारा, जिससे अपने पूर्वजों के आत्माभिमानका स्मरण हो आने से राजाने सिकन्दर की सेनाको, जो वहांपर रही थी, मार भगाई। उस सेनाका नायक-प्रतिनिधि शासक-'पीथिन' भागकर सिकन्दरके प्रधान सेनापति 'फ़िलिपूस' के पास जाके बहुतसी सेना ले के पीछा आगया। तथा इस बातका समाचार पाके सिकन्दरने भी अपनी सेनामेंसे बहुतसी सेना भेज दी। उसके साथ वह राजा बड़ी वीरतासे लड़के अन्तमें वीर गतिको प्राप्त हुआ। उस युद्धमें वहांके रहनेवाले पुष्करणे ब्राह्मणभी बहुतही अधिकतासे मारे गये और जो कुछ शेष बचे वे मारवाड़ की सीमापर भाग आये जिनकी सन्तान लुद्रवा आदि नगरो में बस गई। आलोरके अतिरिक्त सिन्धके अन्यान्य राजाओंने भी इसी प्रकार सिकन्दरसे युद्ध किया था जिससे क्रोधित होके सिकन्दरने वहां पर लाखों मनुष्य क़तल करवाके सिन्ध देशको स्मशान भूमि बना दिया। उस समय सिन्ध देश मानो एकवारगी पुष्करणे ब्राह्मणों से भी शून्यसा हो गया था। उस आलोर नगरके युद्धके समय जो पुष्करणे ब्राह्मण मारे गये उनमें अनेकों की स्त्रियें सती हो गई थीं जिनकी छत्रियें सं० १०१९ तक तो विद्यमान थीं। परन्तु उसी व-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

षेमें एक ऐसा भारी भूकम्प आया कि उस नगरीको धराशायी बना देनेके साथ उन छत्रियोंका भी नाम निशान मिटा दिया। किन्तु उन सतियोंके गौरवको तो वह भूकम्पभी नहीं मिटा सका, अर्थात् यद्यपि उन सतियोंको हुए आज २२३६ वर्ष व्यतीत हो गये हैं किन्तु उनके नामके गीत पुष्करणोंमें उसी प्राचीन सिन्धी कहीं२आजतक भाषामें गाये जाते हैं, जिनके सुननेसे उन सतियों की महिमाके साथ२ पुष्करणे ब्राह्मणोके प्राचीन निवासस्थान 'आळोर' पुरीका भी स्मरण हो आता है।

इस समय पुष्करणे ब्राह्मणोंका निवासस्थान (१) सिन्ध, (२) कच्छ, (३) गुजरात, (४) खानदेश, (५) पञ्जाब, (६) घाट, और (७) मारवाड़ है। इन्हीं देशोंके कारण इनके सात समुदाय बनगये हैं।

(१) कराची, हैदराबाद (सिन्ध), शिकारपुर, नगरठठा, सक्खर, टण्डा, नासरपुर, खैरपुर, रोहिड़ा, स्याहबन्दर, सेहवण, आदिके सिन्धी; (२) माँडवी, लखपत, नारायण सरोवर, आशापुर, भुज, अंजार आदि के, तथा काठियावाड़के पोरबन्दर, जामनगर, खम्भाळिया आदि के, तथा मच्छु काँठा, सोरठ, गोलवाड़ आदिके ये सभी कच्छी; (३)पाटन, अहमदाबाद, बड़ौदा, और सूरत आदिके गुजराती; (४) बुरहानपुर, बीजापुर, जळगाँव धरणगाँव, और अमरावती आदिके खानदेशी; (५) लाहोर, मुलतान, सूजाबाद, बहावलपुर, बन्नू, डेराइसमाइलखाँ और डेरागाज़ीखाँ आदिके पञ्जाबी; (६) उमरकोट, मिठी, छाछरा, और चेलार आदिके घाटी; और(७) जैसलमेर, विक्कूपुर, पोकरण, फलौधी, जोधपुर, पाली, नागौर, मेड़ता, बीकानेर, अजमेर, कृष्णगढ़, और जैपुर आदिके मारवाड़ी समुदायके हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यद्यपि देश भेदसे इनके समुदाय तो पृथक्२ हो गये हैं तथापि इन सबके आचार विचार, खान पान आदि सम्पूर्ण व्यवहारों में अपनी 'द्राविड़ सम्पदाय' के अनुकूल जाति मर्यादा जो इनके प्राचीन निवासस्थान सिन्ध देशमें थी उसी मर्यादाका पालन अब भी सर्वत्र ही एकसीसा होता है।* इसी लिये इन सब में परस्पर एक दूसरेके साथ भोजन व्यवहार रखनेमें तो कोईभी आपत्ति नहीं करता है। हां बहुत दूर देशोंके कारण आने जाने में असुविधा तथा आपसमें परिचय न रहनेसें खुल्लम खुल्ला कन्या देने में अलबत्ता संकोच करने लग गये हैं (जैसाकि अन्यान्य ब्राह्मणों में भी होता है) किन्तु विचार करके देखा जावे तो परोक्ष रुपसे तो कन्या देने लेने का व्यवहारभी सभी समुदायोंके साथ सदासे चला आता है। जैसेः—

सिन्धियोंका कच्छी, पञ्जाबी तथा धाटियोंके साथ; कच्छियोंका सिन्धी, गुजराती, खानदेशी तथा धाटियोंके साथ; गुजरातियोंका कच्छी, सिन्धी तथा खानदेशियोंके साथ; खानदेशियों का गुजराती, कच्छी तथा सिन्धियों के साथ; पञ्जाबियों का सिन्धियोंके साथ; धाटियों का सिन्धी, कच्छी तथा मारवाड़ियों के साथ; और मारवाड़ियोंका धाटियोंके साथ कन्या देने लेनेका

---

* पुष्करणे ब्राह्मणोंकी जाति मर्यादानुसार एक तो हत्यारा (मनुष्य मारनेवाला) और दूसरा नालभ्रष्ट (मद्यमांस आदि अभक्ष्य खानेवाला वा अन्य जातिके साथ भोजन करनेवाला) जातिमें नहीं रह सकता और न उसके साथ जातिका कुछ सम्बन्ध ही रहता है। जैसेः—मारवाड़में कबूतर खानेवाले और पञ्जाबमें डेरागाजीखांके आसपासके सिन्धु पुष्करणे कहलाने वाले पुष्करणे जाति मर्यादाका उल्लंघन कर देनेसे जातिसे पृथक् कर दिये गये थे सो उनकी सन्तान भी आजतक जाति से बाहर ही है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्बन्ध प्रायः होता ही है । यदि यह बीचका भेद निकाल कर सब के साथ एकसा व्यवहार प्रचलित कर दिया जावे तो पुष्करणों के लिये क्या ही उत्तम हो।

पुष्करणे ब्राह्मणों की स्थिति।

ब्राह्मणोंका मुख्य भूषण सन्तोष है। पुष्करणे ब्राह्मण भी सदासे सन्तोषी तथा निस्पृही (निर्लोभी) होते आये हैं। सैकड़ों वर्ष पहिले जब इनके पूर्वज सिन्ध देश में निवास करते थे तब वहां की प्रधान नगरी व इनके यजमान राजाओं की प्रधान राजधानी 'आलोर' वा 'आरोर' में भी अधिकतासे बसते थे। वहां के सभी मनुष्य १२५ वर्ष से भी उपरकी आयुके वृद्ध होने पर भी हृष्ट, पुष्ट और बलिष्ट होते थे। यह सब उनके ब्रह्मचर्य्य और नियमित रूपसे जीवन चर्य्या निर्वाह करनेका फल था। वहांके युवा पुरुष अपना सब कार्य अपनेही पौरुषके साथ सम्पादन करते थे। उन्हें किसी सेवक (नौकर) के सहारे जीवन बिताने की बान (आदत) वा आवश्यकता नहीं थी, और इसीलिये उस देश में दास दासी (गुलाम) बनानेकी प्रथा नहीं थी।* वे दूध घीका भोजन अधिक करते थे। वे बड़े दूर दर्शी व देश कालके पूर्ण ज्ञाता होने से सबके भले में अपना भला समझते थे। वे जाति मर्यादा के भी ऐसे पक्के थे कि साधारण से साधारण नियमका भी उल्लङ्घन नहीं करते थे। उस देश में दीवानो मु-

---

* इस समय भी पुष्करणे ब्राह्मणों में राज्य कुलाचार्य्य—पुरोहित वा गुरु तथा राज्य मुसाहिब आदि राज्य मान्य व श्रीमन्तों की कमी नहीं है, तथापि इनके यहां दास दासी (गोले गोली) रखने की प्रथा नहीं है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुटुम्बोंके फ़ैसल करने के लिये अदालतें रखने की आवश्यकता नहीं थी। केवल जघन्य अपराधों (उपद्रवों)की जाँचके लिये कुछ पञ्च नियतथे।§ वे धनको भी संग्रह करनेकी अपेक्षा परोपकारी कार्यों में लगा देनेको उत्तम मानतेथे। वह देश सोने और चाँदी की खानों से ख़ाली नहीं था, परन्तु वे इन धातुओं को बहुमूल्य जानते हुये भी इनका व्यवहार शारीरिक शक्ति की उन्नतिके लिये बाधक होनेसे इनको छूते भी नहीं थे। जिसके कारण स्वजाति में राज्य मान्य श्रीमन्तों और साधारण लोगों में विवाह आदि के समय कुछ भी भेद प्रतीत नहीं होता था।* इत्यादि

---

§ पुष्करणे ब्राह्मणों में जाति सम्बन्धी किसी भी प्रकार का मुक़द्दमा कभी भी राज्यमें नहीं ले जाते हैं, किन्तु ये उसे अपनी जाति ही की पञ्चायतसे निपटा लेते हैं।

*इस समय भी पुष्करणे ब्राह्मणों में श्रीमन्तो की कमी नहीं है और न सोने चाँदी के गहनों ही की कमी है। तथापि पुत्र वधूको विवाह हो जानेके पीछे तो चाहे सहस्रों ही का गहना भलेही पहनादें किन्तु विवाह के समय प्रथमही प्रथम तो प्राचीन रीत्यनुसार एक तो 'पट्टावींटी' नामक चाँदी की अंगूठी और एक 'फूलघूवर' नामक शिर में गूँथनेका चाँदीका फूल—येही दो छोटे से गहने देते हैं, और जिनका मूल्य भी।-) पांच आनेसे भी कम ही होता है। अतः ऐसी समृद्ध शालिनी होनेपर भी इस जाति में इतने कम मूल्यके केवल चाँदी के गहने जो प्राचीन सिन्धी भाषा के नामवाले हैं—देख कर क्या यह निश्चय नहीं होता कि इनके पूर्वज सोना चाँदी आदि बहु मूल्य धातुओं को छूते भी नहीं थे। जिससे विवाह आदि में राज्यमान्य श्रीमन्तों और साधारण लोगो में कुछ भी भेद प्रतीत नहीं होता था।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकार के अनेक शुभ गुणों से तो विभूषित और ईर्षा, द्वेष, अभिमान, मिथ्या पक्षपात आदि अवगुणों से वे रहित थे।

विक्रम संवत् के प्रारम्भसे २७० वर्ष हिले यूनान देशके बादशाह सिकन्दरने इस सिन्ध देश पर भी चढ़ाई करके वहांका राज्य नष्ट कर दिया था। उस समय के वहाँ के निवासियों के पूर्वोक्त गुणों की सच्ची महिमा सिकन्दर के साथी यूनानी इतिहास लेखकोंने भी बड़े आनन्द और आश्चर्यजनक शब्दों में की है, जिसे आज २२३६ वर्ष व्यतीत हो। गये हैं यद्यपि इतने अधिक समय में बहुतसा परिवर्त्तन भी हो गया है, तथापि यूनानी इतिहास लेखकों के कथनकी सत्यता के कई प्रमाण इस जातिमें अब तक पाये जाते हैं। उन्हीं गुणोंकी विद्यमानताके लिये इस जातिकी महिमा 'रिपोर्ट मर्दुम शुमारी राज्य मारवाड़ के भाग तासरे के पृष्ठ १६२ में भी विस्तार से की है (देखो इस पुस्तक का पृष्ठ १२० वां)।

जातिमर्यादाकी प्राचीन सुरीतियोंके पालनकी आवश्यकता।

यात्रा करनेवाले लोग अपने सुविधेके लिये बहुतसे लोगों का संघ (समूह) बनाके यात्रा करते हैं। उस संघके प्रधान (आगीवान) यदि धनाढ्य लोग हों तो उस संघकी विशेष शोभा दीखती है। उस संघके नियम भी ऐसे सीधे सादे बनाये गये हैं कि जिससे अशक्त लोगोंका भी सुख पूर्वक निर्वाह हो जाता है। संघके प्रधानों में अकेलेही आगे बढ़ जानेकी सामर्थ्य होने पर भी वे अपने संघके अन्य सर्व साधारण लोगों को पीछे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छोड़कर आप अकेले आगे चले जाना नहीं चाहते हैं। यहां तक कि कोई विशेष अशक्त हो जावे तो उसे भी अपने साथ निबाह लेते हैं। परन्तु यदि उस संघके प्रधान सर्व साधारण को बीचही में छोड़कर आप अकेले अपनेमें सामर्थ्य होनेसे आगे चले जावें तो उस संघमें बड़ी खलबली मच जावे और उन संगवालोंको भी लाचारन उनके पीछे २ भागना पड़े। परन्तु सर्व साधारण में धनाढ्यों कीसी सामर्थ्य न रहने के कारण बहुत भागने पर भी अन्त तक वे उनके बराबर नहीं पहुँच सकते जिससे वे न तो इधर के रहते हैं और न उधरके। उस समय संघके प्रधानों की तो महान् अपकीर्त्ति और सर्व साधारण को अत्यन्त्य क्लेश भोगना पड़ता है। ठीक वैसी ही दशा जाति समूहों की भी है। क्यों कि जाति समूह भी तो एक प्रकारसे संसाररूपी महायात्रा का संघ है; और जाति में के धनाढ्य लोग उसके प्रधान (आगीवान) हैं; और जाति मर्यादाकी सुरीतियें उस संघ में के सर्व साधारण तथा अशक्त लोगों के निर्वाह होनेकी नियमावली है। पहिले के धनाढ्यों में इस समय के धनाढ्यों की अपेक्षा अधिक सामर्थ्य रहने पर भी वे लोग सर्व साधारण के संघमें रहने ही में अपना गौरव (बड़प्पन) समझते थे। परन्तु महान् व अत्यन्त्य खेद है कि आजकलके कितनेक अविचारवान धनाढ्य लोग आगे पीछे का कुछ भी सोच न करके केवल अपनी श्रीमन्ताईकी नक़ली शोभा दिखलाने और फ़जूल ख़र्ची करने वालों मे थोथा नाम पाने की आशा में सर्व साधारण का संघ छोड़कर आप आगे बढ़ जाते हैं; अर्थात् विवाह आदिके समय जाति मर्यादाकी प्राचीन सुरीतियोंका उल्लंघन कर देते हैं। और सर्व साधारण में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उनकी बराबरी करनेकी सामर्थ्य न होनेपरभी उनकोभी लाचारन उन्हींकी देखादेखी करके बहुत क्लेश उठाना पड़ता है। उनकोही नहीं किन्तु अन्तमें स्वयं उन धनाढ्यों तथा उनकी सन्तानको भी अत्यन्त कष्ट सहना पड़ता है। यहांपर क्षमा माँगकर यह कह देना अनुचित न होगा कि पुष्करणों में विवाह आदिके समय प्राचीन सुरीतियों का अनादर करने वालों में तो विशेष शूरवीर जोधपुर की न्यात और प्राचीन सुरीतियों का किसी क़दर अब तक भी पालन करते रहनेवालों में विशेष धन्यवाद के भागी जैसलमेर की न्यात मानी जाती है। यदि सभी जगह जैसलमेर ही की न्यात कासा प्रबन्ध दृढ़ बना रहा होता तो इस जातिके लिये क्या कुछ कम सौभाग्य की बात थी ?

विशेष ही विचार का स्थल है कि जिस समय ऐसी सीधी सादी रीतियें चलाई गई थीं उस समय धन सङ्ग्रह रखनेकी उतनी आवश्यकता नहीं थी जितनी कि इस समय है क्योंकि पहिले जिस भावसे अन्न मिलताथा अब उस भावसे इन्धन—बलीता (लकड़ी छाने)—भी नहीं मिलता है, पहिले जिस भावसे घी मिलता था अब उस भावसे दूध भी नहीं मिलता है, पहिले जितने में कपड़े बनतेथे अब उतनेमें सिलाई भी नहीं लगती है। अतः एक ओर तो इस प्रकारकी महँगाई होती जाती है और दूसरी ओर आमदनीमेंभी कमी होती चली जातीहै। तिसपर भी तुर्रा यह है कि आजकलकी नक़ली शोभा के लिये दिन दूनी और रात चौगुनी फ़ज़ूल ख़र्ची भी बराबर बढ़ती ही जाती है।* परन्तु

*यहांपर कोई ऐसा ख़याल न करलें कि पहिले इतना द्रव्य नहीं था तभी ऐसी २ कृपणता (कंजूसी) की रीतियें चलाई होंगी। किन्तु ऐसा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीछेसे ऐसे फ़जूल ख़र्ची करनेवालों ही को नहीं किन्तु उनकी सन्तानको भी कैसे २ कष्ट भोगने पड़ते हैं वे किससे भी छिपे हुये नहीं है। फिर भी इस पर ध्यान नहीं देना कितनी भूल है? पर किसी कविका कथन है कि:—

बीती ताहि विसार दे, आगे की सुध लेय।
जो बनि आवे सहज में, ताही में चित देय॥

अर्थात् जो बात बीत चुकी उसकी चिन्ता छोड़कर आगेके लिये उचित प्रबन्ध करना ही बुद्धिमानों का काम है। अतः स्व-जातिके शुभचिन्तक महानुभावों व राज्यमान्य श्रीमन्तों, विद्वानों, तथा वृद्ध पुरुषों आदि पञ्चों को चाहिये कि विना विलम्बके प्रचलित कुरीतियों का तो संशोधन *और प्राचीन सुरीतियों

ख़याल करनेवाले यदि एक ही बातपर दृष्टि डालेंगे तो उनका यह भ्रम स्वयं ही दूर भाग जावेगा कि पहिले इतना द्रव्य नहीं होता तो लक्ष भोज, अशेष भोज (सहस्र भोज) आदि कार्यों में क्यों कर असंख्य द्रव्य लगा सकते थे? और नाथाजी व्यास जैसे महानुभाव क्यों कर लक्षों ही रुपये परोपकारी कार्यों में धर्मार्थ लगाकर अपनी अटल कीर्त्ति छोड़ जा सकते थे? इससे निश्चय है कि वे सुरीतियें धनके अभाव वा कंजूसी आदि से नहीं किन्तु सर्व साधारण के भलेके लिये बड़ी बुद्धि मानी से बनाई गई थीं।

*जोधपुर में कल्लोंने अपने कुटुम्बके लिये एक 'विवाह प्रबन्ध नियमावली' बनाई है। जब वह बन रही थी तब आशा की गई थी कि इसके बन जाने से अन्यान्य लोग भी इसे स्वीकार करलेंगे जिस से सर्व साधारण का निर्वाह भले प्रकार से हो सकेगा। परन्तु वह आशा नियमावली जैसी चाहिये वैसी नहीं बनी इससे वह केवल मानसी आशा ही हुई। इस नियमावली को सर्व साधारणके उपयोगी न कहकर यदि अपव्यय करनेवाले धनाढ्यों को अपकीर्तिसे बचानेके लिये ढाल कहदें तो भी अनुचित न होगा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का पालन करनेका उचित व दृढ़ प्रबन्ध कर दें जिससे इस जातिकी महान् कीर्ति सदाकाल बनी रहे।

इसके उपरान्त सर्व साधारण लोगों को भी चाहिये कि वे भी अदूर दर्शी धनाढ्यों की देखादेखी उनके पीछे २ न भागें किन्तु अपने संघके समूह ही में दृढ़ बने रहें ताकि आगे बढ़नेवाले धनाढ्यों को भी अपनी भूल पर पश्चात्ताप करके आपके संघमें पीछा लैट आना पड़े।

मेरे लिखनेका तात्पर्य यह नहीं है कि कोई धन्याढ्य लोग विवाह आदि के समय धन ख़र्चें ही नहीं। वे अवश्य ख़र्चें परन्तु अपनी असली सामर्थ्यानुसार इस प्रकारसे ख़र्चें कि जिससे प्राचीन सुरीतियों का भी पालन हो सके और धन ख़र्चनेवालों का भी पीछे से पछताना न पड़े। ऐसा करने से धनाढ्यों की भी कीर्ति बढ़ेगी और सर्व साधारण को भी कष्ट भोगना न पड़ेगा।

इसके अतिरिक्त यदि आपमें सचमुच धन ख़र्चनेकी सामर्थ्य है तो स्व जातिकी उन्नति के लिये विद्यालय, औषधालय, अनाथालय, विधवाश्रम, आदि ऐसे २ परोपकारी कार्यों में ख़र्चें जिससे कि आपकी निर्मल कीर्ति सर्वदा चमकती रहे।

इसी प्रकार पिछले थोड़े से समयसे विवाह आदि के समय अशुभ तथा गन्दे शब्दों से दूषित गालियें (सीटने) गाने की जो कु प्रथा चल पड़ी है उसका भी उचित प्रबन्ध होने की परम आवश्यकता है। क्योंकि हमारे धर्म शास्त्रों में प्रतिदिनकी बोलचालमें भी अशुभ शब्द बोलने की सख्त मनाई किई है। इसीलिये कोई वस्तु खुट जाय तो 'खूट गई' नहीं कहते किन्तु 'बधै है' ऐसा कहते हैं, दीपक बुझ जाय तो 'बुझगया' नहीं क-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हते किन्तु 'बड़ा हो गया' वा 'राज हो गया' कहते हैं, चूड़ी टूट जाय तो 'टूट गई' नहीं कहते किन्तु 'बधर गई' वा 'बड़ी हो गई' कहते हैं, दर्वाज़ा बन्द करनेको 'बन्द करना' नहीं कहते किन्तु 'मंगल करना' वा 'सभीड़ करना' कहते हैं, यहां तक कि मनुष्य मर जावे तो 'मर गया' नहीं कहते किन्तु 'पीछा हो गया' कहते हैं। जब कि ऐसे साधारण कार्यों तथा मृत्यु जैसे अमंगलीक अवसरों में भी एक भी अशुभ शब्द उच्चारण नहीं करते हैं तो फिर विवाह जैसे अत्यन्त शुभ तथा मंगलीक कार्य के समय सहस्रों अशुभ शब्दों से लबालब भरी हुई गन्दी गालियें (सीठने) गाना कितना हानिकर है ?

सम्बन्धियों की ठट्ठा मसख़री करने की प्रथा तो बहुत प्राचीन काल में भी थी परन्तु वह इस समय की भाँति दूषित नहीं थी जिसके प्रमाण में उदाहरण स्वरूप सिन्धी भाषाकी एक गालीकी टेर यहाँ लिखता हूं जो कि पुष्करणे ब्राह्मणों में विवाह आदि के समय रसमके तौर पर आजतक गाई जाती है। वह यों है:—"इयेरी जोय बखाणीवे" अर्थात् हमारे सम्बन्धी (सगोजी) की स्त्री की लोगों में प्रशंसा हुई है। इस गालीके प्रत्यक्ष अर्थ में तो उनकी स्त्रीकी तारीफ़ ही है किन्तु इसीका व्यंग अर्थ मसख़री का काम दे जाता है। अतः कहां तो ऐसी २ परदेकी प्राचीन गालियें और कहां आजकलकी प्रचलित दूषित और खुल्लम खुल्ला अश्लील गालियें ? अतः ऐसी २ कुप्रथाओं पर भी ध्यान देने की परम आवश्यकता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थान२ में जाति सभाओंकी आवश्यकता।

आप जानते हैं कि इस समय जिस प्रकार किसी उद्देश्यसे सभा सोसाइटियें बनाई जाती हैं उसी प्रकार पूर्व काल में जातियें बनाई गई थीं। अतः अन्यान्य जातियों की भाँति ब्राह्मणोंमें पुष्करणे ब्राह्मणों की जाति भी प्राचीन कालकी एक सभा है अर्थात् पुष्करणे ब्राह्मण मात्र तो उसके सभासद् और जातियें जो पञ्च, चौधरी, चोहटिया आदि हैं वे उसके मुख्य सभासद् हैं। इस जाति मर्यादाकी ऐक्यता से वे परस्पर सहानुभूति रखते थे जिससे इस जातिकी अनेक शुभ कामनाएं पूर्ण होती थीं। परन्तु इस समय कितनेक लोगों के परस्परकी ईर्षा, द्वेष, अभिमान, आदिसे एक दूसरेके विरुद्ध मिथ्या पक्षपात करने लग जानेसे उनकी पञ्चायतें प्रायः शिथिल हो गईं (ढीली पड़ गईं) हैं जिस से इस जातिकी जो हानि हो रही है वह किसी बुद्धिमान्से छिपी हुई नहीं है। अतः इस हानि को रोकने के लिये उन पञ्चायतोंको पोछा दृढ (मज़बूत) बनानेके निमित्त समस्त पुष्करणों को चाहिये कि इस जाति का जहां २ निवास स्थान है वहां २ 'पुष्टिकर हितैषिणी' सभा स्थापित कर दें (जैसी कि पहिले जोधपुर में स्थापित किई गई थी)। और न्यात में जो सदासे पञ्च माने जाते हैं उन्हींको तो सभाके मुख्य सभासद् तथा सभाकी उन्नति चाहनेवालों को सहायक सभासद् बनावें और पुष्करणे मात्र तो सदासे इस सभाके सभासद बने ही हुये हैं। इसके उपरान्त जहां २ न्यातके घर अधिक हों वहां२ प्रत्येक खाँप २ की भी एक२ शाखा सभा बनावें (जैसी कि जोधपुरमें कल्लोंने 'सिद्धकुल भूषण' नामकी शाखा सभा बनाई है)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस प्रकार प्रबन्ध करने पर जाति में पुनः ऐक्यताकी वृद्धि द्वारा परस्पर एक दूसरे के साथ सहानुभूतिका प्रचार होगा जिससे जातिकी उन्नति होने में हर एक प्रकारकी सहायता मिलेगी। परन्तु साथमें यह भी ध्यान रहे कि केवल नाम मात्रकी सभाएं स्थापित करनेहीसे तो उन्नति नहीं हो जायगी किन्तु उन्नति तो उस सभा द्वारा उद्योग करनेहीसे होगी। आशा है कि आप मेरे इस निवेदन पर अवश्य ध्यान दे के धन्यवादके पात्र बनेंगे। क्योंकि–

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।
परिवर्त्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते?॥

वैसे तो यहसंसारही परिवर्त्तन शील होनेसे इसमें जन्म लेने वाले सभी एक न एक दिन अवश्य ही मृत्यु के मुखमें चले जावेंगे, परन्तु इस में जन्म लेना सार्थक उन्हीं महानुभावोंका है कि जिनके जन्म लेने से स्वजाति की उन्नति हो सके जिससे उनका नाम तो मृत्यु के मुख में न जावे अर्थात् उस कीर्त्तिके साथ उनका नाम अमर हो जावे।

आजकल अंग्रेज सरकार के शान्तिमय राज्य में जबकि समस्त जातियें अपनी२ उन्नति करने में जीजानसे प्रवृत्त हो रही हैं, ऐसे उत्तम समय में सदासे उन्नति करनेवाली पुष्करणे ब्राह्मणों की जाति गाढ़ निद्रा में सोती रहे यह क्या कम लज्जाकी बात है? अतः समस्त पुष्करणे ब्राह्मणों को चाहिये कि विना विलम्ब के स्वजाति की उन्नति के कार्य साधन में शीघ्र प्रवृत्त हो जावे ताकि इस जातिके उन्नत शील पूर्वजों की महान् कीर्त्ति का गौरव सदाकाल बना रहे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्करणे कहलानेका शास्त्र प्रमाण।

स्कन्द पुराणान्तर्गत श्रीमालक्षेत्र माहात्म्यसे उद्धृत।

स्कन्द पुराणान्तर्गत श्रीमाल क्षेत्र माहात्म्यकी कथा कई अध्यायों में वर्णित है। जिस में श्रीमाली और पुष्करणे ब्राह्मणों के पूर्वजों का वृत्तान्त भी है। उसमें से पुष्करणे ब्राह्मणों का संक्षिप्त वृत्तान्त 'पुष्करणोपाख्यान' नामक पुस्तकमें एकत्र किया गया है। उसी प्रकार मैं भी उसी श्रीमाल क्षेत्र माहात्म्यकी कथा में के पृथक् २ स्थलों से पुष्करणे ब्राह्मणों के सम्बन्धकी कथा के थोड़से चुने हुये मुख्यर श्लोक सारांश अभिप्रायार्थ सहित यहांपर लिखता हूं जिससे पुष्करणे ब्राह्मणों के पूर्वज सिन्धी ब्राह्मणों के पुष्करणे कहलाये जानेलगनेका कारण विदित होगा।

स्कन्द उवाच।

देव देव पुनर्ब्रूहि भूभागं किञ्चिदुत्तमम्।
यत्र ब्रह्मादयो देवा वसिष्ठाद्यास्तपोधनाः॥
क्रीडन्ति मातरः सर्वाः कुमारैः सह यत्र च।

एक समय स्कन्द (स्वामि कार्त्तिक) ने श्री महादेवजी से कहा कि हे देवाधिदेव! इस भूमिपर जहां ब्रह्मादि देवता, वसिष्ठादि तपस्वी, और कुमारों के साथ मातृ देवता भी क्रीड़ा करती हैं उस उत्तम भाग का वर्णन कीजिये।

महादेव उवाच।

साधु पृष्टं त्वया वत्स भागं श्रेयस्करं भुवः।
प्रवक्ष्यामि यथावत्त्वं शृणुष्व गदतो मम॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अयोध्याऽधिपतिः श्रीमानासीदतुलविक्रमः ।
युवनाश्वसुतो राजा मान्धातेति श्रुतो भुवि ॥
दृष्टिमार्गादेवमुनिर्वसिष्ठः सह भार्यया ।
तमर्चादिभिरभ्यर्च्य काकुत्स्थकुलदैवतम् ॥
प्रणिपत्य महीपालः कृताञ्जालिरथाब्रवीत् ।

महादेवजी कहने लगे कि एक समय अयोध्याधिपति युवनाश्वका पुत्र 'मान्धाता' नाम बड़ा प्रतापी राजा वसिष्ठ मुनिको अरुन्धती सहित आते देखके प्रणाम पूर्वक उनकी पूजा करके नम्रता सहित कहने लगा ।

मान्धातोवाच ।

यतः प्राप्तोऽसि भगवन् प्रदेशान्मुनिवत्सल ॥
तन्निवेदय मे सर्वं श्रवणार्होस्मि चेन्मुने ॥

मान्धाता पूछने लगा कि हे महामुने आप जिस स्थानसे मेरे घर पधारे हैं वह स्थान, यदि मैं श्रवण करने योग्य होऊं तो, मुझे कहिये ।

वसिष्ठ उवाच ।

अर्बुदारण्यमतुलं तीर्थकोटिसमन्वितम् ।
श्रुतं यदि भवेद्भूप पृथिव्यां पावनं परम् ॥
यत्प्रसादेन पद्मायाः पञ्चक्रोशप्रमाणतः ।
श्रीमालं क्षेत्रमित्यासीद्विश्रुतं भप भूतले ॥

राजा का प्रश्न सुनके महर्षि वसिष्ठजी कहने लगे कि राजा तुम्हारे सुननेमें आया होगा कि पृथ्वी में करोड़ों तीर्थों से युक्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पवित्र अर्बुदारण्य है । वहां लक्ष्मीजी की कृपासे पाँच कोश के घेरे में श्रीमाल नामका क्षेत्र प्रसिद्ध हुआ है । क्यों कि:-

पुरा भृगोः समुत्पन्ना ख्याता श्रीः किल भूमिप ।
अद्वैतरूपिणी कन्या प्रबुद्धाऽम्बुजलोचना ॥
अथ कमलसम्भवानुयोगात् ॥
कृशानौ ज्वलति सति सनातनः ।
देवो भृगुदुहितृपाणि पुण्डरीकम
सह मनसा संगृहीतवानोशः ॥

उस क्षेत्रमें लक्ष्मीजीने भृगु ऋषि के गृह में कन्या का रूप धारण किया था जिसका विवाह श्री भगवान् के साथ हुआ ।

श्रीरुवाच ।

इमां भूमिं प्रदास्यामि ब्राह्मणेभ्यः समाहिता ।
अत्रांशेन ममैवास्तु निवासः शास्वती समाः ॥

उस विवाह के अन्त में श्रीलक्ष्मीजीने श्रीभगवान् से कहा कि मैं यह भूमि ब्राह्मणों को देके एक अंश से बहुत समय तक यहां निवास करना चाहती हूं ।

श्री भगवानुवाच ।

इत्याख्याय चतुर्बाहुरवोचत् स्वगणान् बहन् ।
ये केचिन्मुनयः सन्ति तेषां पुत्रा यशस्विनः ॥
पुण्यक्षेत्रेष्वरण्येषु ग्रामेषु नगरेषु वा ।
तानानयत सम्पूज्य ऋषिपुत्रान् सुवर्चसः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वासिष्ठ उवाच ।

विश्वकर्माणमाहूय प्रोवाचेदं वचस्तदा ॥
अत्र सौधानि दिव्यानि कुरु क्षिप्रमतन्द्रितः ॥

इस बातको सुनकर भगवान्ने देश २ के तीर्थों, अरण्यों, नगरों, व ग्रामों से ब्राह्मणों को लाने के लिये अपने दूत भेजे और विश्वकर्मा को एक बहुत सुन्दर नगर बनानेकी आज्ञा दी।

श्रियमुद्दिश्य मालाभिरावृता भूरियं सुरैः ॥
ततः श्रीमालनाम्ना तु लोके ख्यातमिदं पुरम् ॥

लक्ष्मीजी के उद्देश्यसे देवताओंने उस क्षेत्र को मालाओं से व्याप्त कर दिया । इसलिये वह नगर श्रीमाल नामसे प्रसिद्ध हुआ ।

आश्रमेभ्यः समानिन्युर्मुनि पुत्रान् सुवर्चसः ।
सर्वे वेदव्रतस्नाताः कृतदारपरिग्रहाः ॥

वे भगवान् के दूत अनेक तीर्थाश्रमों से वेद जानने वाले, व्रत करने वाले और विवाह किये हुये मुनि पुत्रों को स्त्रियों सहित ले आये ।

आगतं सैन्धवारण्याद्राजन् पञ्चसहस्रकम् ।
मुनीनां वेदवेत्तृणां ब्रह्मविद्याविशारदाम् ॥

उन में वेद और ब्रह्म विद्याके जाननेवाले ५००० ब्राह्मण सिन्ध के अरण्य से भी आये ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वसिष्ठ उवाच ।

वयोवृद्धं तपोवृद्धं विद्यावृद्धं तपोधनम् ।
गौतमं ते पुरस्कृत्य सोमपाः समुपाविशन् ॥

इस प्रकार एकत्र हुये ब्राह्मण वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, और विद्यावृद्ध तथा तपस्यारूपी धनवाले गौतम ऋषिको आगे करके आ बैठे ।

ब्रह्मोवाच ।

पञ्चाशदिह सर्वेषां सहस्राणि द्विजन्मनाम् ।
यं वेत्सि वरमेतेषामर्घं तस्मै कुरु प्रभो ॥

उन ब्राह्मणों के समूह को देखके ब्रह्माजी विष्णु से कहने लगे कि यहां ५०००० ब्राह्मण एकत्र हुये हैं । इन में से आप जिसे श्रेष्ठ मानते हैं उसी को अर्घ प्रदान (पूजा) कीजिये ।

श्री कण्ठ उवाच ।

अर्घमेषां हि सद्वृत्तमर्घमेषां हरे कुलम् ।
तदमीषु वरं मत्वा ददस्वार्घमधोक्षज ॥

इसी प्रकार महादेवजीने भी विष्णु से कहा कि अर्घ ही इनका सत्य व्रत है और अर्घ ही इनकी कुलीनता है । अतः आप इनमें जिसे श्रेष्ठ जानें उसीको अर्घ प्रदान कीजिये ।

वृहस्पतिरुवाच ।

वयसा तपसा चैव विद्यया ऽऽचरणेन च ।
एते यमनुमन्यन्ते तस्मै यच्छार्घमच्युत ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बृहस्पतिने भी विष्णु से कहा कि ये ब्राह्मण ही अपने में जिसको वयसे, तपसे, विद्यासे और आचरण से श्रेष्ठ मानें उसी को आप भी श्रेष्ठ मानके अर्घ प्रदान कीजिये।

सारस्वता ऊचुः।

नहायनैर्न वलिभिर्न वास्य पलितं शिरः।
ऋषयश्चक्रिरे धर्मं योऽनूचानः स नो महान्॥
विद्यया तपसा चैव वयसाऽऽचरणेन च।
देव श्रेष्ठतमोऽस्माकं गौतमोऽर्घमिहार्हति॥

सारस्वत कहने लगे कि ऋषियों में बड़ा न तो वर्षोंसे. न बुढ़ापेसे, और न श्वेत केश होने ही से होता है; किन्तु ज्ञानवान् ही बड़ा होता है। और हममें गौतम ऋषि तो विद्या, तप, आचरण, और आयुसे भी बड़े हैं। अतः अर्घ देने योग्य गौतम ही हैं।

आङ्गिरसा ऊचुः।

अयमस्मत्कुले श्रेष्ठो वाग्मी वेदार्थवित्तमः।
प्रगेता चागमार्थानामतो ऽर्घं गौतमो ऽर्हति॥

इसी प्रकार अङ्गिरस वंशवाले ब्राह्मण भी कहने लगे कि हमारे कुल में श्रेष्ठ, वाणी बोलने में कुशल, वेद का अर्थ जानने वालों में उत्तम और वेदार्थ के अविरुद्ध शास्त्रों के वक्ता ये ही हैं। इसी लिये अर्घ गौतम ही को देना चाहिये।

अपर ऋषय ऊचुः।

नारायण सुरश्रेष्ठ शङ्खचक्रगदाधर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्हत्तम परिज्ञाने त्वं प्रमाणमिहासि नः॥

इस प्रकार गौतम की प्रशंसा होने पर कई एक ऋषियोंने कहा कि हे नारायण !, हे सुर श्रेष्ठ !, हे शंख चक्र गदाधरा !, हे पूज्य ज्ञानवाले ! प्रभु ! इस विषय में हममें आपही प्रमाण हैं। अतः जैसी इच्छा आप को हो वैसाही करें।

वसिष्ठ उवाच।

इत्येवं हि सुविपेन्द्रैः स्तूयमाने हि गौतमे।
ऊचुरीर्ष्यायुताः केचित् सैन्धवारण्यवासिनः॥

ब्राह्मणों के इस प्रकार गौतम की स्तुति करने पर सैन्धवारण्य के रहनेवाले कितनेक ईर्ष्यालु ब्राह्मण इस बातका विरोध करते हुये बोले कि–

सैन्धवारण्यवासिनः ब्राह्मणा ऊचुः।

भो भो गौतम केनासि श्रेष्ठो ऽस्माकं गुणेन वै।
तद्बूहि यदि देवेषु प्रावीण्यमवलम्बसे॥

हे गौतम ! तुम किस गुणसे हममें अधिक श्रेष्ठ हो ? सो कहो। जो ब्राह्मणों में श्रेष्ठ गिने जाना चाहते हो तो कुछ प्रमाण दो।

सर्वे तपस्विनो विप्राः सर्वे तीर्थनिवासिनः।
सर्वे पूज्यतमा लोके ब्राह्मणा भूमिदेवताः॥
तेषां पृथक् पृथक् पूजा कार्या नित्यं सुरेश्वर।
एकस्मिन् गौतमे पूज्ये पङ्क्तिभेदो भविष्यति॥
तस्मादेकैकशः पूज्या ब्राह्मणाः पुरुषोत्तम।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फिर विष्णुसे भी कहने लगे कि हे सुरेश्वर सभी ब्राह्मण तपस्वी हैं, सभी ब्राह्मण तीर्थ पर रहने वाले हैं, सभी ब्राह्मण लोक में पूज्य हैं और सभी ब्राह्मण भूमि के देवता हैं। इसलिये पूजा सम्पूर्ण ही ब्राह्मणों की पृथक् २ करनी चाहिये। क्योंकि एक गौतम ही की पूजा करने से तो ब्राह्मणोंकी पंक्तिमें भेद हो जावेगा कि गौतम तो श्रेष्ठ हैं और अन्य सब ब्राह्मण नेष्ट। अतः हे पुरुषोत्तम ! आपको चाहिये कि पूजा एक २ करके सम्पूर्ण ब्राह्मणों की करें।

इति तेषां वचः श्रुत्वाऽहङ्कारवशवर्त्तिनाम्।
राजन्नाङ्गिरसाः सर्वे शेपुस्तान् सिन्धुजान् द्विजान्॥

इस प्रकार उनके अहंकारके वचन सुन के सब अंगिरस ब्राह्मणों ने उन सिन्धी ब्राह्मणों को शाप दे दिया।

आङ्गिरसा ऊचुः।

यथा वञ्चरितं प्रोक्तं शतशो मुनिपुत्रकैः।
तमृषिं द्विषतो युष्मान् न वेदः संश्रयिष्यति॥

अंगिरस बोले कि जिस गौतम ऋषिके यथावत् सैकड़ों चरित मुनि पुत्रोंने कहे उस ऋषि से तुम द्वेष करते हो अतः तुम्हें वेद नहीं आवेगा।

इत्थमाङ्गिरसैर्विप्रैः शप्तास्ते ब्राह्मणा नृप।
सिन्धुदेशं तदा जग्मुः सैन्धवारण्यवासिनः॥

इस प्रकार अंगिरस ब्राह्मणों की ओर से शाप होने पर वे सैन्धवारण्य के रहनेवाले सभी ब्राह्मण उस यज्ञको छोड़ कर पीछे सिन्ध देश में चले गये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गतेषु तेषु विप्रेषु सैन्धवेषु नरेश्वर ।
गौतमाय चकारार्घमच्युतः सर्वसम्मतः ॥

उन ब्राह्मणों के सिन्ध देश में पीछे चले जाने पर सर्व सम्मतिसे भगवान्ने गौतमकी पूजा करके वह नगर उन शेष ४५००० ब्राह्मणों को दे दिया ।

वसिष्ठ उवाच ।

कदाचिदत्र दुष्टाऽभूत् सारिका नाम राक्षसी ।
निशाचर्या तया राजन् श्रीमालं समनुद्रुतम् ॥

इत्यादि कथा कहने के उपरान्त महर्षि वसिष्ठजी मान्धाता नृपतिको कहने लगे कि हे राजा फिर इस श्रीमाल क्षेत्र में जो एक आश्चर्य जनक उपद्रव हुआ, और सारिका नाम की दुष्ट राक्षसीने उस नगरको विध्वंस कर दिया सो सुनिये ।

पूर्वमाङ्गिरसैर्विप्रैः सैन्धवारण्यवासिनः ।
शप्ता ये ब्राह्मणाः क्रुद्धैर्गौतमं प्रत्यसूय च ॥
तैर्गत्वाऽऽराधितः सिन्धुरुपवासपरायणैः ।
परितुष्टोऽथ पाथोधिस्तानुवाचेति याचितः ॥
श्रीमालक्षेत्रनाशाय प्रार्थिता तैर्निशाचरी ।
सा द्विजानां सुता जाता वेदिगर्भात् प्रगृह्य वै ॥
तया सहस्रशः कन्या गृहीता मनुजेश्वर ।
कङ्कोलः पालयामास पाताले स्वसुता इव ॥
दुःखार्त्ता सारिका भीता प्रयाता गिरिमर्बुदम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शून्यारण्यनिभं चाभूत् श्रीमालं जनवर्जितम् ॥
सा.रकाशंकया कश्चित् तीर्थयात्रां न गच्छति ।
श्रीमालध्यायिनो नित्यं विश्वसन्ति दिवानिशम् ॥

प्रथम जिन सैन्धवारण्य वासी ब्राह्मणों को गौतमकी ईर्ष्या करने से क्रोधित अंगिरस ब्राह्मणों से शाप मिला था उसका बदला लेनेके लिये उन्होंने उपवास करके सिन्धु (समुद्र) का आराधन किया, जिससे समुद्र उनपर प्रसन्न हुआ, और उन्हें याचना करने को कहा । तब श्रीमाल क्षेत्रका नाश करनेके लिये उन्होंने एक राक्षसीकी प्रार्थना किई । वह राक्षसी श्रीमाल क्षेत्रमें रहनेवाले उन ४५००० (श्रीमाली) ब्राह्मणोंकी विवाह के लिये वेदी (चँवरी) में लाई हुई कन्याओं को पकड़ के ले जाके पाताल में कंकोल नाम नागको सौंप आने लगी। किन्तु वह नाग उन कन्याओंका पालन अपनी स्व कन्याओंकी भाँति करता रहा । हे राजा इस प्रकार सहस्रों ही कन्याओं को वह ले गई परन्तु इस बातका उन (श्रीमाली) ब्राह्मणों से कुछ भी उपाय बन नहीं सका अतः वे दुःखी और सारिका से भयभीत हो के श्रीमाल क्षेत्रको छोड़ के आबू पर्वत पर जा बसे । इससे वह नगर मनुष्यों से रहित मंगलकी तरह उजाड़ हो गया। तथा उस सारिका के भयसे तीर्थ यात्राको भी लोगोंका आना बन्द हो गया । और वे ब्राह्मण ऐसे नगरके छूट जानेसे रात दिन चिन्ता करने लगे ।

अथ प्रतापवान् राजा श्रीपुञ्जो नाम विश्रुतः ।
कदाचिदथ तत्रागादेकाकी मृगमन्वटन् ॥
कथं शून्यमिदं जातं नगरं देवनिर्मितम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुतस्ते ब्राह्मणाः श्रेष्ठाः वर्त्तन्ते दुःखशालिनः ॥
इत्थं चिन्तयमानेन श्री पुञ्जेनमहाजसा ।
अर्बुदे प्रेषिता दूता ब्राह्मणानां समीपतः ॥

दूता ऊचुः ।

नमोस्तु वो द्विजन्मानः सर्वेभ्यो वेदवित्तमाः ।
आकारयति वो विप्राः श्रीपुञ्जो नाम विश्रुतः ॥
सेनापत्यमधिष्ठाय पालयिष्यामि वः सदा ।
विमुञ्चत निशाचर्याः सारिकाया महद्भयम् ॥

वसिष्ठ उवाच ।

इत्याकर्ण्य ततो वाक्यं दूतानाममृतोपमम् ।
ब्राह्मणा गिरिमामन्त्र्य श्रीमालं गन्तुमुद्यता ॥
ततः प्राप्ता द्विजाः सर्वे हर्षपर्याकुलेक्षणाः ।

बहुत वर्षों पीछे एक दिन श्री पुञ्ज नामका एक प्रख्यात प्रतापी राजा अपना शिकारका पीछा करता हुआ श्रीमाल नगरमें अकेला आ निकला तब इस नगर के उजड़ हो जाने का कारण जान दूत भेजके सारिका राक्षसी से रक्षा करनेका वचन दे कर ब्राह्मणों को पीछे बुलाये और उस नगरको पुनः आबाद कर दिया ।

ततः सा राक्षसी दुष्टा सैन्यवारण्यवासिनाम् ।
द्विजानामनुरोधेन श्रीमालं भक्षकुमागता ॥
दक्षिणस्यां दिशि ततो वेदिमध्याद् द्विजन्मनः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रगृह्य कस्यचित् कन्या राक्षसी गन्तुमुद्यता ॥
सा बाला रुदती गाढं स्मरन्ती कुलदेवताम् ।
त्राहि त्राहीति सुरभिमातरित्यालपन्मुहुः ॥
इष्टा वंशस्य वै तस्याः सुरभिर्नाम देवता ।
कन्यापिकस्वरैर्मत्वा सुरभिस्तामकीलयत् ॥
ततः श्रीमालतः प्राप्तः श्रीपुञ्जः सह सैनिकैः ।

श्री पुञ्ज उवाच ।

दुष्टे चिरेण लब्धाऽसि द्विजकन्यापहारिणि ।
मया मुक्तः शरोऽयं ते शिरश्छेत्स्यति सारिके ॥

वसिष्ठ उवाच ।

इत्युक्त्वा शरसन्धाने दृष्ट्वा राजानमातुरम् ।
विहाय ब्राह्मणसुतां भीतोवाचाथ सारिका ॥

किन्तु वह दुष्टा राक्षसी सैन्धवारण्य वासी ब्राह्मणों के अनुरोध से श्रीमाल नगरको बरबाद करनेको फिर भी आगई, और दक्षिण दिशा में किसी ब्राह्मण की कन्याको वेदीके मध्यसे पकड़ के ले जाने लगी। वह कन्या रोती हुई अपनी कुल देवीको रक्षा करनेको पुकारने लगी । उसका रुदन सुनके उसकी कुल देवी 'सुरभि' ने, जो उस जंगल में रहती थी, सारिकाकी गति स्तम्भन कर दी जिससे श्रीपुञ्ज राजा अपनी सेना सहित वहांपर जा पहुँचा और सारिका को मारने के लिये तीर छोड़ने लगा। तब सारिका भयभीत होकर उस कन्या को छोड़ के राजा से कहने लगी ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सारिकोवाच ।

नमोक्तव्यो महेपुस्ते मयि राजन् कथञ्चन ।
सैन्धवैः सिंधुमाराध्य प्रार्थिताऽहं द्विजोत्तमैः ॥
कर्त्तुं श्रीमालविध्वंसं तेन सर्वं कृतं मया ।
कुरु प्रतिपणं राजन् नित्यार्थं मम किञ्चन ॥
यथा भवामि विप्राणामहं नित्यं सहायिनी ।

हे राजा सिन्ध के उत्तम ब्राह्मणोंने श्रीमाल नगरका नाश करनेके लिये समुद्रकी आराधना करके मेरी प्रार्थना किई इसी से यह सब मैंने किया है । अतः आप मुझपर बाण मत चलाओ किन्तु मेरा कुछ प्रतिपण करो जिससे इन ब्राह्मणों का कष्ट दूर करने में मैं भी इनकी सर्वदा सहायता करने वाली हो जाऊं ।

श्री पुञ्जराजोवाच ।

कोदृक् प्रतिपणः कार्यस्त्वदर्थं वद खेचरि ।
येन त्वं द्विजवर्याणां साहाय्यं कुरुषे सदा ॥

राजा बोला कि हे खेचरी ! तेरे लिये किस प्रकारका प्रण करना चाहिये कि जिससे तू ब्राह्मणों की सदा सहायक हो जावे।

सारिकोवाच ।

शापो दत्तो द्विजेन्द्राणां सैन्धवारण्यवासिनाम् ।
क्रुद्धैराङ्गिरसैर्विप्रैस्तेषां निरपराधिनाम् ॥
तेनापराधयोगेन पुरं शून्यं कृतं मया ।
तानामन्त्रय राजेन्द्र सैन्धवारण्यवासिनः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनोवाक्काययोगेन पूजयस्व द्विजर्षभान् ।
तेन तुष्टा भविष्यन्ति ब्राह्मणा भगवत्प्रियाः ॥
तेषु तुष्टेषु विप्रेषु कष्टशान्तिर्भविष्यति ।
न मे मृत्युः शरै राजन् कदाचिदिह विद्यते ॥
परं द्विजहितायैव समयः क्रियते मया ।

राजाके पूछने पर सारिका कहने लगी कि अंगिरस ब्राह्मणोंने क्रोधमें आके निरपराध सैन्धवारण्यवासी ब्राह्मणों को शाप दे दिया। उसी अपराधके कारण इस नगर को मैंने वीरान (उजाड़) किया। अब हे राजा! उन सैन्धवारण्य वासी उत्तम ब्राह्मणोंको यहां बुलाके मन, वचन, और कायासे पूजा करो जिससे वे भगवत्प्रिय ब्राह्मण प्रसन्न होंगे। और उन ब्राह्मणों के तुष्ट-प्रसन्न-होनेसे इन (श्रीमालो) ब्राह्मणों के कष्टकी शान्ति हो जावेगी। आपके बाणसे मेरी मृत्यु तो कदापि नहीं हो सकती परन्तु मैंने यह उपाय इन ब्राह्मणों के हित के लिये बतलाया है।

वसिष्ठ उवाच ।

इति तद्वचनं श्रुत्वा श्रीपुञ्जेन महौजसा ।
प्रेषिताः सैन्धवारण्ये दूता द्विजवरान् प्रति ॥
तैर्गत्वा वचनं राज्ञः प्रश्रियावनतैर्नृप ।
निवेदितं द्विजेन्द्रेभ्यो हृदयानन्दवर्द्धनम् ॥

इस प्रकार सारिकाके वचन सुनके श्रीपुञ्ज राजाने सैन्धवारण्यके ब्राह्मणों को बुलाने के लिये दूत भेजे। उन दूतोंने वहां जाके ब्राह्मणों के हृदय में आनन्द बढ़ाने वाला राजा का सन्देशा कह सुनाया।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूता ऊचुः ।

नमोस्तु वो द्विजन्मानः सर्वेभ्यो वेदवित्तमाः ।
आकारयति वो राजा श्रीपुञ्जो नाम विश्रुतः ॥

वे राजाके दूत सैन्धवारण्य के ब्राह्मणों को विनयसे कहने लगे कि हे वेद के ज्ञाता ब्राह्मणो ! आप सबको हमारा नमस्कार है । और श्री पुञ्ज नाम विख्यात राजाने आपको श्रीमाल क्षेत्र में बुलाने के लिये हमें भेजा है सो आप कृपा करके वहां पधारें।

वसिष्ठ उवाच ।

इत्याकर्ण्य ततो वाक्यं दूतानाममृतोपमम् ।
ब्राह्मणा गर्गमामन्त्र्य श्रीमालं गन्तुमुद्यताः ॥
ततः प्राप्ता द्विजाः सर्वे हर्षपर्याकुलेक्षणाः ।
तानागतान् द्विजान् सर्वान् सैंधवारण्यवासिनः ॥
अर्घपाद्यादिविविधैरुपचारैर्जयोक्तिभिः ।
पूजयामास भूपालो वासोऽलङ्करणैस्तथा ॥

इस प्रकार दूतों के अमृत सदृश वचन सुनके अपने समुदाय के मुख्य महर्षि गर्गाचार्य्यजीकी आज्ञा लेके सैन्धवारण्यके ब्राह्मण श्रीमाल क्षेत्र में आये । उन आनन्द युक्त ब्राह्मणोंको देख के राजाने उनको अर्घ, पाद्य, और विविध उपचार से यथावत् पूजनादि करके वस्त्र तथा अलंकारादि से बड़ा सत्कार किया ।

अथ देवो समभ्येत्य प्रत्यक्षा सुरभिर्नृप ।
श्रीपुञ्जमब्रवीत्तुष्टा राजानं द्विजवत्सलाम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुरभिरुवाच ।

एतस्याः कुलकन्यायाः कुलेऽहं देवता नृप ।
अस्या आर्त्तस्वरं श्रुत्वा सारिकां स्तम्भमानयम् ॥
तुष्टा तव महीपाल वरं वृणु यथारुचि ।
न मोघदर्शना देवाः स्थितिरेषा सनातनी ॥

इतने में उस कन्या की कुलदेवी 'सुरभि' जिसने सारिका की गति रोक दी थी और जिससे श्रीपुञ्ज राजा सारिका के पास जा पहुँचा था, वहाँ प्रत्यक्ष हुई, और राजापर प्रसन्न होके कहने लगी कि मैं इसके कुलकी देवी हूं इस लिये मैंने सारिका को स्तम्भन किई है। देवताओं का दर्शन वृथा नहीं जाता अतः तेरी जो इच्छा हो वर माँग ले।

राजोवाच ।

यदि तुष्टासि देवेशि तदिमां मुञ्च सारिकाम् ।
एवमेव द्विजेन्द्राणां त्राणं कार्यं च सर्वदा ॥

तब राजाने नमस्कार पूर्वक देवी से सारिका की गति छुड़ाने और ब्राह्मणों की सदा रक्षा करने की प्रार्थना किई।

देव्युवाच ।

एवमस्तु महाराज यत्तेऽभिलषितं हृदि ।

सुरभिने राजा की प्रार्थनानुसार सारिका की गति छोड़ दी और ब्राह्मणों की रक्षा करना भी स्वीकार किया।

वासिष्ठ उवाच ।

एतस्मिन्नन्तरे राजन् सैंधवारण्यवासिनः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आगता ब्राह्मणाः सर्वे धर्मतत्वविचक्षणाः ॥
मुनयस्तुष्टुवुर्लक्ष्मीं सुरभिं लोकमातरम् ।

ऐसे समय में धर्म तत्व में विचक्षण सैन्धवारण्यके वे सब ब्राह्मण मुनि लोग आये और लक्ष्मी स्वरूप सुरभिकी इस प्रकार स्तुति करने लगे ।

सैन्धवारण्यवासि मुनय ऊचुः ।

नमो देवि महालक्ष्मि सुरभि श्रीहरिप्रिये ।
इंदिरे जगतां मातर्धर्मरक्षापरायणे ॥

हे देवी ! हे महालक्ष्मी ! हे सुरभि ! हे हरि प्रिये ! हे जगत्की माता ! हे धर्मकी रक्षा करनेहारी इन्दिरा ! आपको नमस्कार करते हैं ।

देव्युवाच ।

तपस्विनो द्विजश्रेष्ठा वणुध्वं वरमुत्तमम् ।
राज्ञा च पूजिताः सर्वे ह्यपराधक्षमाकृता ॥
युष्माकं क्षमया स्तुत्या तुष्टाहं परमेश्वरी ।

तब सुरभि देवी प्रसन्न हो के बोली कि हे तपस्वी ब्राह्मणो ! अपराध को क्षमा करनेवाले श्री पुञ्ज राजाने तुम्हारा पूजा आदि सत्कार किया है और मैं भी तुम्हारी क्षमा तथा स्तुतिसे प्रसन्न हुई हूं । अब तुम कोई उत्तम वरदान माँग लो ।

वसिष्ठ उवाच ।

इति तद्वचनं श्रुत्वा लक्ष्म्याश्च द्विजपुंगवाः ।
सैंधवारण्यमुनय ऊचुः सर्वे मुदायुताः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूर्वमाङ्गिरसैर्विप्रैः शापो दत्तश्च कोपतः ।
विनापराधमस्माकं तच्छापान्मोक्षणं कुरु ॥

वसिष्ठजी मान्धाता से कहने लगे कि इस प्रकार लक्ष्मीके वचन सुनके आनन्दसे युक्त वे सैन्धवारण्य के ब्राह्मण बोले कि हे देवि! पहिले जो क्रोध करके अंगिरस ब्राह्मणोंने हमें, विना अपराध श्राप दे दिया था कि तुम्हें वेद नहीं आवेगा उस श्राप से मुक्त करो यही वर हम माँगते हैं।

श्रीरुवाच ।

वेदवेदाङ्गतत्वज्ञा भविष्यथ द्विजर्षभाः ।

तब लक्ष्मीने कहा कि है उत्तम ब्राह्मणो ! तुम वेद और वेदाङ्ग [शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निघण्टु (निरुक्त), छन्द और ज्योतिष] के तत्वके जाननेवाले होओगे, अर्थात् पहिलेके श्राप से मुक्त होओगे।

उदारा राज्यपूज्याश्च शुद्धाः सन्तोषिणः सदा ।
ब्राह्मणानां पुष्टिकरा धर्मपुष्टिकरास्तथा ॥
ज्ञानपुष्टिकरास्तस्मात् पुष्करणाख्या भविष्यथ

तथा तुम (१) उदार, (२) राज्य पूज्य, (३) शुद्ध, (४) सन्तोषी, (५) ब्राह्मणोंकी पुष्टि करनेवाले, (६) धर्मकी पुष्टि करनेवाले, और (७) ज्ञानकी पुष्टि करनेवाले होओगे। इसलिये तुम 'पुष्करणे' कहलाओगे।

विवाहे कार्य समये सान्निध्यं मम सर्वदा ।

इसके उपरान्त लक्ष्मीजीने यहभी प्रणकिया कि तुम्हारे विवाहमें तथा कार्यमें सदा आके मैं उपस्थित होऊंगी अर्थात् तु-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

म्हारे ख़र्चका काम चाहे जैसा आ पड़ेगा तौ भी नहीं अटकेगा।

श्रीमालेऽवस्थिता ये हि श्रीमालाख्या भविष्यथ।

और जो ब्राह्मण मेरे इस श्रीमाल* नगरमें वसे हैं वे श्रीमाली† कहलावेंगे।

इत्युक्त्वान्तर्हिता देवी सुरभिर्वन्दिता द्विजैः।
सारिका च ययौ राजन् सागरं पयसां निधिम्॥

इस प्रकार वर देके ब्राह्मणों से नमस्कृत सुरभिदेवी अदृश्य हो गई और सारिका पीछी समुद्र में चली गई।

सारिका यद्यपि राक्षसीथी किन्तु पुष्करणे ब्राह्मणों के पूर्वज सारिका की सहायताहीसे लक्ष्मीजीसे वरदान प्राप्तकर सकेथे इस उपकारके लिये उन्होंने उसे देवीकी उपमा दी। तथा विवाह आदि शुभ कार्यों के समय सारिकाकी मानता करनेका प्रण कियाथा सो आजतक इसकी मानता करते चले आये है जिसका पूर्ण वृत्तान्त पुष्करणोत्पत्ति नामक पुस्तक में लिखेंगे। उस सारिका

---

* श्रीमाल नगरके रहनेवाले 'शिशुपालवध' काव्यके कर्त्ता 'माघ पण्डित' को शोचनीय अवस्थामें भी उनके सजातीय बान्धवोंने कुछ भी सहायता नहीं दी और अन्तमें उनकी मृत्यु हो गई इससे क्रोधित होके राजा भोजने उस नगर का नाम 'भिल्लमाल (भीलोंकी वस्ती)' रख दिया। अब वह नगर जोधपुर के राज्यान्तर्गत 'भीनमाल' नामसे प्रसिद्ध है।

† श्रीमाली ब्राह्मणों में भी पुष्करणे ब्राह्मणों ही के से १४ गोत्र और ८४ अवटङ्क (खाप वा नख) हैं। इनकी देश तथा कर्म भेदसे (१) मारवाड़ी, (२) मेवाड़ी, (३) रिख, और (४) लटकण नामकी चार आम्नाएं हैं। इनमें भोजन व्यवहार तो परस्पर में सब के साथ है किन्तु कन्या सम्बन्धमें कुछ भेद है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का वाहन उष्ट्र होनेसे वह पुष्करणों में उष्ट्रासिनी (ऊँटा) देवी नामसे प्रसिद्ध है।

और श्रीमाली ब्राह्मणों का कष्ट भी उसी सारिका की सम्मतिसे मिटाथा इसलिये उनमें भी विवाह आदिके कई कार्य सारिका के आदेशानुसार किये जाते हैं। जिनका वर्णन श्रीमाल क्षेत्र माहात्म्य में विस्तार से लिखा है।

—※—

पुष्करणे कहलाये जानेके विषयमें जन श्रुति।

सिन्धी ब्राह्मण यद्यपि श्रीमाल क्षेत्र में ब्राह्मणोंकी पुष्टि करनेके लिये श्रीमाली ब्राह्मणों से वादानुवाद करने पर अन्त में लक्ष्मीजीके वरदान से पुष्करणे कहलाये हैं, परन्तु कोई२ लोग यों भी कहते हैं कि प्राचीनकालमें जो ब्राह्मण सैन्धवारण्य (सिन्ध देश) में निवास करते थे वे तो सिन्धी और जो श्रीमाल क्षेत्र में निवास करते थे वे श्रीमाली कहलाते थे। किन्तु वास्तव में ये दोनोंही गुर्जर ब्राह्मणों की एक ही शाखा थी। इसी लिये इन दोनोंके आचार विचार, खनपान आदि के अतिरिक्त विवाह आदिकी रीतियें भाँतियेंभीप्रायः एकसी चली आति हैं। परन्तु श्रीमाली तो अपनी कुलदेवी के लिये पशुका बलिदान करने लगगये और सिन्धी ब्राह्मण इस बातके पूरे २ विरोधी थे। इस मत भेदसे ये पृथक्२ हो गये। फिर एक समय इन सिन्धी ब्राह्मणों और श्रीमाली ब्राह्मणों में पशुका बलिदान करने के विषयमें परस्पर वादानुवाद चल पड़ा। श्रीमालियों का कथनथा किः—

"वैदिको हिंसा हिंसा न भवति"

अर्थात् देवताओंके उद्देश्यसे पशु मारनेसे उसकी हिंसा करने पर भी हिंसा का पाप नहीं लगता, ऐसी वेदोंकी आज्ञा है। किन्तु सिन्धी ब्राह्मणों का कथन इससे विपरीत था किः—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

"सुरा मत्स्याः पशोर्मांसं द्विजादिनां वलिस्तथा।
धूर्त्तैः प्रवर्त्तितं ह्येतन्नैतद्वेदेषु कथ्यते ॥"

अर्थात् सुरा, मत्स्य, पशुका मांस और पक्षी आदिकी वलि करना आदि कर्म धूर्त्त मनुष्योंने अपने स्वार्थके लिये वेदोंके नामसे प्रवर्त्त कर दिये हैं, किन्तु वेदों में ऐसे निन्द्य कर्मों का विधान कहीं भी नहीं है। अन्तमें सिन्धी ब्राह्मणों का पक्ष प्रबल हो जानेसे श्रीमाली ब्राह्मणों को असली पशु की हिंसा तो त्याग देनी पड़ी परन्तु बिलकुल ही वलि नहीं करने पर कुलदेवीके रूठ जानेके भयसे उसकी प्रसन्नता के अर्थ असली पशुके स्थान में आटे में गुड़का पानी डालकर भैंसे के आकार का नकली पशु बना के अपनी कुल देवीको वलि चढ़ाने लग गये। (उस समयकी चलाई हुई इसी प्राचीन प्रथानुसार अब भी कई श्रीमाली ऐसा करते हैं।) और सिन्धी ब्राह्मण वलि करनेसे एक प्रकार पशुका अनादरसा करते थे इसी कारण से 'पशु तिरस्करणिया' कहलाये जाने लग गये उसी 'पशु तिरस्करणिये' का धीरे२ अपभ्रंश 'पुष्करणिया' हो जाने से कालान्तरमें फिर 'पुष्करणे' कहलाने लग गये।

परन्तु जब कि स्कन्द पुराणोक्त श्रीमाल क्षेत्र माहात्म्य में के 'पुष्करणोपाख्यान' की कथासे स्पष्ट हैं कि ये लक्ष्मीजीके वर प्रदान से 'पुष्करणे' कहलाये हैं उसी कथाका सारांश ऊपर लिखा भी जा चुका है। तो फिर ऐसे शास्त्र प्रमाणों के विद्यमान होते हुये ऐसी 'जनश्रुति' क्योंकर सत्य मानी जा सकती है? इसके अतिरिक्त पुष्करणे ब्राह्मणों का जो कुछ प्राचीन इतिहास आज तक मुझे मिला है उसमें भी इस जनश्रुतिका कहीं भी पता नहीं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है। ऐसी दशा में इस बातका प्रमाण कदापि मानने योग्य नहीं हो सकता। फिर पुष्करणोपाख्यान की कथाके अनुसार तो वादानुवाद ब्राह्मणों की पूजा के लिये हुआ है और इस जनश्रुति में पशु हिंसा के लिये बतलाया गया है। परन्तु यह वाद चाहे जिस निमित्तसे मान लें तोभी दोनों ही मतों से हुआ तो श्रीमालियों और सिन्धियों ही में है। अतः यदि इन दूरकी कौड़ी उठानेवालों की यह बात मान भी लें तौ भी इन पुष्करणे ब्राह्मणों के पुष्करणे कह लानेका कारण तो श्रीमालियोंके साथका वादानुवाद ही तो हुआ नकि टाड साहबके लेखानुसार पुष्कर खोदना। अतः इस जनश्रुति से भी टाड राजस्थान की पूर्वोक्त 'अजब कहानी' का तो ऐसा खण्डन हो गया कि मानो महान् वज्रपातके होनेसे विशाल पर्वत का।

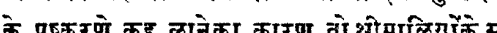

ग्रन्थ समाप्ति।

अब इस पुस्तक को अधिक न बढ़ाकर यहीं पर समाप्त करते हुए पाठकों से इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि कहांतो आजसे केवल ७५४ ही वर्ष पहिले—पुष्कर खुदने के समये—पुष्करणे ब्राह्मणों की उत्पत्ति की टाड राजस्थानकी 'अजब कहानी'? और कहां पुष्कर खुदनेके समयसे भी सैकड़ों ही वर्ष पहिलेसे मारवाड़ में विद्यमान रहने और मारवाड में आने से पहिले सिन्ध देशमें विद्यमान होने के अनेक ऐतिहासिक प्रमाण? अतः अब भी क्या 'पुष्करणे ब्राह्मणों की प्राचीनता' और 'टाड राजस्थान' व उन के मतानुयायियों की भूल स्पष्ट सिद्ध होने में और भी कोई अधिक प्रमाणों की आवश्यकता है?।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्नल जेम्स टाड ने, भ्रम ते कियो वखान।
भ्रम उच्छेदन टाड को, वरन्यो सहित विधान॥१॥
मरु देश जैसल नगर के निवासी द्विज,
भारद्वाज गोती व्यास भये मतिमान हैं।
नऊँ जी के वंश माँहि श्रीधर प्रतापी भये,
श्रीधराणि या ते जग करत वखान हैं।
तिन ही के वंश धर विज्ञ महि धर भये,
निज कुल कञ्ज में द्वितीय मानो भान हैं।
ताको सुत मीठा लाल पाली में निवास जा को,
कियो जिन जाति हित ग्रंथ को विधान हैं॥२॥
निज पुष्करणा जाति के, कियो भेट सुविचार।
दास जानकर आपनो, कर लीजो स्वीकार॥३॥
संवत् षट् रस नंद विधु, तम दल कार्त्तिक मास।
निज जन्मोत्सव दशमि को, भयो ग्रन्थ सुख रास॥४

इति शुभम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रन्थ कर्त्ता के वंश का संक्षिप्त परिचय ।

आजसे ९७० वर्ष पहिले लुद्रवा नगर में 'लक्षभोज' नामक महाविष्णु यज्ञ करनेवाले टङ्कशाली-व्यास 'ललूजी' से २४ वीं पीढ़ी में सं० १४५० के लगभग व्यास 'देवरूपिजी' बड़े प्रतापी हुये थे इनके पोपोजी, जूठोजी, नऊँजी, और गदाधरजी नामक ४ पुत्र हुये ।

(१) नऊँजी—इनके घेरूजी, सेऊजी, कृष्णोजी, डावोजी, घड़शीजी, ब्रह्मोजी और बालब्रह्मचारीजी नामक ७ पुत्र हुये जिनकी सन्तान वाले 'नऊँपोते व्यास' अथवा 'जैसलमेरिये व्यास' कहलाते हैं।

(२) घेरूजी—इनके विद्याधरजी, जस्सोजी, हरखोजी और गोविन्दजी नामक ४ पुत्र हुये ।

(३) विद्याधरजी—इनके लक्ष्मीदासजी, विनयदासजी (भवानीदासजी), अनन्तदासजी और द्वारिकादासजी नामक ४ पुत्र हुये।

(४) विनयदासजी (भवानीदासजी) इनके हरजीजी नामक १ पुत्र हुआ ।

(५) हरजीजी—इनके श्रीधरजी नामक १ पुत्र हुआ।

(६) श्रीधरजी—ये बड़े प्रतापि हुये इससे इनके वंशवाले 'श्रीधराणी व्यास' कहलाये । इनके कमलापतजी, विजयराजजी, भगवान्दासजी, जयरामजी और नाम ज्ञात नहीं ? नामक ५ पुत्र हुये।

(७) भगवान्दासजी—इनके शोभाचन्दजी, अक्षयराजजी, जोधराजजी, और सदारंगजी नामक ४ पुत्र हुये ।

(८) अक्षयराजजी—इनके ज्येष्ठमलजी, सीतारामजी, रामजीदासजी, आशकरणजी, ओचुरामजी (सत्तरामजी) और खुशालचन्दजी नामक ६ पुत्र हुये।

(९) आशकरणजी—इनके कुंजलालजी, बृजलालजी, हीरानन्दजी और घेरूलालजी नामक ४ पुत्र हुये ।

(१०) घेरूलालजी—इनके खेतसीदासजी नामक १ पुत्र हुआ।

(११) खेतसीदासजी-हमारे पितामहदादाजी) का जन्म जैसलमेरमें सं० १८३८ में हुआथा । इनके पूर्वज तो जैसलमेरके राज्यमें राज्याधिकारके कार्य करते थे, किन्तु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थे सं० १८६५ के लगभग जैसलमेर से पाली में आ गये और महाजनी-साहूकारी-धन्धा करने लग गये थे, सो आजतक वैसा ही चला आता है। ये परोपकारार्थ ज्योतिष और वैद्यक विद्याओं में भी शौक रखते थे जिसका अनुकरण इन के वंशमें आज पर्य्यन्त विद्यमान हैं। जैसलमेरकी न्यातकी पञ्च-पञ्चायती में व्यासों में मुख्य पञ्च नऊँजी के ज्येष्ठ पुत्र के वंशवाले (बडर) माने जाते हैं। अतः उन्हीं के वंशधर होने से खेतसीदासजी को पालीकी न्यातने भी पञ्चों की श्रेणीमें स्थान दिया था, सो वही सन्मान अद्यावधि बना हुआ है। इनका विवाह बीकानेर के सुप्रसिद्ध रघुनाथजी के साथ (थाँभे) के आचार्य हरवंशजी की कन्या व पन्नालालजी, मदनमोहजी, हरगोपालजी और हरबल्लजी की बहन तथा भायसिंहजी, वल्लभदासजी, ठाकुरदासजी, कृष्णदासजी आदि की भूआ 'चनणी' से हुआ था। इनका और इनकी स्त्रीका स्वर्गवास एकही दिन सं० १९०४ के आषाढ़ वदि २ को पाली में हुआ था। इनके ५ सन्तान थे।

१ 'उमेदीबाई'—ये जैसलमेर के राज्य मुसाहिब थानवी लक्ष्मीचन्दजी को ब्याही थीं। इनके २ कन्याए थीं।

[१] 'टीबीबाई'—ये जैसलमेरके डावांणी व्यास मोहकमचन्दजी के पुत्र 'गौरीदासजी' को ब्याही थीं। वे बीकानेरमें महाजनी धन्धा करते थे इनके धनराज, परशांबाई और परशराम नामक सन्तान हुये वे तथा इनके पुत्र भी महाजनी धन्धा करते हैं।

[२] 'जड़ावबाई'—ये जैसलमेर के सेऊ व्यास गदाधरजी के पुत्र 'चतुर्भुजजी' को ब्याही थीं। चतुर्भुजजी जोधपुरके महाराजा प्रतापसिंहजी की भटियाणीजीकी कामदारी करते रहे। इनके दानमल तथा भातीबाई नामक सन्तान हुये जो जैसलमेर ही में रहते हैं। दानमलने जैसलमेर की महाराणी जी की कामदारी किई थी।

२ 'जमुनादासजी'—जब कि पाली में सं० १८९३ में प्लेग (महामारी) का उपद्रव हुआथा, उस समय हमारे घरके सब लोग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रोहिट नामक गाँममें चले गये थे। वहां पर उसी बीमारीसे इनका स्वर्गवास हो गया। इनका विवाह जैसलमेर के कल्ला शाहबरामजीकी जमुना नामक कन्यासे हुआ था। इनके १ पुत्र था।

[१] 'इन्द्रराज'—इनका स्वर्गवास सं० १९५० के पौष सुदि... कोलाडकाणे में हुआ। इनका विवाह जोधपुरके विशा चैनजीके पुत्र वृद्धिचन्दजी की कन्या व चत्राणी व्यास धुनजीकी दोहिती 'शिरेकवरी' से हुआथा। इनके धनराज नामक एक पुत्र था, जो कुमार अवस्थाही में स्वर्गवासी हो गया।

३ 'अखलीबाई'—ये जैसलमेर के हर्ष 'ज्येष्ठमल'जी को ब्याही थीं। इनके २ सन्तान थे।

[१] 'वसनीबाई'—ये जैसलमेरके भोपताणी व्यास 'अमोलखदासजी'को ब्याही थीं। इनके पूनमचन्द नामको १ पुत्र है।

[२] 'वुलीदान'—इसका विवाह फलौधी के धानवी गोवर्द्धनदासजी की कन्यासे हुआथा। इसके धर्मदास नामके १ पुत्र है।

४ 'अटलदासजी' इनका जन्म पाली में सं० १८८२ में और स्वर्गवास भी पाली ही में सं० १९४६ के प्रथम भाद्रवा वदि १२ को हुआ। इनका विवाह जैसलमेर के केवलिया माधवदास जी की 'लाऊ' नामक कन्यासे हुआथा जिनका स्वर्गवास सं० १९४६ के फाल्गुन वदि १० को पालीमें हुआ। इनके सन्तान हुये वे जीवित नहीं रहे। इन्होंने सं०१९१० में खुरासानमें जाके 'कन्धार' में कोठी-साहूकारी दूकान-खोली थी। वहांके अमीर—बादशाह—कोन्दलखाँ से तथा उन्हीं के भाई व क़ाबुलके अमीर—बादशाह दोस्त मुहम्मदखाँ से बड़े सत्कार तथा सन्मान के साथ 'सेठ' की पदवी मिलीथी। आपको कई अच्छेर सिद्ध महात्माओंसे समागम हुआ था। आप भी पूर्व जन्मके बड़े तपस्वी—योगीराज प्रतीत होते थे। इस ग्रन्थ कर्त्ता मीठालाल को (जिसे उन्होंने निज पुत्रवत् माना है) जो कुछ बोध हुआ है वह इन्हीं महात्माओं के पूर्ण अनुग्रह का फल है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५ 'महीधरदासजी'—इनका जन्म सं० १८८५ में और स्वर्गवास सं० १९१२ के वैशाख वदि ११ को पाली में हुआ। इन्होंने मुलतान व बहावलपुर आदि में दूकानें किई थीं। ये बड़े बुद्धिमान् होनेसे सच्चे सलाहगीर गिने जाते थे, अतः पाली नगरमें बहुधा लोग इनके पास सलाह लेनेको आया करते थे। इसी प्रकार ये निष्पक्ष होनेसे परस्पर के कई झगड़े भी इन्हीं को पञ्च बनाकर निपटारा करवा लेते थे। इनके २ विवाह हुये थे। प्रथम तो जैसलमेर के पूर्वोक्त केवलिया माधवदासजी के पुत्र शाहबरायजीकी कन्या व विट्ठलदासजीकी बहन 'छोटी' से हुआथा। उनका सं०१९१०के माघवदि११को पालीमें स्वर्गवास हो जानेसे दूसरा विवाह जोधपुर के चण्डवाणी जोशी निर्भयरामजी की कन्या व नाथावत व्यास केहरिचन्दजी की दोहिती 'विज्जी' से सं० १९१२ के माह सुदि ५ को हुआथा इनका सं० १९१७ के मृगशिर सुदि १३ को सोजतमें स्वर्गवास हुआ। इनके प्रथम स्त्री से २ और दूसरी से ३ सन्तान हुये।

(१) 'हंसराजजी'—इनका जन्म सं० १९०६ में और स्वर्गवास सं. १९५३ के मृगशिर वदि ६ को पाली में हुआ। ये महाजनी धंधे में धन कमाने में जैसे परिश्रमी थे, वैसे ही खाने खर्चनेमें भी कमी नहीं रखते थे। इन्होंने बम्बई में दूकान किई थी। इनका भी विवाह जोधपुर के पूर्वोक्त विशाचैनजी के पुत्र वृद्धिचंदजी की कन्या व चत्ताणी व्यास धुनजीकी दोहिती 'कस्तूरी' से सं. १९१७ के वैशाख सुदि १० को हुआ था इनके ३ पुत्र हैं।

[१] 'मुरलीधर'—इसका जन्म सं० १९३२ के मृगशिर वदि ८ को पालीमें हुआ है। इसने अपना विवाह करने की नाहीं करदी जिससे कुआराही रहा है। यह गान विद्यापर अधिक प्रेम रखता है। और फोटोग्राफ़ी का काम अच्छा करता है।

[२] 'रघुनाथ'—इसका जन्म पाली में सं. १९४० के ज्येष्ठ वदि ३ को हुआ है। इसने अंग्रेजी विद्याके अतिरिक्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तारविद्याका भी अभ्यास किया है । और ८ वर्ष से जोधपुर बीकानेर रेल्वे में नौकर है । इसके २ विवाह हुये । प्रथम विवाह सं० १९५५ के फाल्गुन वदि १ को जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के गुरु व मुसाहिब तथा व्यासपदवी प्राप्त मादलिये के पुरोहित चतुर्भुजजी के पोते जीवराजजी की कन्या और जोधपुर ही के राज्य मुसाहिब चोहटिया जोशी साँवतरामजी की दोहिती 'राधा' से हुआ था । जिसका सं० १९६२ के फाल्गुन सुदि ९ को जोधपुर में स्वर्गवास हो जानेसे फिर उसी प्रथम स्त्री की कनिष्ट बहन 'छोटी' से सं० १९६३ के फाल्गुन वदि ५ को दूसरा विवाह हुआ है । प्रथम स्त्रीसे १ पुत्र है ।

१ 'सूरजराज'—इसका जन्म सं० १९६१ के कार्त्तिक वदि ३ को जोधपुर में हुआ है ।

[३] 'जगन्नाथ'—इसका जन्म सं० १९४४ के वैशाख वदि १२ को पाली में हुआ है । इसको पूर्वोक्त खेतसीदासजी के चचा कुञ्जलालजी के परपोते करणीदानजी (ज़ोरजी) ने अपनी गोदले के अपनी ओरसे इसका विवाह जैसलमेर के वरसा पुरोहित करणी दानजीकी कन्या व गोविंद व्यास चतुर्भुजजी की दोहिती 'किसनी' से किया है । यह पहिले जोधपुर बीकानेर रेल्वेमें नौकरी करता था अभी बीकानेर के भोहोना मूलचन्द पाठशालामें अंग्रेज़ीका पाठक है। इसके १ कन्या हुई है।

(२) 'रत्नीबाई'—इनका स्वर्गवास सं० १९३१ के पौष वदि ११ को जैसलमेर में हुआ । ये जैसलमेर के वलाणी पुरोहित द्वारिकादासजी के पुत्र व बीकानेर के आचार्य वसुदेवजी के भानजे 'मनसुखदासजी'को व्याही थीं । इनके १ कन्या है।

[१] तुलसीबाई—इसका जन्म सं० १९२७ में जैसलमेर में हुआ है । यह फलौधी के सुप्रसिद्ध थानवी जालजी के परपोते 'लक्ष्मीचन्दजी' को व्याही थी । लक्ष्मीचन्द जी का स्वर्गवास सं. १९५० के पौष वदि १४ को हो गया।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३) 'मीठालाल (इस ग्रन्थ का कर्त्ता)'–इसका जन्म सं० १९१६ के कार्तिक वदि १० को जोधपुर में हुआ है। यह अपने पूर्वज–दादाजी–का अनुकरण करके आजतक व्यापार आदि ही करता है। पहिले कारोबार बम्बई आदि में भी अधिक करता था किंतु आजकल अधिकतर निवास स्वदेश–मारवाड़–आदि ही में करता है। यद्यपि इसका धन्धा तो महाजनी ही बना हुआ, है तथापि विद्यापर रुचि होनेसे अपने आमोद वा शौक के लिये ज्योतिष्, वैद्यक, धर्मशास्त्र, योग, मन्त्रशास्त्र, पदार्थ विद्या आदि अनेक सद्विद्याओं का अभ्यास किया है। और उन पर विशेष श्रद्धा होने से उक्त विद्याओं के अनेक अलभ्य ग्रंथों का संग्रह करके उनके सारांश की अनेक पुस्तकें भी लिखी हैं। उनमें भी ज्योतिष् विद्यापर अधिक प्रेम होने से इस विद्याका "वृहदर्घ्य मार्त्तण्ड" नामक ग्रन्थ, अनेक विषयों से पूर्ण, हिन्दी भाषा टीका सहित बनाया है, जिसके कई अङ्क हैं। इनमें से सर्वतोभद्रचक्र (त्रैलोक्य दीपक)' तथा वृष्टि प्रबोध (भारत का वायुशास्त्र)' नामक २ अङ्क तो प्रकाशित भी कर दिये और शेष अङ्क भी क्रमसे प्रकाशित किये जा रहे हैं। प्रकाशित हुये अङ्कोंसे प्रसन्न हो कर उनकी प्रशंसा करते हुये काशी आदि प्रसिद्ध नगरों के प्रतिष्ठित विद्वानोंने 'प्राचीन ज्योतिःशास्त्रश्रमी,' 'दैवज्ञभूषण,' 'ज्योतिष् रत्न' आदि उपाधियें प्रदान किई हैं। इसके ५ विवाह हुये। प्रथम तो बीकानेर राज्य के देरासरी आचार्य नथमलजी की कन्या व गेरमलजी की चचेरी बहन और काशीदासोत पुरोहित नथमलजी की दोहिती 'रुक्मिणी' से सं० १९२८ के वैशाख सुदि ४ को हुआथा, जिसका स्वर्गवास सं. १९४६ के आषाढ़ वदि २ को पाली में हो जानेसे दूसरा विवाह जोधपुर के पूर्वोक्त व्यास पदवी प्राप्त मादलिये के पुरोहित चतुर्भुजजी के पोते जीवराजजी की कन्या व चोहटिये जोशी साँवतरामजी की दोहिती 'रामप्यारी' से सं० १९४८ के फा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लगुन वदि ९ को हुआ है । प्रथम स्त्री से संतान हुये वे जीवित नहीं रहे । दूसरी स्त्री से एक कन्या जीवित है ।

[१] 'सूरजकुँवरी'—इसका जन्म सं० १९६२के वैशाख वदि १२ को पाली में हुआ है।

(४) 'सोनीबाई'—इसका स्वर्गवास जोधपुर में सं० १९६५ के माघ वदि ३०को हुआ। यह जैसलमेर के नानगाणी विशा देवकरणजी के पुत्र व पोकरणके पुरोहित महासिंहजी के दोहिते 'सुरतानचंदजी' को व्याही थी इसके सुसराल वालों की उमटवाड़ी प्रान्त के नरसिंहगढ़ आदि में साहूकारी धंधे की दूकानें थीं । सुरतानचन्दजी का स्वर्गवास सं १९३७ के श्रावण सुदि १५ को नरसिंहगढ़ में हो गया था । इसके एक पुत्र है ।

[१] 'ओंकारलाल'—इसका जन्म, नरसिंहगढ़ में सं० १९३५ के मृगशिर वदि १० को हुआ है ।

(५) 'पूनमचन्द'—इसका जन्म जोधपुर में सं० १९२० के पोष सुदि १५ को हुआ है । इसके नामसे कराची में दूकान थी। और इस समय बम्बई (शोलापूर) के सुप्रसिद्ध शेठ बालचंदजी उम्रचंदजी की ब्यावर [राजपूताना] की दूकान पर मुनीम है। इसने ज्योतिष् और अधिक तर आयुर्वेद विद्यापर बहुत श्रम करके उस में सफलता प्राप्त की जिससे अनेक असाध्य रोगियों को आरोग्य किये । इस योग्यतासे प्रसन्न होके आयुर्वेद विद्या पीठ नासिक के द्वितीय सम्मेलनने इसको 'आयुर्वेद पंञ्चानन' की उपाधि प्रदान किई है । इसका विवाह जैसलमेर के महाराजा गजसिंहजी के दीवान-मुसाहिब आचार्य ईश्वरलालजी के बड़े भाई मयाचन्दजी के पुत्र गणेशदासजी की कन्या व रावतमलजी की बहन तथा चोहटिये जोशी कस्तूरचन्दजी की दोहिती 'जानकी' से सं० १९३१ के फाल्गुन वदि २ को हुआ है। इसके ४ संतान हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[१] 'चम्पाबाई'—इसका जन्म पाली में सं० १९३८ के कार्तिक सुदि ९ को हुआ है। यह जैसलमेर के चल्लाणी पुरोहित बुधलालजी के पुत्र व सेऊव्यास नरसिंहदास जी के दोहिते तथा रणछोड़दासजी (घाघूजी) के भानजे 'इन्द्रराजजी' को सं० १९४८ के फाल्गुन वदि ५ को व्याही है। इसके सुसरालवाले लेनदेन का धंधा करते हैं।

[२] 'तनसुख'—इसका जन्म पाली में सं. १९४३ के मृगशिर वदि १२ को हुआ है। इसने वैद्यक तथा ज्योतिष् विद्या का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया है। आयुर्वेद तो अपने पिता पूनमचंद से सीखा है जिसमें अपने परिश्रम, अभ्यास, और अनुभव द्वारा अच्छी कुशलता प्राप्त किई है। इसकी चिकित्सा से अनेक कष्टसाध्य रोगी भी रोग मुक्त हुये और हो रहे हैं। इसने ब्यावर (राजपूताना में 'आयुर्वेद औषधालय' खोल रखा है जिसमें हरएक प्रकारके रोगकी चमत्कारिक ओषधियें हर समय तयार रहती हैं जिससे बहुत लोग लाभ उठा रहे हैं। इसी प्रकार ज्योतिष् का तत्त्व अपने पितृव्य (बड़े बाप) मीठालाल से जाना है जिसके द्वारा पूर्वोक्त वृहद्दर्घ मार्त्तण्ड' ग्रन्थ के आधार पर सं. १९६२ के वर्ष से प्रति वर्ष संवत्का 'भाविफल' ज्योतिष् शास्त्र के प्रमाणों सहित बनाके प्रकाशित करता है। इसमें प्रत्येक वस्तु की होनेवाली तेजी मंदी तथा सुभिक्ष दुर्भिक्ष आदिका वृत्तान्त प्राचीन इतिहास सहित रहता है। इस में की बातें बहुधा ठीक मिलती हैं जिससे प्रतिवर्ष सैकड़ों ही प्रशंसा पत्र आते हैं। बहुत परिश्रम से बनाया जाने पर भी इसका मूल्य केवल =) ही रखा है जिससे सर्व साधारण भी ख़रीद कर लाभ उठा सकें। इसकी सहस्त्रों ही प्रतियें प्रतिवर्ष हाथो हाथ बिक जाती हैं। इसने महाजनी तथा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंग्रेजी का भी अभ्यास किया है और हिन्दीकी अ-च्छी योग्यता रखता है। वर्त्तमान समाचार पत्रों में समय २ पर वैद्यक, ज्योतिष् आदि विषयों पर लेख आदि भी प्रायः भेजा करता है। इसका भी विवाह जोधपुर के पूर्वोक्त व्यास पदवी प्राप्त मादालय के पु-रोहित चतुर्भुजजी के पोते जीधराजजी की कन्या व-चोहटिये जोशी साँवतरामजी की दोहिती 'रुक्मिणी' से सं० १९५५ के फाल्गुन वदि २ को हुआ है।

[३] 'रूपाली बाई'—इसका जन्म ब्यावर (नयानगर) में सं० १९५२ के माघ सुदि ९ को हुआ है। यह जोध-पुर के विशा भैंरूदासजी के पुत्र जुराजजी के कँवर व कला माधवदासजी के दोहिते 'सरदार मलजी' को को सं. १९६४ के फाल्गुण वदि ५ को व्याही है। इस के दादी सुसरे तो 'केरू' के ठाकुर साहब की काम-दारी करते थे और इसके सुसरे जोधपूर राज्य के हवाले में हवालदारी की नौकरी करते हैं।

[४] 'छोटी रूपाली बाई'—इसका जन्म ब्यावर में सं० १९५८ के फाल्गुन सुदि २ को हुआ है। यह ब्यावर की कन्या पाठशाला में पढ़ती है।

———०———

मैंने यह केवल अपने पितामह (दादाजी) खेतसीदासजी के वंशका संक्षिप्त वृत्तान्त लिखा है। परन्तु मेरी इच्छा सम्पूर्ण श्रीधराणी व्यासों के प्रत्येक वंशका पूर्ण वृत्तान्त पुस्तकाकार छ-पवाकर प्रकाशित कर बिना मूल्य वितरण करनेकी है। इसलिये प्रत्येक श्रीधराणी व्यासको चाहिये कि श्रीधरजीसे लेके अद्याव-धिके वंश वृक्ष (कुरसीना में) अपने पूर्वजो के वृत्तान्त सहित लिख भेजने की कृपा करे।

For Private And Personal Use Only